RNI-RAJBIL/2009/32418

Vol: 11, Issue : 2, July 2019-December 2019

Samvahini

Half Yearly Newsletter | Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun

नेचुरोपेथी मेडिकल कॉलेज का शिलान्यास
10-11

आचार्य शांति सागर समारोह हीरक महोत्सव व्याख्यान
14

गरबा नृत्य प्रतियोगिता आयोजित
23

प्रबुद्ध नागरिक सम्मेलन आयोजित
34

जल शक्ति अभियान का जिला स्तरीय सम्मान
48-49

www.jvbi.ac.in

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं की ओर से रमेश कुमार मेहता (कुलसचिव, जैन विश्वभारती संस्थान) द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित। मुद्रणालय - तिलोक प्रिंटिंग प्रेस, बीकानेर में मुद्रित। सम्पादक - डॉ. समणी भास्करप्रज्ञा।

Jain Vishva Bharati Institute

(Deemed University)

Ladnun-341306, District Nagaur (Rajasthan) INDIA

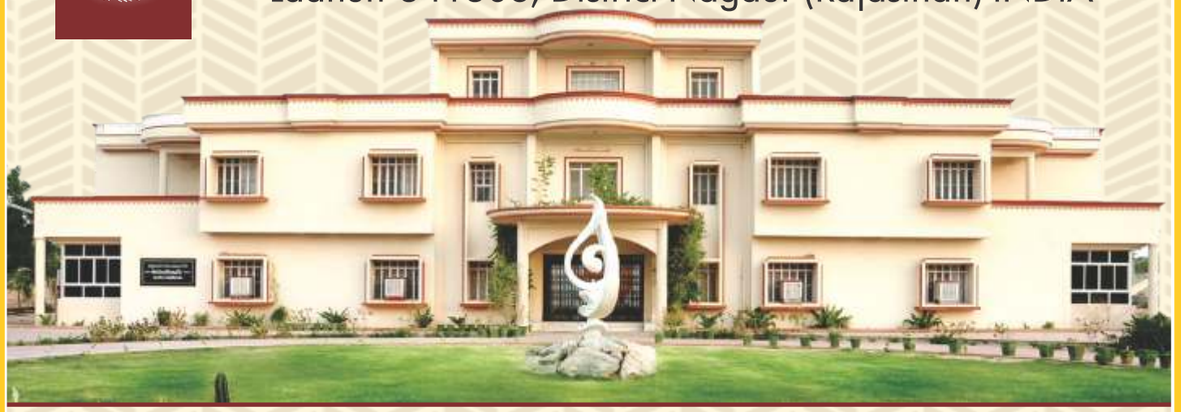

A University Dedicated to Oriental Studies & Human Values

D.Lit. Ph.D. M.Phil. M.A./ M.Sc.

Jainology and Comparative Religion & Philosophy
Prakrit & Sanskrit
Nonviolence and Peace
Yoga and Science of Living

Regular and Distance Education

- M.S.W., English, M.Ed., B.Ed.
- B.A., B.Com, B.Sc.
- Integrated Courses (B.A.-B.Ed. & B.Sc.-B.Ed.)
- Various Diploma & Certificate Courses

- Value-based Education with Spiritual Ambience
- Lush Green Campus with Gurukul Environment
- Education for Women Empowerment and Entrepreneurship
- Student Exchange Programme with various National and International Institutions

Highlights :

- "Jaina Presidential Award" by Federation of Jaina Association in North America
- Asia Education Summit & Awards 2018 for achieving "Best Deemed University in Rajasthan"
- Ranked 10th in Top-25 Private/Deemed Universities in India-2019 by Higher Education Review
- Recognized in "The 20 Most Admired Universities in India 2017" by The Knowledge Review
- Smart Classrooms
- Rich Placements
- Air Conditioned Auditorium
- Wi-Fi Campus
- Hostel/Mess Facility
- More than 15 Labs

For more detail please visit - www.jvbi.ac.in or Contact Tel. 01581-226110, 224332, 226230

आचार्य महाश्रमण

अनुशास्ता
जैन विश्व भारती संस्थान

अनुशास्ता उवाच

श्रुताराधना से क्या मिलेगा ?

प्रश्न किया गया — **सुयस्स आराहणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ?** भंते ! श्रुत की आराधना से जीव क्या प्राप्त करता है ? उत्तर दिया गया — **सुयस्स आराहणयाएणं अण्णाणं खवेइ न य संकिलिस्सइ ।** श्रुत की आराधना से जीव अज्ञान का क्षय करता है और राग-द्वेष आदि से उत्पन्न होने वाले मानसिक संक्लेशों से बच जाता है ।

इस दुनिया में ज्ञान का बहुत महत्त्व है । ज्ञानी आदमी स्वयं की समस्याओं का समाधान कर सकता है, दूसरे की समस्याओं को भी समाहित कर सकता है और समस्या पैदा न हो ऐसी स्थिति का निर्माण भी कर सकता है ।

श्रुत की आराधना करने से अपने आराध्य देव की आराधना हो जाती है । जो भक्ति से श्रुत की आराधना करते हैं, वे अपने आराध्य देव यानी तीर्थंकर भगवान/अर्हत् भगवान की आराधना करते हैं, क्योंकि तीर्थंकर ज्ञानमय हैं, तीर्थंकर की चेतना ज्ञानमय है । शास्त्रकार ने कहा कि श्रुत की आराधना से आदमी का अज्ञान नष्ट हो जाता है, ज्ञान की चेतना उभर जाती है और वह संक्लेश को प्राप्त नहीं होता । जिसमें अध्यात्म विद्या का ज्ञान नहीं है, वह संक्लिष्ट हो सकता है । उदाहरण के लिए एक आदमी का किसी ने अपमान कर दिया, उसके मन में संक्लेश हो सकता है । पदोन्नति की जगह पदावनति हो जाए तो मन में वेदना हो सकती है । मन की वेदना बाहर दिखे या न भी दिखे, किन्तु उसको भोगने वाला ही जानता है कि वह व्यक्ति को कितना सताती है । वह एक कांटे की तरह कष्ट देने वाली होती है ।

किन्तु, जिसकी ज्ञानात्मक चेतना जागृत होती है और भावात्मक व्यक्तित्व प्रशस्त होता है, वह व्यक्ति ऐसी स्थिति को भी शांति के साथ झेल सकता है । उसे उच्च साधना का प्रमाण माना जा सकता है, जिसके मन में किसी भी परिस्थिति में किसी प्रकार का संक्लेश न हो, पीड़ा न हो, बड़ी शांति के साथ अंतर्मन से उस स्थिति को स्वीकार कर लिया जाता है । जिसमें यह ज्ञान की चेतना जाग जाती है कि ये सब स्थितियां हैं, इनमें उलझना नहीं चाहिए । मेरे भाग्य में जो है, वह मुझे मिलकर रहेगा । जो मेरे भाग्य में नहीं है या जिसके लिए मैं योग्य नहीं हूं अथवा मेरे पुण्य का योग नहीं है, वह वस्तु मुझे नहीं मिलेगी । इसलिए जो कुछ मिले, उसमें मुझे संतुष्ट रहना चाहिए । यह सहज संतोष की भावना जाग जाती है, तब मानसिक संक्लेश कम हो सकता है । आदमी अनुकूल-प्रतिकूल परिस्थितियों में समता का विकास करे और साथ में ज्ञान की आराधना करे, जिससे आदमी असंक्लेश की अवस्था में रह सके ।

अनुक्रमणिका

संपादकीय

जैन विद्या और अन्य प्राच्य विद्याओं के क्षेत्र में अग्रणी है जैन विश्वभारती संस्थान 05

01. 12वाँ दीक्षांत समारोह 06-07
02. योग में राष्ट्रीय स्तर पर फहराया परचम 08
03. योग प्रतियोगिता में जीते 4 गोल्ड मेडल 09
04. नेचुरोपैथी मेडिकल कॉलेज का शिलान्यास 10-11
05. 25 श्रेष्ठ विश्वविद्यालय में 10वें स्थान पर 11
06. कुलाधिपति सावित्री जिंदल का संस्थान भ्रमण 12
07. योग के लिए प्रचार-प्रसार योजना 13
08. आचार्य शांति सागर समाधि हीरक जयंती व्याख्यान 14
09. स्मृति सभा/गांधी जयंती 15
10. कैम्पस प्लेसमेंट 16
11. सतर्कता जागरूकता कार्यशाला 16-17
12. प्रथम तेरापंथ एनआरआई समिट का आयोजन 17
13. संसद के कार्यक्रम का सीधा प्रसारण 18
14. क्षमायाचना पर्व/कार्मिकों के लिए पर्यावरण व स्वास्थ्य पर महत्त्वपूर्ण निर्णय 19

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय

15. फ्रेशर पार्टी का आयोजन/ओरियन्टेशन एवं प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन 20
16. शिक्षक दिवस/पर्युषण पर्व 21
17. मासिक व्याख्यान माला 22
18. गरबा नृत्य /हिन्दी दिवस 23
19. दो दिवसीय दीक्षारम्भ समारोह 24-25
20. प्लास्टिक कचरा मुक्त भारत अभियान/गुरु पूर्णिमा 25
21. ऑनलाइन पाठ्यक्रमों/राईटिंग स्किल पर व्याख्यान 26

अहिंसा एवं शांति विभाग

22. एक दिवसीय अहिंसा प्रशिक्षण शिविर/ मानवाधिकार दिवस 26

समाज कार्य विभाग

23. दो दिवसीय आमुखीकरण कार्यशाला/ सामाजिक सुरक्षा पर व्याख्यान/वृक्षारोपण/शिक्षक दिवस 27
24. स्वच्छता जागरूकता रैली/एड्स जागरण कार्यक्रम/ विश्व वृद्ध दिवस 28

दूरस्थ शिक्षा निदेशालय

25. अब नियमित शिक्षा के समान ही होगी दूरस्थ शिक्षा 29

प्राकृत एवं संस्कृत विभाग

26. संस्कृत दिवस समारोह आयोजित 29
27. संस्थान के 4 विद्वानों का सम्मान / आचार्य विमल सागर शोधानुसंधान पुरस्कार/जैन स्कोलर कार्यशाला 30

एंटी रैगिंग सेल

28. एंटी रैगिंग सेल व एंटी रैगिंग स्कवाड की बैठक 31

शिक्षा विभाग

29. शिक्षक दिवस/हिन्दी दिवस/राष्ट्रीय एकता दिवस 32
30. जन्माष्टमी/गांधी जयंती/दीपोत्सव/गुरु पूर्णिमा/ प्रसार भाषण व्याख्यान 33

आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी वर्ष महोत्सव

31. प्रबुद्ध नागरिक सम्मेलन आयोजित 34
32. आन्तरिक व्याख्यान माला आयोजित 35
33. दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी (हिन्दी साहित्य) 36-37
34. दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी (प्राच्य विद्याओं पर) 38
35. पुस्तक समीक्षा 39-46

खेल गतिविधियाँ

36. खेल सप्ताह के तहत प्रतियोगिताओं का आयोजन/ तीन दिवसीय खेल-कूद प्रतियोगिता 47

राष्ट्रीय सेवा योजना (NSS)

37. जल शक्ति अभियान का जिला स्तरीय शुभारम्भ समारोह 48
38. स्वच्छ भारत समर इंटर्नशिप के तहत जल संरक्षण जागरूकता अभियान/एनएसएस दिवस कार्यक्रम 49
39. राष्ट्रीय साम्प्रदायिक सद्भाव सप्ताह/फिट इंडिया रन 50
40. स्वच्छता रैली/बालिका दिवस 51

नेशनल कैडेट कौर (NCC)

41. जोधपुर के एनसीसी शिविर में स्वर्ण पदक जीते 52
42. स्वच्छता पखवाड़ा में विविध कार्यक्रम 53-55
43. कारगिल विजय दिवस 55

Samvahini

(अर्द्धवार्षिक समाचार पत्र)
जैन विश्वभारती संस्थान

वर्ष-11, अंक-2
जुलाई-दिसम्बर, 2019

संरक्षक
प्रो. बच्छराज दूगड़
कुलपति

सम्पादक
डॉ समणी भास्कर प्रज्ञा

कम्प्यूटर एण्ड डिजाईन
पवन सैन

प्रकाशक
जैन विश्वभारती संस्थान
लाडनूँ – 341306
नागौर, राजस्थान
दूरभाष : (01581) 226110 226230
फैक्स : (01581) 227472
E-mail : jvbiladnun@gmail.com
Website : www.jvbi.ac.in

सम्पादकीय

जैन विद्या और अन्य प्राच्य विद्याओं के क्षेत्र में अग्रणी है जैन विश्वभारती संस्थान

आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी वर्ष में जैन विश्वभारती संस्थान विभिन्न कार्यक्रमों का संचालन कर रहा है। इनमें आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल कॉलेज एंड होस्पिटल ऑफ नेचुरोपैथी एंड योग की स्थापना को सबसे महत्त्वपूर्ण कहा जा सकता है। गत 9 नवम्बर को इस मेडिकल कॉलेज का शिलान्यास स्थानीय विधायक मुकेश भाकर द्वारा किया गया। आचार्य महाप्रज्ञ की कल्पना के अनुरूप यह संस्थान की एक महत्त्वाकांक्षी योजना रही है, जो अब यह साकार रूप लेने जा रही है। इस मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल का लाभ समूचे लाडनूं क्षेत्र ही नहीं, बल्कि आसपास के क्षेत्र एवं जिलों को भी मिल पायेगा। इस विश्वविद्यालय ने अपनी स्थापना के 29 वर्षों में अनेक महत्त्वपूर्ण ऊंचाइयां हासिल की हैं। यह बहुआयामी विश्वविद्यालय भारत की प्राचीन संस्कृति, धर्म-दर्शन, नैतिक मूल्यों, भाषा आदि के लिये समर्पित रहा है। यहां अहिंसा एवं शांति विभाग, योग एवं जीवन विज्ञान विभाग, प्राकृत एवं संस्कृत विभाग, जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म व दर्शन विभाग आदि विभाग इस विश्वविद्यालय को अलग पहचान प्रदान करते हैं। इस सम्बंध में की जा रही शोध भी महत्त्वपूर्ण है। जैन विश्वभारती संस्थान विश्व का ऐसा पहला विश्वविद्यालय कहा जा सकता है, जहां अहिंसा का पृथक् विभाग है, जिसमें अहिंसा का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है और अहिंसा के पाठ्यक्रम की उच्च शिक्षा दी जाती है। यहां के योग विषय के विद्यार्थियों ने देश-विदेश में योग के क्षेत्र में कीर्तिमान कायम किये हैं। यहां के अनेक विद्यार्थियों ने जिला, राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर स्वर्ण पदक प्राप्त करके अपना व विश्वविद्यालय का नाम रोशन किया है।

आर्ट ऑफ लिविंग के प्रवर्तक एवं विख्यात संत श्रीश्री रविशंकर ने बैंगलोर में आयोजित संस्थान के 12वें दीक्षांत समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया तथा विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों, कार्यक्रमों, गतिविधियों आदि की प्रशंसा की और अहिंसा के संदेश को घर-घर पहुंचाने की आवश्यकता बताई। अहिंसा एवं शांति आज वैश्विक आवश्यकता बनी हुई है। इसमें निश्चित रूप से पूरे विश्व को जैन विश्वभारती संस्थान में एक आशा की किरण दिखाई देती है। संस्थान ने इस अवसर पर श्रीश्री रविशंकर को विश्व को तनावमुक्त बनाने के प्रयासों के लिये और श्रीमान् सीताराम जिन्दल को प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति के प्रचार-प्रसार में व्यापक भूमिका निभाने के लिये डाक्टरेट की मानद उपाधि प्रदान की। संस्थान का यह कदम इस दिशा में उठाया गया सराहनीय कदम कहा जा सकता है।

देश भर में हायर एजुकेशन रिव्यू मैगजीन बैंगलोर द्वारा किये गये निजी एवं मान्य विश्वविद्यालयों के सर्वे में वर्ष 2019 के भारत के श्रेष्ठ विश्वविद्यालयों में जैन विश्वभारती संस्थान को 10वां स्थान दिया जाना अपने आप में महत्त्वपूर्ण है। संस्थान को पहले इसी सर्वे में 17वाँ स्थान पर होने का गौरव प्राप्त था, लेकिन उसे लांघ कर इस बार 10वां स्थान हासिल करना इस गौरव को बहुगुणित करता है। स्पष्ट है कि यह संस्थान मान्य विश्वविद्यालय के रूप में निरन्तर प्रगति कर रहा है। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के नेतृत्व में यह विश्वविद्यालय उत्तरोत्तर प्रगति-पथ पर अग्रसर है। प्रो. दूगड़ के कार्यकाल में बहुत सारी उपलब्धियां विश्वविद्यालय को प्राप्त हुई हैं और नेचुरोपैथिक मेडिकल कॉलेज जैसी महत्त्वाकांक्षी योजना भी इनके समय में ही फलीभूत हो रही है।

जैन विद्या में शोध, अध्ययन, विकास एवं प्रसार के लिये निरन्तर सक्रिय इस विश्वविद्यालय द्वारा लगातार विभिन्न जैन सम्प्रदायों के संगठनों, विद्वानों, जैन आचार्यों आदि से सम्पर्क और सम्मेलनों के माध्यम से जैन एकता और शोध की एकरूपता के लिये भी प्रयास किये जा रहे हैं। इसी के तहत 17 सितम्बर को यहां आयोजित दिगम्बर सम्प्रदाय के आचार्यश्री शांतिसागर छाणी महाराज की समाधि हीरक महोत्सव स्मृति व्याख्यान में प्रो. महावीरराज गेलड़ा ने कहा कि जैन धर्म के 300 आचार्यों में एक सोच की आवश्यकता है। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि संयुक्त राष्ट्र संघ की सूची में विश्व के केवल 6 धर्म आये हुये हैं, इनमें जैन धर्म शामिल नहीं है, जिसे शामिल करवाने के लिये प्रयास होने चाहिये। यह संस्थान की विशेषता ही है कि यहां से जैन विद्या के लिये शोध, अध्ययन, परस्पर एकता और सम्पर्क के लिये आवाज बुलंद की जा रही है।

आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी वर्ष को विश्वविद्यालय ने गंभीरता से लिया और विविध प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है। इसके अन्तर्गत देश भर के विभिन्न विश्वविद्यालयों में आचार्य महाप्रज्ञ की ऐतिहासिक कृति ''सम्बोधि'' पर व्याख्यानमाला का आयोजन जैन विश्वभारती संस्थान के तत्त्वावधान में किये जा रहे हैं, आंतरिक व्याख्यानमाला, राष्ट्रीय संगोष्ठियों, प्रबुद्ध नागरिकों का सम्मेलन, विभागवार व्याख्यानों का आयोजन एवं पुस्तक समीक्षा के अन्तर्गत आचार्य महाप्रज्ञ एवं अन्य प्रमुख लेखकों की पुस्तकों की समीक्षा का कार्यक्रम संचालित किया जा रहा है।

प्राच्य विद्याओं के अध्ययन, शोध, उत्थान की दिशा में ही नहीं, बल्कि प्रत्येक शैक्षणिक एवं गैर शैक्षणिक गतिविधियों में यह संस्थान अग्रणी है।

– डॉ समणी भास्कर प्रज्ञा

12वां दीक्षांत समारोह बैंगलोर में हुआ

हिंसा अंदर की कमजोरी को प्रकट करती है- श्रीश्री रविशंकर

श्रीश्री रविशंकर व जिन्दल को दी गई डी.-लिट् की मानद उपाधि

जैन विश्वभारती संस्थान का 12वाँ दीक्षांत समारोह अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी की सन्निधि एवं कुलाधिपति श्रीमती सावित्री जिंदल की अध्यक्षता में 2 नवम्बर, 2019 को कुमुलागुडु बैंगलुरू में आयोजित हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि केन्द्रीय मंत्री श्री डी.वी. सदानन्द गौड़ा थे। दीक्षान्त समारोह की विशिष्टता इस बात में निहित थी कि इसमें कुल 2890 उपाधियों के साथ विश्वप्रसिद्ध श्री श्री रविशंकर एवं प्रसिद्ध उद्योगपति श्री सीताराम जिन्दल को डी.लिट् की मानद उपाधि प्रदान की गई। इस अवसर पर दीक्षान्त भाषण प्रदान करते हुए श्री गौड़ा ने कहा जैन विश्वभारती का दीक्षान्त समारोह विशिष्ट है, क्योंकि यह संस्थान विशिष्ट है। इस संस्थान से उपाधि प्राप्त विद्यार्थी राष्ट्रहित के लिए काम करें तथा विश्व को वर्तमान संकटों से उबारने में अपना योगदान करें। श्री गौड़ा ने कहा, इस विश्वविद्यालय के अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी एवं श्री श्री रविशंकर जी दोनों ही महान् धर्मगुरू हैं तथा ये व्यक्ति, समाज और विश्व को तनाव मुक्त करने का महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं।

आर्ट ऑफ लिविंग के प्रवर्तक विख्यात अध्यात्म गुरु श्रीश्री रविशंकर ने मानद उपाधि स्वीकार करते हुए कहा कि हिंसा कोई बल नहीं है, बल्कि वह भीतर की कमजोरी है। जो व्यक्ति आत्मबल या आत्मनिष्ठा सम्पन्न है, वह कभी हिंसा का सहारा नहीं लेता। आज 'अहिंसा परमोधर्मः' की आवाज बुलंद करने की आवश्यकता है। अहिंसा का संदेश घर-घर पहुंचना चाहिये। उन्होंने कहा कि जैन संत पैदल चल कर घर-घर में अहिंसा का संदेश दे रहे हैं। वे पुरातन संस्कृति के भाव को क्षीण होने से बचा रहे हैं और शाकाहार को पुनः प्रचारित कर रहे हैं, जिससे अहिंसा के भावों को बल मिल रहा है।

चारों तरफ फैले अहिंसा का प्रकाश

कार्यक्रम को सान्निध्य प्रदान करते हुये विश्वविद्यालय के अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा- हिंसा अंधकार है और मोहजनित होती है। ज्ञान प्रकाश स्वरूप है। ज्ञानी आदमी कभी हिंसा नहीं कर सकता। उन्होंने इच्छा व्यक्त की कि चारों तरफ अहिंसा का प्रकाश फैलना चाहिये। हिंसा देखकर निराश नहीं होना चाहिये, उसे मिटाने का पूरा प्रयास करना चाहिये। उन्होंने एक शेर भी सुनाया- ''माना कि अंधकार घना है, पर दीपक जलाना कहां मना है।'' उन्होंने उपाधि प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को अनुशासन देते हुए कहा कि- शिक्षा जीवन के लिये बहुत आवश्यक होती है। शिक्षा के प्रति सरकार और जनता दोनों जागरूक हैं, लेकिन शिक्षा संस्थानों में संस्कारों का निर्माण भी होना चाहिये। ज्ञान के साथ अच्छे भाव, मैत्री के भाव पनपे और हिंसा के भाव दूर हों, यह आवश्यक है। साथ ही अभय का विकास भी होना चाहिये।

आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा अणुव्रतों, प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान को शिक्षा में शामिल करके जैन विश्वभारती संस्थान में सद्शिक्षा को प्रभावी बनाया गया। उपाधि के साथ यहां से केवल ज्ञान नहीं, बल्कि अच्छे संस्कार और संकल्प भी साथ लेकर जायें तथा परिवार, समाज और देश के लिये समस्या बनने के स्थान पर समाधान बन कर उभरें, तभी शिक्षा सार्थक हो पायेगी।

शिक्षा जीवन-रूपान्तरण की ज्योति है

पीईएस विश्वविद्यालय बैंगलोर के कुलाधिपति डोरेस्वामी ने कहा- अहिंसा धर्म आज की आवश्यकता बन चुका है, परन्तु पूरी दुनिया में हिंसा फैल रही है, जिससे अहिंसा का प्रसार अत्यन्त आवश्यक बन गया है। साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने अपने सम्बोधन में कहा कि शिक्षा से रूपान्तरण की ज्योत विकसित होती है और जीवन की समग्रता का बोध करवाती है। विद्या के साथ विनम्रता व चरित्रनिष्ठा आदि जीवन-मूल्य भी जुड़ने चाहियें। इस विश्वविद्यालय में ज्ञान प्राप्ति के साथ विद्यार्थियों को जीवन मूल्यों की प्राप्ति भी होती है।

संस्थान की कुलाधिपति श्रीमती सावित्री जिन्दल ने कहा कि दीक्षांत समारोह से जीवन की शुरूआत होती है, जो जानकारियां, शिक्षाएँ प्राप्त की हैं, उनसे आत्मविश्वास का स्तर बढ़ जाता है। आज हमारी दुनिया अन्तःस्फोट और बाह्य विस्फोट दोनों खतरों से घिरी हुई है। इनका मुकाबला करने में आचार्य महाप्रज्ञ व महाश्रमण की शिक्षाएं व विचार सक्षम हैं। हमें अहिंसा का मार्ग अपनाना आवश्यक है। वर्तमान हिंसा व कटुता के माहौल में जैन विश्वभारती संस्थान की शिक्षाएं महत्त्वपूर्ण कार्य कर रही हैं।

मरुधरा में तैयार किया शैक्षिक वातावरण

कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने विद्यार्थियों एवं परिषद् को सम्बोधित करते हुए कहा– कि संस्थान ने मरुधरा के क्षेत्र में शैक्षणिक वातावरण तैयार करने के प्रयास किये हैं, जिससे सकारात्मक उपलब्धियां मिली हैं। संस्थान के प्राध्यापक राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित हुए है। यहां के कई विद्यार्थियों ने विश्व-रिकॉर्ड कायम किये हैं। राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आयोजन करना यहां की परम्परा रही है। उन्होंने घोषणा की कि जैन विश्वभारती संस्थान में आचार्य महाप्रज्ञ नेचुरोपैथी एंड योगा मेडिकल कॉलेज एवं होस्पिटल के शिलान्यास के अलावा दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के पृथक् भवन का निर्माण भी करवाया जाएगा।

विश्वविद्यालय में बढ़ती छात्रसंख्या को देखते हुये दो छात्रावासों का निर्माण, अतिथि गृह का निर्माण और यातायात सुविधा बढ़ाने का काम भी किया जाना है।

श्रीश्री रविशंकर व जिन्दल को डाक्टरेट की मानद उपाधि, 2890 उपाधियां वितरित

कार्यक्रम में कुल 2890 विद्यार्थियों को पी-एच्.डी., एम.ए., एम. एससी., एम.एस.डब्ल्यू., बी.एड., एम.एड., बी.ए., बी.कॉम. आदि की उपाधियाँ वितरित की गई। इनमें से मीनाक्षी मारू, रामप्रकाश अरनेजा, प्रगति भूतोड़िया, खयाली राम, कृष्ण कुमार तिवारी, राहुल जैन, मनोज कुमार जैन, राकेश कुमार जैन, जयप्रकाश सिंह, भागीरथ, विजयसागर शर्मा, कार्तिकेश्वर विश्वास, प्रेमलता, चित्रा दाधीच सहित कुल 27 शोधार्थियों को डाक्टर ऑफ फिलोसोफी (पीएच्.डी.) की उपाधियां दी गई। इनके अलावा सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों मुमुक्षु धरती (अब साध्वी धृतिप्रभा), जितेन्द्र उपाध्याय व प्रिया शर्मा को गोल्ड मैडल प्रदान किये गये।

इस अवसर पर विश्वविख्यात धर्मगुरु श्रीश्री रविशंकर को विश्व भर में तनावमुक्त शांत जीवन का वातावरण बनाने तथा श्री सीताराम जिंदल को प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति के प्रचार-प्रसार में व्यापक भूमिका निभाने के लिये विश्वविद्यालय की ओर से डी-लिट्. की मानद उपाधि प्रदान की गई। कार्यक्रम में समाजसेवी कमलचंद ललवानी, पदमचंद पटावरी व मूलचंद नाहर का सम्मान भी किया गया। अतिथियों का सम्मान कुलाधिपति सावित्री जिन्दल, कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़, जैन विश्व भारती के अध्यक्ष अरविन्द संचेती ने किया। विश्वविद्यालय के कुलसचिव रमेश कुमार मेहता ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

संस्थान की छात्राओं ने योग में राष्ट्रीय स्तर पर फहराया परचम

10 विद्यार्थियों को योग में स्वर्ण पदक मिले

नेशनल योगा चैम्पियनशिप प्रतियोगिता में संस्थान के योग एवं जीवन विज्ञान विभाग की छात्राओं ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करके स्वर्ण पदक प्राप्त किये हैं। छात्राओं के इस ओपन योग चेम्पियनशिप में राष्ट्रीय स्तर पर परचम फहराने के बाद वापस लौटने पर विश्वविद्यालय में 20 नवम्बर को उनका स्वागत किया गया। डा. प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने बताया कि भारत सरकार के आयुष मंत्रालय एवं इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ योगा प्रोफेशनल से मान्यता प्राप्त एवं विश्व आयुर्वेद शोध एवं विकास परिषद से सम्बद्ध फाईव स्टार वेलफेयर एंड स्पोर्ट्स क्लब के तत्त्वावधान में आनन्द आश्रम नई दिल्ली में आयोजित राष्ट्रीय योग चेम्पियनशिप में विश्वविद्यालय के योग एवं जीवन विभाग की इन छात्राओं ने राजस्थान राज्य का प्रतिनिधित्व किया और प्रतियोगिता में 21 से 25 आयुवर्ग में योग का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करके गोल्ड मैडल हासिल किया। इस सामूहिक योग प्रदर्शन प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय की वृंदा दाधीच, सरिता माली, विमला माली, अनिता, नीतू, बेबी व करूणा को राष्ट्रीय स्तर पर श्रेष्ठ घोषित किया गया एवं उन्हें स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया। राष्ट्रीय योग चेम्पियनशिप प्रतियोगिता के एकल प्रदर्शन में इस विश्वविद्यालय की छात्रा सरिता माली ने कांस्य पदक प्राप्त किया। ये सभी छात्राएँ अब विश्व स्तर पर अगले वर्ष जनवरी माह में आयोज्य योग चैम्पियनशिप प्रतियोगिता में भी देश की ओर से प्रतिनिधित्व करती हुई भाग लेंगी।

कुलपति ने किया स्वागत

इस राष्ट्रीय स्तर पर प्राप्त उपलब्धि के पश्चात् इन छात्राओं के विश्वविद्यालय में वापस लौटने पर कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने सभी का अभिनन्दन किया एवं बधाई देते हुये उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उन्होंने कहा कि योग व जीवन विज्ञान ऐसा विषय है, जो व्यक्ति का सर्वांगीण एवं सम्पूर्ण विकास करने में सक्षम है। विश्वविद्यालय के विद्यार्थी योग में विश्व-रिकॉर्ड बना रहे हैं, वहीं राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अपना और विश्वविद्यालय का परचम फहरा रहे हैं। इन छात्राओं की इस उपलब्धि पर जैन विश्व भारती के प्रधान ट्रस्टी मनोज लूणिया, प्रेक्षा इंटरनेशल के अशोक चिंडालिया, जय तुलसी फाउंडेशन के अध्यक्ष तुलसी दूगड़, जैन विश्व भारती के पूर्व अध्यक्ष रमेश चंद बोहरा व डॉ. धर्मचंद लूँकड़, अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष विमल कटारिया, प्रबंधन मंडल सदस्य प्रमोद बैद व अमरचंद लूंकड़, जैन विश्व भारती के पूर्व मंत्री अरविन्द गोठी, भारत विकास परिषद के नितेश माथुर, रमेश सिंह राठौड़, ओमप्रकाश बागड़ा, जगदीश शर्मा, अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की पूर्व अध्यक्ष कुमुद कच्छारा, आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान के अध्यक्ष लूणकरण छाजेड़, जैन श्वेताम्बर तेरापंथ महासभा के अध्यक्ष हंसराज बेताला, जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के स्थानीय महामंत्री राजेन्द्र खटेड़, शांति निकेतन विश्वविद्यालय के प्रो. जगतराम भट्टाचार्य, दिल्ली विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के प्रो. चन्द्र चौबे, जोधपुर विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. के.एन व्यास, प्रो. प्रियदर्शन पाटनी, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में राजनीति शास्त्र विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. आरएस यादव, प्रख्यात वैज्ञानिक प्रो. विनय जैन, आचार्य सत्यनारायण पाटोदिया जयपुर, सुखाड़िया विश्वविद्यालय के पूर्व डीन एवं आईसीपीआर के पूर्व सचिव प्रो. एसआर व्यास, एलर्जी विशेषज्ञ डा. विपुल शाह सूरत, विनोद बांठिया सूरत, गणेश दूगड़ जोधपुर, छत्तर बोथरा अहमदाबाद, पूर्व पुलिस महानिदेशक मनोज भट्ट, राजस्थान पत्रिका समूह के मुख्य सम्पादक डा. गुलाब कोठारी, मगध विश्वविद्यालय के डीन प्रो. नलिन शास्त्री, केन्द्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश के समाज कार्य विभाग के अध्यक्ष प्रो. आशुतोष प्रधान, भारत सरकार के पूर्व वित्त सलाहकार माणक सिंघी, उद्योगपति मांगीलाल सेठिया दिल्ली व नरेश मेहता जयपुर, मर्यादा कोठारी जोधपुर, केन्द्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला के शिक्षा विभाग के प्रो. मनोज सक्सेना, उदयपुर विश्वविद्यालय के पूर्व डीन प्रो. प्रेमसुमन जैन, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय के समाज कार्य विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. आरके यादव आदि ने इस सफलता के लिये विश्वविद्यालय को बधाई दी है।

दूरस्थ शिक्षा के 3 विद्यार्थियों को भी 'भारत योग रत्न' व स्वर्ण पदक

संस्थान के दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के अन्तर्गत योग के स्नातकोत्तर के 3 विद्यार्थियों को राष्ट्रीय स्तर पर स्वर्ण पदक हासिल करने एवं भारत योग रत्न का सम्मान प्राप्त करने का गौरव मिला है। नई दिल्ली के आनन्द आश्रम नांगोलाई में आयोजित की गई राष्ट्रीय योग चैम्पियनशिप प्रतियोगिता में इन्होंने भाग लिया था, जिसमें देश भर से आये प्रतिभागियों में इनका योग प्रदर्शन श्रेष्ठ रहा।

दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने बताया कि स्वर्ण पदक विजेता ललित भारती जोधपुर के रहने वाले हैं तथा यहां जैन विश्वभारती विश्वविद्यलय से योग विषय में दूरस्थ शिक्षा से स्नातकोत्तर के विद्यार्थी हैं। कुसुम राठौड़ भी यहां की योग की स्नातकोत्तर विद्यार्थी हैं, वो गुढा रामसिंह (पाली) से सरपंच हैं और जोधपुर रहती है। इन दोनों को नई दिल्ली के फाइव स्टार वेलफेयर एंड स्पोर्ट्स क्लब के तत्त्वावधान में आयोजित नेशनल योग चैम्पियनशिप में राजस्थान की ओर से हिस्सा लिया था। इन्हें इस राष्ट्रीय प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक एवं भारत योग रत्न का सम्मान प्रदान किया गया है। इन दोनों के अलावा दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के योग के विद्यार्थी नागौर जिले के ही दुगस्ताऊ (जायल) के मनोज खुड़खुड़िया ने भी इस चैम्पियनशिप में हिस्सा लेकर स्वर्ण पदक हासिल किया है। उसने अंडर-25 आयु वर्ग में यह उपलब्धि हासिल की। इन तीनों को अगले वर्ष आयोज्य एशियन योग चैम्पियनशिप में भाग लेने के लिये चयनित किया गया है।

राज्य स्तरीय योग प्रतियोगिता में जीते 4 गोल्ड मैडल

संस्थान के योग व जीवन विज्ञान विभाग के विद्यार्थियों ने 28 अगस्त को राज्य स्तरीय योग प्रतियोगिता में एक साथ चार गोल्ड मैडल जीते। इस अवसर पर कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने प्रतियोगिता में शामिल होने वाले सभी विद्यार्थियों को बधाई दी व शुभकामनायें देते हुये उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर भी इसी तरह से श्रेष्ठता प्रदर्शित करके विश्वविद्यालय का नाम रोशन करने के लिये प्रेरित किया। योग विभाग के डा. प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने बताया कि नई दिल्ली के नजफगढ़ में तीन राज्यों राजस्थान, हरियाणा व दिल्ली की राज्य स्तरीय योग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय के 8 विद्यार्थियों ने राजस्थान राज्य की प्रतियोगिता में भाग लिया। यह प्रतियोगिता फाईव स्टार वेलफेयर एंड स्पोर्ट्स क्लब के तत्त्वावधान में आयोजित की गई थी। उन्होंने बताया कि योग प्रतियोगिता में 21 से 25 वर्ष आयुवर्ग में महिला वर्ग में इस विश्वविद्यालय की टीम ने गोल्ड मैडल हासिल किया। इस टीम में विश्वविद्यालय की छात्रायें विमला माली, नीतू कंवर, अनिता घिंटाला व इन्द्रा रैवाड़ शामिल थी। इसी प्रकार 21 से 25 आयुवर्ग महिला वर्ग में व्यक्तिगत प्रदर्शन में विश्वविद्यालय की सरिता माली ने गोल्ड मैडल प्राप्त किया। इसी प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय की छात्र वृंदा दाधीच ने कांस्य पदक प्राप्त किया। इसी आयुवर्ग के पुरूष वर्ग में व्यक्तिगत प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय के छात्र सुरेश दीक्षित ने गोल्ड मैडल हासिल किया। इनके अलावा 25 से 30 आयु वर्ग की व्यक्तिगत पुरूष प्रतियोगिता में विश्वविद्यालय के छात्र प्रेमाराम झूरिया ने गोल्ड मैडल जीता।

संस्थान की तीन छात्राओं ने योग में पाये जिले में उच्च स्थान

विमला माली रही जिला स्तरीय योग प्रतियोगिता में प्रथम

योगा फैडरेशन आफ इंडिया के तत्त्वावधान में 23 जुलाई को आयोजित जिला स्तरीय योग प्रतियोगिता में संस्थान के योग एवं जीवन विज्ञान विभाग की तीन छात्रायें प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थानों पर रहीं। डा. प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने बताया कि मेड़ता सिटी में आयोजित इस जिला स्तरीय योग प्रतियोगिता में विभाग की 21 से 25 आयुवर्ग की 8 छात्राओं ने योग प्रतियोगिता में हिस्सा लिया था। प्रतियोगिता में पहले स्थान पर विमला माली रही, द्वितीय अनिता घिंटाला और तृतीय स्थान पर गोमती गोदारा रही। डा. शेखावत ने बताया कि इससे पूर्व पंजाब योग एसोसियेशन द्वारा अबोहर में आयोजित नोर्थ इंडिया योग एवं स्पोर्ट्स चैम्पियनशिप में उत्तर भारत के 7 राज्यों के 560 युवाओं में विश्वविद्यालय के योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के विद्यार्थियों ने स्वर्ण पदक जीता था।

अंग्रेजी दवाओं के कुप्रभाव से मुक्ति दिलाती है नेचुरोपैथी- विधायक भाकर

नेचुरोपैथी मेडिकल कॉलेज का समारोह पूर्वक शिलान्यास

लाडनूं विधायक मुकेश भाकर ने कहा है कि अंग्रेजी दवाओं का साइड इफेक्ट होता है। प्रायः हर मरीज में अंग्रेजी दवाओं का नकारात्मक प्रभाव देखा जाता है और इसी कारण मरीज को अक्सर किसी ऐसी चिकित्सा पद्धति की तलाश रहती है, जो पूरा प्रभाव करे, बीमारी को पूरा समाप्त करे और उसका कोई साईड इफेक्ट नहीं हो। वे यहां जैन विश्व भारती (मान्य विश्वविद्यालय) के तत्त्वावधान में दिनांक 09 नवम्बर को आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पिटल ऑफ नेच्युरोपेथी एण्ड योग के शिलान्यास समारोह में सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति में उनका सदैव अनुराग रहा है और वे मरीजों को कम मूल्य और दवाओं से रहित इस चिकित्सा पद्धति मे लिये सलाह देते हैं। इसमें चिकित्सा की पद्धति में विभिन्न क्रियाओं, योग, भोजन आदि के माध्यम से मरीज को पूरी तरह से ठीक किया जाता है। विधायक ने कहा कि उन्हें इस बात का गर्व है कि वे कहीं अपने क्षेत्र की बात करते हैं, तो सभी जैन विश्वभारती संस्थान वाला लाडनूं कहते हैं। इस विश्वविद्यालय ने केवल लाडनूं को ही नहीं, पूरे जिले को अलग पहचान प्रदान की है।

आचार्य महाप्रज्ञ की कल्पना को कर रहे हैं साकार

कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये कहा कि नेचुरोपैथी मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल खोलना इस विश्वविद्यालय की यह महत्त्वाकांक्षी योजना थी और आचार्य महाप्रज्ञ की कल्पना थी, जिसे उनके जन्म शताब्दी वर्ष में पूरा किया जा रहा है। यह एक बहुत बड़ी योजना है और लाडनूं के लिये ऐतिहासिक अवसर है। उद्योगपति कमल किशोर ललवानी और पदमचंद भूतोड़िया इस संस्थान में अब तक के सबसे बड़े भामाशाह दानदाता हैं, जो इस परियोजना में सहयोग प्रदान कर रहे हैं। जैन विश्व भारती के अध्यक्ष अरविन्द संचेती ने इस अवसर पर कहा कि पिछले 29 सालों में जैन विश्वभारती संस्थान विश्वविद्यालय ने नई ऊंचाइयां हासिल की हैं। यह मेडिकल कॉलेज उनमें एक नया आयाम है। उन्होंने

बताया कि विश्वविद्यालय की मातृसंस्था के रूप में जैन विश्व भारती कार्यरत है, लेकिन मूल से ब्याज प्यारा होता है, इसलिये संस्थान का हित और उसके लिये चिंतन हमारी प्राथमिकता रहती है। भामाशाह उद्योगपति पदमचंद भूतोड़िया ने अपने सम्बोधन में कहा कि नेचुरोपैथी महंगी व घातक प्रभाव वाली दवाओं से छुटकारा दिलवाकर सस्ती व प्राकृतिक तरीके से स्वास्थ्य लाभ देने वाली पद्धति है, जिसका लाभ लाडनूं व आस पास के पूरे क्षेत्र को मिल पायेगा। उपखंड अधिकारी मुकेश चौधरी ने कहा कि लाडनूं में नेचुरोपैथी मेडिकल कॉलेज का स्थापित होना एक गौरव की बात है। यह विश्वविद्यालय वैसे ही लाडनूं की पहचान बन चुका है और अब तो इसकी ख्याति दूर-दराज तक फैल जायेगी। दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कार्यक्रम का संचालन किया और नेचुरोपैथी कॉलेज के बारे में विस्तार से जानकारी प्रदान की। जैन विश्वभारती के पूर्व मुख्य न्यासी भागचंद बरड़िया कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि थे।

शिलान्यास का कार्यक्रम व शिलालेख अनावरण

इस समारोह के पश्चात् जैन विश्व भारती परिसर के समीप गोपालपुरा-सुजानगढ़ हाईवे लिंक रोड पर शिलान्यास का कार्यक्रम धार्मिक विधि-विधान से किया गया। कार्यक्रम में सबसे पहले डा. योगेश कुमार जैन के नेतृत्व में भक्तामर स्तोत्र का पाठ किया गया, तत्पश्चात् मुख्य अतिथि कमल किशोर पटावरी, पदमचंद भूतोड़िया व कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने सपत्नीक बैठ कर भूमि पूजन किया। इसके बाद नींव में विविध सामग्री रखी जाकर पूजन कर शिलान्यास करवाया गया। मोहन सियोल के हाथों से पूजित पत्थरों को नींव में सीमेंट के साथ लगवाया गया। पं. बाबूलाल शर्मा ने विधि-विधानपूर्वक समस्त पूजन व अन्य धार्मिक क्रियायें सम्पन्न करवाई।

इस अवसर पर ठेकेदर बख्सू सिलावट का सम्मान भी किया गया। शिलान्यास सम्बंधी शिलालेख का अनावरण विधायक मुकेश भाकर, भामाशाह कमलकिशोर ललवानी, पदमचंद भूतोड़िया, भागचंद बरड़िया, प्रो. बच्छराज दूगड़, अरविन्द संचेती आदि ने किया। कार्यक्रम में थानाधिकारी मुकुट बिहारी मीणा, शहर काजी सैयद मो. अयूब अशरफी, रजिस्ट्रार रमेश कुमार मेहता, ललित वर्मा, रामनिवास पटेल, रमेश सिंह राठौड़, अभयनारायण शर्मा, भंवर लाल जांगिड़, पार्षद विजयकुमार भोजक, पार्षद आरिफ खां, पार्षद रमजान खां, कालू राम गेनाणा, जिला परिषद सदस्य पन्नाराम भामू, अब्दुल हमीद मोयल, रघुवीर सिंह राठौड़, राजेन्द्र माथुर, रिछपाल गोदारा, परवीना भाटी, सरिता जैन, पार्षद रेणु कोचर, रतनलाल बावरी आदि उपस्थित रहे।

देश के 25 श्रेष्ठ विश्वविद्यालयों में जैविभा विश्वविद्यालय 10वें स्थान पर

देश भर में किये गये निजी एवं मान्य विश्वविद्यालयों के सर्वे में यहां के जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) को 2019 के भारत के टॉप 25 विश्वविद्यालयों में दसवें स्थान पर शामिल किया गया है। यह सर्वे हायर एजुकेशन रिव्यू मैगजीन बैंगलोर द्वारा देश के 500 से अधिक निजी व मान्य विश्वविद्यालयों का किया गया था। जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) को शिक्षण, शोध, गुणवत्ता आदि दृष्टि से देश भर में उत्कृष्ट माना और देश के श्रेष्ठ 25 विश्वविद्यालयों में इसे शामिल किया जाकर 10वां स्थान दिया गया है। इस सम्बंध में हायर एजुकेशर रिव्यू की मैनेजिंग डायरेक्टर दीपशिखा सिंह ने प्रमाण पत्र प्रदान किया। इसके साथ ही इस मैगजीन में इस विश्वविद्यालय की विशेषताओं के बारे में दो पृष्ठों में आलेख भी प्रकाशित किया गया है। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने इस उपलब्धि के लिये समस्त विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं अन्य कार्मिकों को श्रेय प्रदान किया है। गौरतलब है कि इससे पूर्व सन 2014 में इसी मैगजीन द्वारा देश भर के विश्वविद्यालयों के सर्वे में देश के 25 श्रेष्ठ विश्वविद्यालयों में जैन विश्वभारती संस्थान को 17वां स्थान मिला था।

21 लाख की राशि निजी स्तर पर भेंट की

संतों की कृपा से संभव है शिक्षा के साथ नैतिक मूल्यों का प्रसार- जिन्दल

कुलाधिपति सावित्री जिन्दल ने किया विश्वविद्यालय का अवलोकन

विख्यात महिला उद्योगपति और जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) की कुलाधिपति सावित्री जिन्दल ने कहा है कि जहां संतों के चरण होते हैं, वहां का पूरा वातावरण नैतिक हो जाता है। यह विश्वविद्यालय भी संतों की कृपा और आध्यात्मिक वातावरण में शिक्षा के साथ मानवीय मूल्यों के प्रसार का कार्य देश भर में सफलता के साथ कर रहा है। उन्होंने विश्वविद्यालय का सहयोग निजी स्तर पर करते हुये 21 लाख की राशि भेंट की। वे यहां हिसार से अपने एक दिवसीय प्रवास कार्यक्रम में दिनांक 18 जुलाई को लाडनूं आई थी। उन्होंने यहां समस्त संकाय सदस्यों और संस्थान के अधिकारियों की बैठक ली।

प्रस्तावित विकास कार्यों की जानकारी दी

बैठक में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने उनका भावभीना स्वागत किया और उन्हें विश्वविद्यालय की प्रगति के बारे में जानकारी दी। प्रो. दूगड़ ने बताया कि जैन विश्वभारती संस्थान में इस सत्र में संस्थान के द्वितीय अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ के जन्मशताब्दी वर्ष में आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल कॉलेज आफ नेचुरोपैथी एंड योग का शुभारम्भ करने जा रहे हैं। उन्होंने यहां दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के लिये पृथक भवन और महिला छात्रावास के विस्तार के लिये भवन की योजना भी प्रस्तुत की। कुलपति ने विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रमों की विशेषतायें बताई तथा कहा कि यहां जैन विद्या, प्राच्य विद्या, प्राकृत व संस्कृत भाषाओं, दर्शन, अहिंसा व शांति, योग एवं जीवन विज्ञान आदि विशिष्ट विषयों का अध्ययन-अध्यापन होने से यह अन्य सभी विश्वविद्यालयों से बिलकुल अलग है। यहां विद्यार्थियों को परम्परागत शिक्षा के साथ नैतिक मूल्यों को जीना सिखाया जाता है। बैठक का संचालन करते हुये दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के बारे में बताया तथा कहा कि यहां के योग व जीवन विज्ञान विषय के विद्यार्थियों ने 7 विश्व रिकार्ड कायम किये हैं। यहां देश भर से बड़ी संख्या में साधु-साध्वियां, उम्रदराज व्यक्ति तक अध्ययन करके उच्च डिग्रियां प्राप्त कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि यहां से पढ कर 80-80 साल तक के बुजुर्गों ने एम.ए. किया है। उन्होंने दूरस्थ शिक्षा के विविध पाठ्यक्रमों के बारे में भी उन्हें अवगत करवाया।

विश्वविद्यालय का अवलोकन व मुनि-दर्शन किये

कुलाधिपति सावित्री जिन्दल ने विश्वविद्यालय में प्रशासनिक भवन, डिजीटल स्टुडियो, लेंग्वेज लैब, दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, छात्राओं के लिये संचालित जिम, कम्प्यूटर लैब, विशाल ऑडिटोरियम, एटीडीसी सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र, एनसीसी व एनएसएस की गतिविधियों का निरीक्षण किया व विशाल लाईब्रेरी, आर्ट गैलरी का अवलोकन भी किया तथा जैन विश्व भारती के सचिवालय भी पहुंची। उन्होंने यहां भिक्षु विहार में विराजित मुनिश्री देवेन्द्र कुमार के दर्शन भी किये और उनका आशीर्वाद प्राप्त किया।

योग के प्रचार-प्रसार के लिये योजना का संचालन

आबसर में विद्यार्थियों को योगाभ्यास करवाये व लाभ बताये

संस्थान के योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के तत्वावधान में योग के प्रचार-प्रसार के लिये चलाई जा रही योजना के तहत विभाग के स्नातकोत्तर विद्यार्थियों को दी गई योगाभ्यास सम्बंधी कार्यक्रमों की परियोजना में सुजानगढ़ तहसील के आबसर ग्राम के सरस्वती विद्या मंदिर विद्यालय में एक योग शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में योग विशेषज्ञ डा. प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य के साथ आध्यात्मिक स्वास्थ्य के लिये योग को आवश्यक बताया। उन्होंने कहा कि चाहे व्यक्तित्व विकास की बात हो या कॅरियर बनाने की, परीक्षा में श्रेष्ठ नम्बर प्राप्त करने की बात हो या जीवन में किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने की जरूरत हो, सबमें योग बहुत सहायक सिद्ध होता है।

वैज्ञानिक परीक्षणों में खरा उतर रहा योग

कार्यक्रम में वैद्य छोटाराम जाखड़ ने भी योग को देश की प्राचीनतम विधा बताया तथा कहा कि आज भी किये जा रहे वैज्ञानिक परीक्षणों में योग खरा उतर रहा है। यह जीवन परिवर्तन का सबसे बड़ा माध्यम है। योग के स्नातकोत्तर विद्यार्थियों सरिता पूनिया, सौरभ सोनी, बेबी कंवर नरूका, ज्योति व करूणा ने विद्यालय के उपस्थित 400 विद्यार्थियों को इस अवसर पर विभिन्न यौगिक क्रियायें बताई और उन्हें योगासन व प्राणायाम का प्रायोगिक अभ्यास करवाते हुये उनके लाभ बताये।

प्राचार्य ईश्वर सुथार ने अंत में आज्ञार ज्ञापित करते हुये कार्यक्रम को लाभदायक बताया तथा कहा कि विभिन्न विद्यालयों में योग को पाठ्यक्रम में शामिल करने के साथ ही ऐसे कार्यक्रमों का संचालन समय-समय पर होना आवश्यक है।

आचार्य शांतिसागर समाधि हीरक महोत्सव व्याख्यान आयोजित

जैन धर्म के 300 आचार्यों में एक सोच की आवश्यकता- प्रो. गेलड़ा

संस्थान स्थित महाप्रज्ञ-महाश्रमण ऑडिटोरियम में प्रशममूर्ति आचार्यश्री शांतिसागर छाणी समाधि हीरक महोत्सव स्मृति व्याख्यान के अन्तर्गत 17 सितम्बर को व्याख्यानकर्ता प्रो. डाक्टर महावीर राज गेलड़ा ने कहा कि जैन आचार्यों में अपने साधु-जीवन के बावजूद समाज के सुधार व उत्थान की जो भावना पाई जाती है, वह अतुलनीय है। आचार्यशांतिसागर छाणी ने सामाजिक सुधार के लिये बहुत कार्य किये। आज अमेरिका व इंग्लैंड में रहने वाले भारतीय परिवारों का वहां का आकर्षण समाप्त हो गया है। उनमें चिंतायें बढी है और परिवार टूट रहे हैं। उन्हें भारतीय साधुओं व श्रमणों की जरूरत है। उन्होंने कहा कि जैन धर्म में 300 आचार्य हैं, हमें सबके लिए एक सोच की आवश्यकता है। संयुक्त राष्ट्र संघ की सूची में केवल 6 धर्म ही माने गये हैं, जिनमें जैन धर्म शामिल नहीं है।

जैन दर्शन में समाहित है विश्व-शांति का आधार

कार्यक्रम के अध्यक्ष कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा कि आचार्य शांतिसागर को पढने पर ऐसा लगता है कि महावीर भगवान की पुनरावृत्ति हुई है। उन्होंने समाजोद्धार व समाजोत्थान को महत्त्व दिया था। उत्तर भारत में लुप्त हो रही दिगम्बर परम्परा को उन्होंने पुनर्जीवित किया। उन्होंने कहा कि विश्व में शांति का आधार जैन धर्म व दर्शन में ही निहित है। पक्ष के साथ प्रतिपक्ष का होना इस जगत् का सच है। हमें सम्यक् दृष्टि से काम करना होगा। उन्होंने जैन समन्वय की आवश्यकता बताते हुये कहा कि जैन विश्वभारती संस्थान ने इस दृष्टि से बहुत कार्य किया है। समस्त जैन संस्थाओं और जैन आचार्यों के समन्वय का काम किया जा रहा है। छाणी समाधि हीरक महोत्सव समिति के अध्यक्ष न्यायमूर्ति अभय गोहिल ने अपने सम्बोधन में कहा कि आचार्य शांतिसागर छाणी ने कुरीतियों को मिटाने का काम किया। उनके समय में कन्याओं का विक्रय होता था, जिसे बंद करवाया। शिक्षा के क्षेत्र में भी काम किया। उन्होंने धर्म-प्रभावना के साथ समाज के लिये भी काम किया, देश व समाज की एकता के लिये भी काम किया।

भारतीय संस्कृति के जाज्वल्यमान नक्षत्र थे छाणी महाराज

समिति की कार्यकारी अध्यक्ष डा. सरिता एमके जैन ने कहा कि आचार्य शांतिसागर महाराज भारतीय संस्कृति के जाज्वल्यमान नक्षत्र थे। समस्त प्रतिकूलताओं के बावजूद उन्होंने समाज सुधार का बीड़ा उठाया और वीतराग साधना से जन-जन को अवगत करवाया। प्रारम्भ में प्रो. नलिन के. शास्त्री ने हीरक जयंती आयोजन समिति, जैन विश्वभारती संस्थान के पदाधिकारियों एवं अतिथियों का परिचय प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में आचार्य ज्ञानसागर महाराज का वीडियो संदेश प्रदर्शित किया गया, जिसमें उन्होंने धार्मिक समन्वय एवं सकारात्मक सोच को छाणी महाराज की विशेषता बताया। मुमुक्षु बहिनों ने मंगल संगान से कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। अंत में कुलसचिव रमेश कुमार मेहता ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम में अतिथियों के रूप में पूर्व कुलपति प्रो. महावीर राज गेलड़ा, जैन विश्व भारती के उपमंत्री जीवनमल मालू, पूर्व मुख्य ट्रस्टी भागचंद बरड़िया, न्यायमूर्ति अभय गोहिल व डा. सरिता एमके जैन चैन्नई थे। योगेश जैन दिल्ली, अनिल जैन दिल्ली, मनीष कुमार जैन, फकीरचंद जैन, अमित जैन, दीपक जैन, बलवीर जैन, राजीव जैन आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन डा. योगेश जैन ने किया।

श्रद्धा से होता है आत्मा का उत्थान- मुनिश्री देवेन्द्र कुमार

स्मृति सभा का आयोजन कर किया स्व. गोठी को याद

जैन विश्व भारती के संस्थापक सदस्य एवं प्रथम मंत्री रहे सूरजमल गोठी की स्मृति में 31 जुलाई को आयोजित सभा में मुनिश्री देवेन्द्र कुमार ने कहा कि जन्म और मृत्यु का प्रवाह निरन्तर चलता रहता है। जीवन के एक छोर पर जन्म है तो दूसरे छोर पर मृत्यु है। व्यक्ति में श्रद्धा भावना प्रबल होनी चाहिये और दूसरों की भलाई की सोच रहने पर उसका आत्मोद्धार होता है और वह दूसरों का जीवन भी सुधार देता है।

निष्ठा और समर्पण से करते थे कार्य

संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने जैन विश्व भारती के विकास के लिये किये गये गोठी के योगदान को याद करते हुये कहा कि वे हमेशा निष्ठा और समर्पण के साथ काम करते थे। विश्वविद्यालय के दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने भी उनके कर्तृत्व और व्यक्तित्व को स्मरण किया।

उन्होंने कहा कि स्व. सूरजमल गोठी ऐसे ही व्यक्ति थे। उन्होंने यहां भिक्षु विहार में आयोजित स्मृति सभा में अपने संबोधन में कहा कि जैन विश्व भारती के लिये अपना महत्त्वपूर्ण योगदान किया था। इसके अलावा सबके सुख-दुःख में काम आना उनकी प्रवृत्ति में शामिल रहा। स्मृति सभा ज्ञानात्मक होती है और गुणात्मक भी होती है। सबको उनके ऐसे गुणों को आत्मसात करना चाहिये। सभा में जैन विश्व भारती के अध्यक्ष अरविन्द संचेती ने कहा कि सूरजमल गोठी ने तुलसी अध्यात्म नीडम् की स्थापना में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सभा में जैन विश्व भारती के सहमंत्री जीवन मल मालू, विश्वविद्यालय के कुलसचिव रमेश कुमार मेहता, वित्ताधिकारी राकेश कुमार जैन, डा. बीएल जैन, डा. गिरीराज भोजक, डा. जसबीर सिंह, सोमवीर सागवान, डा. मनीष भटनागर, डा. गिरधारीलाल शर्मा, डा. विष्णु कुमार, डा. विकास शर्मा, कुसुम जैन, डा. अमिता जैन, प्रो. रेखा तिवाड़ी, डा. प्रगति भटनागर, महिमा जैन, डा. प्रद्युम्न सिंह शेखावत, जगदीश यायावर, जेपी सांखला, निमाईचरण त्रिपाठी, जेपी सिंह आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन विजयश्री ने किया।

गांधी जयंती पर विविध कार्यक्रमों का आयोजन

संस्थान में महात्मा गांधी जयंती के अवसर पर 1 अक्टूबर को आयोजित विविध कार्यक्रमों में हस्तशिल्प प्रेरणा एवं प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यहां सेमिनार हॉल में हुए मुख्य समारोह में प्राकृत एवं संस्कृत विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. दामोदर शास्त्री ने महात्मा गांधी को अहिंसा के साथ सत्य व स्वच्छता के लिये भी याद किया और कहा कि वे अहिंसा से अधिक सत्य के पुजारी थे। उन्होंने सत्य को लेकर विभिन्न प्रयोग भी किये और उनमें सफल हुये।

अहिंसा एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. अनिल धर ने कहा कि महात्मा गांधी केवल व्यक्ति नहीं, बल्कि विचार थे। उनके कुटीर उद्योग आदि आर्थिक विचारों को अगर देश अपना लेता तो आज विश्व की आर्थिक शक्ति बन कर उभरता। प्रो. समणी सत्यप्रज्ञा ने महावीर, महात्मा गांधी, मार्टिन लूथर और महाप्रज्ञ की समानताएँ बताई। शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने महात्मा गांधी के आदर्शों व विचारों को अपनाते हुये जीवन में आलोचनाओं, प्रतिक्रियाओं, समय के दुरूपयोग आदि से बचने और अपना शारीरिक विकास, मानसिक विकास, आध्यात्मिकता व नैतिक मूल्यों को अपनाने के लिये प्रेरित किया।

कार्यक्रम में प्रशांत जैन, पारस जैन, मुमुक्षु अंजलि, कमल किशोर, लक्ष्मी राठौड़, साक्षी प्रजापत, सरिता, स्नेहा पारीक, आईशा सिंह आदि ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये। अंत में रविन्द्र सिंह राठौड़ ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन राखी प्रजापत ने किया।

प्लेसमेंट के लिये विश्वविद्यालय में लगाये जायेंगे शिविर

प्रसार कार्यक्रम

विद्यार्थियों के कॅरियर को लेकर प्लेसमेंट सेल की बैठक आयोजित

संस्थान के अन्तर्गत गठित प्लेसमेंट सेल की एक बैठक यहां समन्वयक डा. बिजेन्द्र प्रधान की अध्यक्षता में 20 सितम्बर को आयोजित की गई। बैठक में विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को रोजगार दिलवाने के लिये प्लसमेंट की प्रक्रिया और वर्तमान शैक्षणिक सत्र की कार्ययोजना पर विचार किया गया। बैठक में तय किया गया कि प्लेसमेंट के लिये संस्थायें, औद्योगिक व व्यापारिक प्रतिष्ठान आदि विश्वविद्यालय में आकर छात्र-छात्राओं का साक्षात्कार करें और उनका चयन करे। ऐसे प्लेसमेंट शिविरों के आयोजन के अलावा अगर कोई संस्था या फर्म विश्वविद्यालय में आने में असमर्थ रहे और वहां वेकेंसी हो तो विद्यार्थियों को अपनी देखरेख में उनके वहां भी प्लेसमेंट के लिये होने वाले साक्षात्कार के लिये भेजा जा सकेगा। यहां प्लेसमेंट सेल के तत्वावधान में विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को विभिन्न महत्त्वपूर्ण संगठनों, संस्थाओं, औद्योगिक प्रतिष्ठानों आदि में होने वाली रिक्तियों के बारे में जानकारी प्रदान करती रहेगी। इच्छुक विद्यार्थियों को उन संगठनों-संस्थाओं आदि में आवेदन करने की प्रक्रिया पूर्ण करने के लिये भी प्लेसमेंट सहायता प्रदान करेगा। इनके अलावा बैठक में यह भी तय किया गया कि विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के कॅरियर को ध्यान में रखते हुये समय-समय पर यहां विशेषज्ञों के व्याख्यान भी रोजगार के अवसरों और उनमें सफलता प्राप्ति के सूत्रों के सम्बंध में करवाये जाकर विभिन्न क्षेत्रों में प्लेसमेंट के लिये प्रोत्साहित किया जायेगा। यह भी तय किया गया कि इन सभी निर्णयों और उनकी समस्त क्रियान्विति के सम्बंध में प्लेसमेंट सेल रिकार्ड संधारित करेगी और उसे सुरक्षित रखेगी। बैठक में समन्वयक डा. बिजेन्द्र प्रधान, डा. प्रद्युम्न सिंह शेखावत, डा. सरोज रॉय, अभिषेक चारण आदि उपस्थित थे।

प्लेसमेंट सेल

कैम्पस प्लेसमेंट में दो छात्रों का चयन

संस्थान के प्लेसमेंट सेल के तत्वावधान में 28 नवम्बर को समाज कार्य विभाग में एक कैम्पस प्लेसमेंट का आयोजन किया गया। प्लेसमेंट सेल के संयोजक डा. बिजेन्द्र प्रधान ने बताया कि चूरू की ''रिहाई'' संस्था के भंवरलाल एवं उनके सहयोगी ने 'एग्रो इंडिया इनोवेशन एक्सटेंशन प्रोजेक्ट' में समाज कार्य विभाग के छात्रों एवं पूर्व छात्रों का साक्षात्कार किया तथा मुन्नालाल प्रजापत व अर्जुनराम का चयन करते हुये उन्हें प्रशिक्षण के पश्चात रोजगार देने की स्वीकृति प्रदान की। रिहाई संस्थान चूरू जल संरक्षण, रोजगार, कृषि, महिला सशक्तिकरण, माइक्रोफाईनेंस आदि पर काफी समय से कार्य कर रही है। वे अपने नये प्रोजेक्ट में मोती और मशरूम की खेती को प्रोत्साहित करने एवं किसानों को इस सम्बंध में जागरूक करने के लिये प्रयास कर रही है। इससे किसानों को नया एवं अधिक मुनाफे वाला स्वयं का रोजगार प्राप्त हो सकेगा। साक्षात्कार कार्यक्रम संचालित करने में डा. पुष्पा मिश्रा व डा. विकास शर्मा ने महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान किया।

''ईमानदार जीवन शैली'' थीम पर सतर्कता जागरूकता कार्यशाला का आयोजन

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार एवं केन्द्रीय सतर्कता आयोग द्वारा प्रतिवर्ष आयोजित किये जाने वाले सतर्कता जागरूकता सप्ताह के तहत संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में 17 अक्टूबर को एक दिवसीय सतर्कता जागरूकता कार्यशाला का आयोजन किया गया। दो सत्रों में आयोजित इस कार्यशाला के शुभारम्भ सत्र में मुख्य अतिथि अहिंसा एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. अनिल धर ने कहा कि हमें जीवन के प्रत्येक मोड़ पर जागरूक बनने की आवश्यकता है। व्यक्ति में हर पल की जागृति आने पर वह विश्व के हर विषय को समझने में सक्षम हो जाता है और वह कभी ठोकर नहीं खा सकता है। विशिष्ट अतिथि शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने कहा कि भ्रष्टाचार से मुक्ति और ईमानदारी युक्त नैतिक भारत बनाने की दिशा में हम बढ पायेंगे। कार्यक्रम के अध्यक्ष प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने नैतिकता और ईमानदारी को मानवीय मूल्यों का आधार बताया तथा इन्हें अपनाने के लिये प्रेरित किया। कार्यशाला के प्रथम सत्र में खुला मंच आयोजित किया गया, जिसमें छात्राओं ने ''ईमानदारीः एक जीवन शैली'' विषय पर खुलकर अपने विचार व्यक्त किये। द्वितीय सत्र में ''जीवन में ईमानदारी का महत्त्व'' विषय पर विभिन्न छात्राओं ने अपने विचार रखे। इनमें श्रेष्ठ रहने वाली छात्राओं को पुरस्कृत किया गया। छात्रा महिमा प्रजापत, पूजा चौधरी व दक्षता कोठारी की प्रस्तुति इसमें सर्वश्रेष्ठ रही। अंत में डा. बलबीर सिंह चारण ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन कमल कुमार मोदी ने किया।

'ईमानदारी : एक जीवन शैली' थीम पर सतर्कता जागरूकता कार्यशाला आयोजित

संस्थान में सतत जागरूकता अभियान के तहत शिक्षा विभाग में 19 अक्टूबर को ''ईमानदारीः एक जीवन शैली'' विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने कहा कि ईमानदारी आत्मा की जीत और बेईमानी आत्मा की हार है। बेईमानी हिंसा, चोरी आदि की सूचक है, जबकि ईमानदारी अहिंसा, अचौर्य व सत्य को उत्पन्न करती है। ईमानदारी हमारे चरित्र व व्यक्तित्व का निर्माण करती है। ईमानदारी पूर्ण व्यक्ति सद्व्यवहार, शालीन व विनम्र स्वभाव का होता है। कार्यशाला में साक्षी गुर्जर ने अपने जीवन की प्रत्यक्ष घटना द्वारा ईमानदारी का महत्व स्पष्ट किया। ऋतु स्वामी ने ईमानदारी से समस्त कर्तव्यों को निभाने की आवश्यकता बताई। शकीला ने ईमानदारी का अर्थ स्पष्ट करते हुये कहा कि जो अपनी आत्मा का मान रखता है, वह वफादार है। कार्यक्रम का संचालन सरिता झूरिया ने किया।

बैंगलोर में प्रथम तेरापंथ एनआरआई समिट का आयोजन

देश, वेश व परिवेश में परिवर्तन हो लेकिन संस्कारों में परिवर्तन नहीं हो– आचार्यश्री महाश्रमण

अप्रवासी भारतीयों के सम्मुख संस्थान के पाठ्यक्रमों एवं गतिविधियों का परिचय प्रस्तुत

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के तत्त्वावधान में बैंगलुरू के कुम्बलगुडु स्थित आचार्यश्री तुलसी चेतना सेवा केन्द्र में 3 व 4 अगस्त को आचार्य श्री महाश्रमण के सान्निध्य में पहला ''तेरापंथ एनआरआई शिखर सम्मेलन'' का आयोजन किया गया, जिसमें 13 देशों से अप्रवासी भारतीय सम्मिलित हुये। सम्मेलन को सन्निधि प्रदान करते हुये आचार्य महाश्रमण ने कहा कि यह विदेशवासी भारतीयों का सम्मेलन है। देश, वेश और परिवेश में परिवर्तन हो सकता है, किन्तु संस्कारों में परिवर्तन नहीं होना चाहिये। आदमी को अपने नैतिक मूल्यों के प्रति जागरूक रहना चाहिये। यह समिट अपने धर्म व संस्कारों से जोड़ने और जुड़ने का प्रयास है।

एनआरआई समिट में संस्थान का परिचय प्रस्तुत

एनआरआई समिट में जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) का प्रतिनिधित्व करते हुये प्रो. नलिन शास्त्री ने विश्वविद्यालय के बारे में अप्रवासी भारतीयों को विस्तार से बताया। उन्होंने आचार्य तुलसी की कल्पना के मूर्त रूप में स्थापित विश्वविद्यालय के बारे में परिचय प्रस्तुत किया तथा संस्थान के पाठ्यक्रमों, उनकी विशेषताओं, इन्फ्रास्ट्रक्चर, देश-विदेश के अन्य विश्वविद्यालयों से एमओयू होने तथा अन्तर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय संगोष्ठियों, सम्मेलनों, कार्यशालाओं आदि एवं अन्य गतिविधियों के बारे में जानकारी प्रदान की। संयोजक सुरेन्द्र पटावरी व तेरापंथी महासभा के महामंत्री विनोद बैद ने भी समिट में विचार व्यक्त किये। राज कोठारी ने समिट के बारे में प्रारम्भ में जानकारी प्रदान की।

प्रारम्भ में संयोजक व प्रायोजक सुरेन्द्र पटावरी (मोमासर-बेल्जियम) के नेतृत्व में कन्या मंडल व किशोर मंडल के सदस्यों ने सम्भागियों का तिलकार्चन करके व मालायें पहनाकर भारतीय पद्धति से स्वागत किया। सम्मेलन के मंच पर भारत सहित आस्ट्रिया, अफ्रीका, बेल्जियम, कनाडा, हांगकांग, मॉरिशस, समोआ, सऊदी अरब, सिंगापुर, यूनाइटेड अरब अमीरात, यूनाइटेड किंगडम, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के राष्ट्र ध्वज लगे थे।

स्वतंत्रता दिवस

एनसीसी की छात्राओं ने दी तिरंगे को सलामी

संस्थान में 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस समारोह की अध्यक्षता करते हुये कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा कि सीमा पर तैनात होकर देश की रक्षा करने वाले सैनिकों का जीवन बहुत ही दुरूह होता है। सैनिकों का प्रशिक्षण बहुत ही जटिल प्रक्रिया के साथ सम्पन्न होता है, जिसमें वे कठिन परिस्थितियों से मुकाबला करना सीखते हैं। इस अवसर पर उन्होंने देश के तमाम शहीदों को नमन करते हुए कहा कि हमारा देश गौरवशाली है कि उसे अपने आपका बलिदान देने को तैयार रहने वाले नागरिक मिले। देश के प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि वह देश के प्रति अपनी भावना का परिचय अपने व्यावहारिक जीवन में भी सतत देता रहे। इससे पहले कुलपति ने तिरंगा झंडा फहराया। एनसीसी की छात्राओं ने परेड की और झंडा को सलामी दी। कार्यक्रम में दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि देश की एकता-अखंडता कायम रहने से ही विश्व में देश का गौरव बढ सकता है। वित्ताधिकारी राकेश कुमार जैन ने कहा कि राष्ट्र भावना को प्रमुख रखते हुय हमें देश के विकास में अपना योगदान देना चाहिये। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय की छात्राओं ने विविध देशभक्ति गीत, कवितायें और भाषण प्रस्तुत किये। समणी मृदुल प्रज्ञा, अभिषेक चारण आदि शिक्षकों ने कविताएं पढ़ी और और गीत प्रस्तुत किये। कार्यक्रम का संचालन डा. गिरीराज भोजक ने किया।

राष्ट्र विकास के साथ प्राणी मात्र के कल्याण के लिये हैं संविधान के कर्तव्य- कुलपति प्रो. दूगड़

70वें संविधान दिवस पर दिलाई शपथ एवं संसद के कार्यक्रम के सीधे प्रसारण का प्रदर्शन

संस्थान के आचार्य महाश्रमण ऑडिटोरियम में 26 नवम्बर को 70वें संविधान दिवस के अवसर पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने समस्त विद्यार्थियों, संकाय सदस्यों एवं संस्थान के अधिकारियों को संविधान को अंगीकार करने और राष्ट्र के प्रति कर्तव्यों के सम्बंध में शपथ दिलवाई। उन्होंने इस अवसर पर कहा कि संविधान में बताये गये नागरिकों के मूल कर्तव्यों का पालन प्रत्येक नागरिक को अपने लिये आवश्यक समझ कर करना चाहिये। प्रो. दूगड़ ने बताया कि संविधान को 70 वर्ष पूर्व 26 नवम्बर 1949 को अंगीकृत किया गया था। संविधान आत्मार्पित करते समय सभी भारतवासियों ने जो उच्चारण किया था, उसे अब फिर से उच्चारित करके हम सभी भारत के विकास एवं राष्ट्र के प्रति निष्ठा के लिये संकल्पित रहें। उन्होंने बताया कि हमारे संविधान के कर्तव्य केवल हमारे विकास के लिये नहीं बल्कि प्राणी मात्र के कल्याण की भावना के लिये हमें संकल्पित करते हैं। प्रारम्भ में दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने संविधान दिवस के बारे में बताते हुये कहा कि कुल 2 वर्ष 11 माह 18 दिनों की अवधि में हमारे देश का संविधान बना था और 26 नवम्बर 1949 को तैयार हुआ था, जिसे इसी दिन पूरे देश ने स्वीकार किया था। कार्यक्रम में दिल्ली के संसद भवन के सेंट्रल हॉल में मनाये गये संविधान दिवस का सीधा प्रसारण यहां ऑडिटोरियम के विशाल पर्दे पर प्रदर्शित किया गया। दिल्ली के इस पूरे कार्यक्रम को सभी ने आद्योपांत देखा और भाषण के महत्त्वपूर्ण अंशों पर अनेक बार तालियां भी बजाई। कार्यक्रम में कुलसचिव रमेश कुमार मेहता, वित्ताधिकारी आर.के. जैन, प्रो. अनिल धर, विजयकुमार शर्मा, ओ.एस.डी. दीपाराम खोजा, प्रो. रेखा तिवाड़ी, डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत, डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज, डॉ. विकास शर्मा, डॉ. बलबीर सिंह चारण, कमल कुमार मोदी, डॉ. पुष्पा मिश्रा, विनोद कस्वां, डॉ. प्रगति भटनागर, डॉ. सरोज राय, डॉ. सुनीता इंदौरिया, सोमवीर सांगवान, जगदीश यायावर आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन नोडल अधिकारी डा. भाबाग्रही प्रधान ने किया।

विश्वविद्यालय में क्षमायाचना पर्व मनाया

राग-द्वेष की भावना आने पर क्षमायाचना भी जरूरी- प्रो. दूगड़

कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा है कि जैन धर्म की तीन बातें महत्वपूर्ण हैं, पहला है नमस्कार महामंत्र, जिसमें दुनिया के समस्त साधु-संतों, मुनियों, सिद्धों आदि को बिना किसी भेदभाव के नमस्कार किया जाता है। दूसरा है अहिंसा व अनेकांत का सिद्धांत। सभी जानते हैं कि सारे झगड़ों की जड़ वैचारिक भिन्नता होती है, अनेकांत इस वैचारिक भिन्नता को समाप्त करता है और शांति स्थापित करने में अहिंसा महत्वपूर्ण है। तीसरी महत्त्वपूर्ण बात है क्षमायाचना। अपनी भूलों के लिये क्षमा मांगने से परस्पर कटुता खत्म होती है। जैनों ने क्षमा याचना के लिये "खम्मत खामणा" शब्द का प्रयोग किया है। यह प्राकृत भाषा का शब्द है। इसमें क्षमा करना और क्षमा मांगना दोनों शामिल है। इसमें क्षमा का आदान-प्रदान है। खम्मत-खामणा केवल गलतियों के लिये ही नहीं किया जाता। राग-द्वेष की भावना का आना भी गलत होता है। इसके लिये खम्मत-खामणा का प्रयोग राग-द्वेष के व्यवहार के लिये भी किया जाता है। वे यहां 04 सितम्बर को विश्वविद्यालय में सम्वत्सरी पर्व के अवसर पर आयोजित क्षमायाचना दिवस पर कार्यक्रम को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने इस अवसर पर विश्वविद्यालय के समस्त विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं गैर शैक्षणिक सदस्यों से एक साल की अवधि के दौरान हुई व्यवहार आदि की भूलों के लिये क्षमायाचना की। कार्यक्रम में दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, अहिंसा व शांति विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. अनिल धर, शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन, वित्ताधिकारी आरके जैन एवं विद्यार्थी प्रतिनिधियों के रूप में पारख जैन व साक्षी प्रजापत ने भी सम्बोधित किया एवं क्षमायाचना की। कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगों ने परस्पर क्षमायाचना की। कार्यक्रम का संचालन डा. योगेश जैन ने किया।

पर्यावरण संरक्षण के लिये कार्मिक सम्मानित होंगे, नियमित रूप से खेलों में हिस्सा लें कार्मिक

कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने पर्यावरण एवं शारीरिक स्वास्थ्य के सम्बंध में 29 अगस्त को यहां विश्वविद्यालय के स्टाफ के साथ आयोजित बैठक में महत्त्वपूर्ण निर्णय लिये हैं। प्रो. दूगड़ ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण की दिशा में यह एक महत्त्वपूर्ण कदम होगा कि यहां का पूरा स्टाफ महिने में एक दिन के लिये ईंधन-चालित वाहन का उपयोग नहीं करे। इसके लिये वे हर माह के प्रथम कार्यदिवस पर पैदल अथवा साईकिल से ही कार्यालय के लिये आवागमन करें। उन्होंने कहा कि पर्यावरण की समस्या विश्वव्यापी है और प्रत्येक नागरिक का दायित्व है कि वह कहीं न कहीं पर्यावरण के लिये अपनी भूमिका निभाये। उन्होंने इस अवसर पर घोषणा की कि विश्वविद्यालय में प्रत्येक वर्ष पर्यावरण का कार्य करने वाले कार्मिक या कार्मिकों को विशेष रूप से सम्मानित किया जायेगा, जिसमें उन्हें नकद राशि व सम्मान पत्र आदि देय होंगे। यह सम्मान उन्हें संस्थान के स्थापना दिवस समारोह में प्रदान किया जायेगा। कुलपति ने बताया कि पूरे परिसर में कहीं भी वृक्षारोपण, सफाई कार्य, श्रमदान अथवा अन्य रूप में पर्यावरण के लिये उल्लेखनीय कार्य करने पर यह सम्मान दिया जायेगा। उन्होंने बताया कि इसके लिये कार्मिक स्वयं अथवा विद्यार्थियों का समूह बनाकर भी मासिक, पाक्षिक रूप में कार्य कर सकते हैं।

खेलों में हिस्सा लेवें सभी कार्मिक

कुलपति प्रो. दूगड़ ने सबके लिये स्वास्थ्य को आवश्यक बताते हुये कहा कि खेल शारीरिक स्वास्थ्य के साथ मानसिक व भावात्मक स्वास्थ्य के लिये भी आवश्यक होते हैं, इसलिये विश्वविद्यालय के कार्मिकों को भी नियमित रूप से खेलों में हिस्सा लेना चाहिये।

उन्होंने प्रतिदिन सांयकाल वॉलीबॉल, फुटबॉल, कबड्डी, खो-खो, कैरम आदि खेल खेलने के लिये प्रेरित करते हुये कहा कि अगर वे नियमित खेलों का अभ्यास शुरू करेंगे तो वे उन्हें खेल के लिये कार्यालय समय में ही खेलने की व्यवस्था करवा देंगे। उन्होंने टीम बनाकर शुरूआत करने के लिये प्रेरित किया।

छात्राओं ने आयोजित की फ्रेशर पार्टी

उदास व डरे हुये लोगों के हमदर्द तो होते हैं, लेकिन हमसफर कोई नहीं बनता- प्रो. दूगड़

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय द्वारा महाप्रज्ञ-महाश्रमण ऑडिटोरियम में 23 अगस्त को आयोजित फ्रेशर पार्टी में मुख्य अतिथि के रूप में सम्बोधित करते हुये कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा है कि उदास व डरे हुये लोगों के हमदर्द तो होते हैं, लेकिन उनका हमसफर कोई नहीं होता। जो लोग मुस्कुराते हुये होते हैं, उनके जीवन भी प्रेरणादायी होते हैं और उनके हमसफर भी लोग बनते हैं। जीवन में पुरुषार्थ आवश्यक है, लेकिन पुरुषार्थ के साथ विरोध भी बहुत होता है और यह मान कर चलो कि विरोध होना भी प्रगति का प्रतीक है। दुनिया में लोग किसी को आगे बढते हुये नहीं देखना चाहते और वे विरोध करते हैं। पुरुषार्थ करके निरन्तर आगे बढते रहना ही सफलता है। चैम्पियन वे होते हैं, जो कभी रुकते नहीं, जब तक कि वे चैम्पियन नहीं बन जाते। आगे बढने की प्रेरणा सदा खुद से ही लें। रोज सपने देखें और उन्हें पूरा करने के लिये पुरुषार्थ करें। उन्होंने छात्राओं से कहा कि यह संस्थान अपनी अलग पहचान रखता है और अनेक पाठ्यक्रमों से ही नहीं बल्कि नैतिक शिक्षा व जीवन मूल्यों के निर्माण एवं चारित्रिक व संस्कारों की दृष्टि से उत्थान को लेकर भी यह अद्वितीय है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि भारतीय संस्कृति में शिक्षा ज्ञान के प्रकाश और अमृत की ओर ले जाने वाली मानी गई है। कार्यक्रम में छात्राओं ने विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये। चंचल, आयशा, पूजा तंवर, सुमित्रा, मोनिका, काजल, हेमलता आदि ने राजस्थानी व पंजाबी गीतों पर मनमोहक नृत्यों की प्रस्तुतियां दीं। कार्यक्रम में नृत्य की प्रतियोगिता भी आयोजित की गई।

ऑरियन्टेशन एवं प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में एक दिवसीय ऑरियन्टेशन एवं प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन 19 अगस्त को किया गया। शिविर के प्रथम सत्र में डॉ. विनोद सियाग द्वारा नव-आगन्तुक छात्राओं को योग एवं प्रेक्षाध्यान के माध्यम से स्वास्थ्य लाभ के विभिन्न तरीके बतलाये गये। द्वितीय सत्र में अध्यक्षता करते हुये प्राचार्य प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि छात्रजीवन में समुचित विकास के लिए जिज्ञासा बेहद जरूरी है। अतः सतत् जिज्ञासा रखते हुए सकारात्मक रवैया अपनायें, ताकि सहजता से जीवन लक्ष्यों की प्राप्ति हो सके। अपना लक्ष्य निर्धारित करते समय स्वयं की रुचियों का ध्यान अवश्य रखें और पुरूषार्थ में लग जायें, ताकि बेहतर भविष्य की कल्पना को साकार किया जा सके। उन्होंने छात्राओं को समय की प्रतिबद्धता के प्रति विशेष रूप से जागरूक रहने का संदेश दिया तथा कहा कि समय किसी का इन्तजार नहीं करता। शिविर के तृतीय सत्र में सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें मुस्कान बल्खी, सिमरन, महक चौहान आदि छात्राओं ने बेहतर प्रस्तुतियां दी।

शिक्षक दिवस

छात्राओं द्वारा शिक्षकों को पौधे भेंट, किया सम्मान, दिया पर्यावरण का संदेश

शिक्षकों ने खेले खेल, सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन

संस्थान के महाप्रज्ञ-महाश्रमण ऑडिटोरियम में 05 सितम्बर को आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की छात्राओं की ओर से आयोजित शिक्षक दिवस समारोह में छात्राओं ने अपने-अपने शिक्षकों से पर्यावरण संरक्षण का आग्रह करते हुये उन्हें विभिन्न वृक्षों के पौधे भेंट किये। सुरभि एवं समूह ने इन पौधों की व्यवस्था की तथा साथ में मैसेज दिया कि प्रदूषण का हिस्सा नहीं, बल्कि समाधान का हिस्सा बनें। सुरभि ने अमेजन के जंगलों में लगी आग को पर्यावरण का खतरा बताया तथा कहा कि अगर हम पेड़ नहीं लगायेंगे तो इस धरती के समस्त जन-जीवन पर खतरा मंडरा रहा है। समारोह में मुख्य अतिथि अहिंसा एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. अनिल धर ने कहा कि वर्तमान में शिक्षक का कार्य सूचनायें देना भर रह गया है, जबकि शिक्षक के लिये आवश्यक है कि वह शिक्षा के साथ चरित्र, गुणवत्ता, राष्ट्रभक्ति, मानवता से जोड़ कर अपने विद्यार्थियों को तैयार करे। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि समाज कार्य विभाग के विभागाध्यक्ष डा. बिजेन्द्र प्रधान ने कहा कि शिक्षक हमेशा विद्यार्थी के विकास के लिये प्रयास करता है।

शिक्षकों को खेल खिलाये और दिये पुरस्कार

कार्यक्रम में पूजा चौधरी व अन्य छात्राओं ने अपने सभी शिक्षकों को विभिन्न उपमाओं से सुशोभित करते हुये सचित्र पीपीटी का प्रदर्शन भी किया। इसके अलावा अध्यापकों के कार्य-व्यवहार पर रचित कविता प्रस्तुत करके खूब तालियां बटोरी। कार्यक्रम में अध्यापकों के लिये छात्राओं ने खेलों का आयोजन भी किया, जिसमें परस्पर गुब्बारा फोड़ने की प्रतियोगिता में कमल कुमार मोदी विजेता रहे। इसी तरह से बुक रेम्प गेम में सभी शिक्षकों के सिर पर किताबें रखी जाकर उन्हें चलाने, बैठाने, नचाने की प्रतियोगिता की गई, जिसमें स्वाति शर्मा विजेता रही। विजेता शिक्षक-शिक्षिकाओं को छात्राओं ने पुरस्कार प्रदान किये। कार्यक्रम में मोनिका एवं सुमित्रा ने समूह नृत्य किया। मनीषा चौहान के ''रंगीलो म्हारो ढोलणा रै'' राजस्थानी गीत पर नृत्य को खूब दाद मिली। हेमलता सैनी का नृत्य भी बेहद सराहनीय रहा। सुरभि, महिमा, प्रतिष्ठा, दक्षता, दिव्यता, निष्ठा व निकिता के सामुहिक मैट्रो नृत्य को जम कर सराहा गया। मानसी, काजल, शोभा वर्मा, कल्पिता, साक्षी आदि के एकल नृत्यों ने भी कार्यक्रम में धूम मचाई। विजयलक्ष्मी, रूबीना, सपना स्वामी ने गीत व कवितायें प्रस्तुत की। पूजा प्रजापत एवं समूह ने नाटिका प्रस्तुत की। प्रारम्भ में काजल व सोनम ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। प्रतिष्ठा कोठारी ने अपनी साथियों के साथ कार्यक्रम का संचालन किया।

पर्युषण पर्व मनाया : परस्पर क्षमायाचना की

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में 4 सितम्बर को प्रार्थना सभा में पर्युषण पर्व मनाया गया, जिसमें महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने सभी छात्राओं एवं शिक्षकों के समक्ष वर्षभर में स्वयं के द्वारा प्रत्यक्ष एवं परोक्ष व्यवहार से किसी के व्यक्तिगत सम्मान को आघात लगा हो, उन के प्रति क्षमा याचना करते हुए छात्राओं को बताया कि आज का दिन प्रत्येक मानव के जीवन में विशिष्ट महत्व रखता है क्योंकि आज के दिन वर्षभर किये गये कार्यों, उसके नकारात्मक प्रभावों के प्रति एवं स्वयं के द्वारा की गयी गलतियों को सार्वजनिक रूप से स्वीकार कर सम्बन्धित व्यक्ति के प्रति क्षमा याचना का दिन है।

कार्यक्रम के दौरान महाविद्यालय की प्रियंका रेगर, रूबीना बानो, योगिता शर्मा, दीपिका गिरिया, दीक्षा बैंगानी, संतु गोदारा, आयशा सिंह, एवं करिश्मा खान आदि अनेक छात्राओं ने भी अपनी सहपाठियों के बीच वर्षभर में किये गये प्रत्यक्ष एवं परोक्ष गलतियों को स्वीकार कर क्षमा याचना की। कार्यक्रम के दौरान सहायक आचार्य डॉ. प्रगति भटनागर, कमल कुमार मोदी, अभिषेक चारण, डा. बलबीर सिंह चारण, सोमवीर सांगवान, श्वेता खटेड़, शेर सिंह राठौड़, अभिषेक शर्मा, मांगीलाल एवं घासीलाल शर्मा उपस्थित रहे।

मासिक व्याख्यान माला

गीता दर्शन का निष्काम कर्म है सर्वोपरि धर्म

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में शुरू की गई इस सत्र की पहली मासिक व्याख्यान माला में प्राचार्य प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी द्वारा ''गीता दर्शन में निष्काम कर्म'' विषय पर दिये व्याख्यान में बताया कि महर्षि वेदव्यास द्वारा लिखित गीता के 18 अध्यायों में ज्ञान, भक्ति एवं कर्म की त्रिवेणी बही है, लेकिन इन तीनों में भी कर्म को सर्वोपरि माना गया है। योग में स्थिर रह कर ही कर्म किया जा सकता है। कर्म में दक्षता व सिद्धहस्तता को योग मानते हुए कहा गया है कि मनुष्य को आसक्ति व तृष्णा से परे रहना चाहिए। गीता में कर्मरत सन्तोष को सबसे बड़ा धर्म माना है। कर्तव्य निर्वहन की ललक सदैव सर्वोपरि होनी चाहिए। मासिक व्याख्यान माला के संयोजक सोमवीर सांगवान ने प्रारंभ में प्राचार्य प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी को व्याख्यान हेतु आमंत्रित किया।

इस दौरान महाविद्यालय के व्याख्याता डा. प्रगति भटनागर, कमल कुमार मोदी, डा. बलबीर सिंह, अभिषेक चारण, शेरसिंह, मांगीलाल, अभिषेक शर्मा, श्वेता खटेड़ एवं घासीलाल शर्मा उपस्थित रहे।

गौरवमयी सनातन संस्कृति से प्रेरणा लेकर भविष्य को उज्ज्वल बनायें

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में 29 नवम्बर को मासिक व्याख्यान माला के अन्तर्गत प्राचार्य प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में सहायक आचार्य शेरसिंह राठौड़ ने ''भारतीय संस्कृति का उज्ज्वल भविष्य'' विषय पर व्याख्यान देते हुये बताया कि भारतीय संस्कृति मानव समाज की अमूल्य धरोहर है। भारत की सनातन संस्कृति को इस बात का श्रेय प्राप्त है कि उसने ना केवल भारतीय उप-महाद्वीप वरन् समूचे संसार में अपने गौरव का परचम फहराया है। निःसन्देह भारतीय संस्कृति का अतीत अत्यन्त उज्ज्वल रहा है, लेकिन हमारा भी कर्त्तव्य है कि हम अतीत से शिक्षा लेते हुए भविष्य को और भी अधिक उज्ज्वल एवं गौरवपूर्ण बनाएं। अध्यक्षता करते हुये प्रो. त्रिपाठी ने व्याख्यान को सार्थक एवं सही दिशा के लिये प्रेरक बताया।

अंत में श्वेता खटेड़ ने आभार ज्ञापित किया। इस अवसर पर डॉ. प्रगति भटनागर, कमल कुमार मोदी, डॉ. बलबीर सिंह, अभिषेक चारण, अभिषेक शर्मा, अजयपाल सिंह भाटी, घासीलाल शर्मा आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन सोमवीर सांगवान द्वारा किया गया।

देश के आर्थिक विकास के लिये महत्त्वपूर्ण है वित्तीय समावेशन

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में संचालित की जाने वाली व्याख्यानमाला के अन्तर्गत 22 अक्टूबर को अभिषेक शर्मा ने ''वित्तीय समावेशन'' विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने व्याख्यान में बताया कि देश के आर्थिक विकास में वित्तीय समावेशन की अहम भूमिका होती है। इसमें समाज के निचले तबके को बैंकिंग की वित्तीय सुविधाओं से जोड़ कर समाज की मुख्य धारा में शामिल किया जाता है। वित्तीय प्रबंधन द्वारा सरकारों द्वारा विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं का लाभ वांछित व्यक्तियों के खातों में सीधे पहुंचाया जाता है, ताकि उन्हें आर्थिक सम्बल मिल सके और देश में व्याप्त भ्रष्टाचार को जड़ से उखाड़ कर फेंका जा सके। व्याख्यानमाला की अध्यक्षता करते हुये प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि अर्थव्यवस्था देश की रीढ़ होती है और आर्थिक सुव्यवस्था देश के प्राण होते हैं। इस अवसर पर उपस्थित डा. प्रगति भटनागर, कमल कुमार मोदी, अभिषेक चारण, डा. बलबीर सिंह चारण, श्वेता खटेड़, शेर सिंह, मांगीलाल आदि ने इस सम्बंध में व्याख्याताकार से अनेक सवाल भी पूछे, जिनका जवाब अभिषेक शर्मा ने प्रस्तुत किये। कार्यक्रम का संचालन सोमवीर सांगवान ने किया।

गरबा में झूम-झूम कर नाची छात्रायें, गरबा नृत्य की शानदार प्रतियोगिता आयोजित

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के तत्त्वावधान में 5 अक्टूबर रात्रि में भव्य गरबा नृत्य का कार्यक्रम आयोजित किया गया। गरबा के इस कार्यक्रम में छात्राओं ने समूह बना कर प्रतियोगिता में हिस्सा लिया। कुल 10 समूहों ने प्रतियोगिता में हिस्सा लिया। इस गरबा प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर रचना सोनी एवं समूह, द्वितीय स्थान पर दक्षता कोठारी एवं समूह तथा तृतीय स्थान पर पूजा सोनी एवं समूह रहे। सामूहिक गरबा कार्यक्रम में भी श्रेष्ठ नृत्य, हाव-भाव, वेशभूषा आदि के लिये चयन किया जाकर गीता पूनिया, श्वेता खटेड़, मानसी खटेड़ व मानसी जांगिड़ इन चार जनों को पुरस्कृत किया गया। गरबा कार्यक्रम में सभी छात्रायें राजस्थानी व गुजराती परिधानों में सज-धज कर पहुंची और डांडियों के साथ नृत्य के आयोजन में हिस्सा लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कनक दूगड़ ने की। मुख्य अतिथि अंजना शर्मा व विशिष्ट अतिथि अंजू बैद रही। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुये इन सभी अतिथियों ने सराहना की और महाविद्यालय की छात्राओं के गरबा खेलने के जोश को उत्कृष्ट बताया।

प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित

कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के कुलसचिव रमेश कुमार मेहता ने कहा कि भारतीय संस्कृति में पर्वों का विशेष महत्त्व है और इन सबके पीछे सर्वहित की भावनायें रहती है। प्रारम्भ में महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने नवरात्रा के महत्त्व को बताते हुये कहा कि गरबा सिद्धिदात्री देवियों की आराधना का पर्व है। इसमें नृत्य कला द्वारा हम देवी मां को प्रसन्न करते हैं और उनकी उपासना करते हैं। इस अवसर पर प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया, जिसमें सोनम कंवर, आईशा सिंह, मोनिका तिवाड़ी व पूजा चौधरी ने नवरात्रा, दुर्गा के स्वरूपों, पूजा-आराधना की विधियों आदि से सम्बंधित प्रश्न दर्शकों से पूछे और सही जवाब देने वालों को पुरस्कार प्रदान किये गये। कार्यक्रम के अन्तर्गत आयोजित प्रतियोगिताओं के परिणामों की घोषणा अभिषेक चारण ने की। निर्णायक के तौर पर आयुषी शर्मा, विनोद सियाग व अमिता जैन थी। कार्यक्रम का संचालन रूबीना बानो, महिमा प्रजापत, दक्षता कोठारी, प्रतिष्ठा कोठारी व स्नेहा पारीक ने किया।

हिन्दी दिवस मनाया

विश्व की तीसरी बड़ी भाषा है हिन्दी

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय व प्राकृत एवं संस्कृत विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में हिन्दी दिवस पर प्राचार्य प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में एक कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें अभिषेक चारण ने हिन्दी की इतिहास से वर्तमान तक की समीक्षा करते हुये वर्तमान भारतीय जीवन में हिन्दी के महत्व को बताया। प्रो. त्रिपाठी ने 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस मनाये जाने की महत्ता बताई और कहा कि आज समूचे विश्व में विश्व की तीसरी सबसे बड़ी भाषा के रूप में हिन्दी उभरी है। प्राकृत एवं संस्कृत विभाग के व्याख्याता डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने भी छात्राओं को सम्बोधित करते हुए भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की पंक्तियां ''निज भाषा उन्नति अहे सब उन्नति को मूल, बिन निज भाषा उन्नति के मिटे न हिय को सूल।'' उद्धृत करते हुये बताया कि मातृभाषा के साथ राष्ट्रभाषा की उन्नति ही वास्तविक अर्थों में मानव जीवन की उन्नति कही जा सकती है।

कार्यक्रम में आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की छात्राओं ने राजनन्दिनी जेतमाल, नफीसा बानो, माधुरी सोनी, विशाखा स्वामी, प्रियंका प्रजापत रीतिका सांखला, नजमा खान आदि ने हिन्दी दिवस से सम्बन्धित प्रस्तुतियां दीं।

दो दिवसीय दीक्षारम्भ समारोह आयोजित

दायरे से बाहर निकल कर, नई सोच अपनायें-प्रो. दूगड़

संस्थान के विद्यार्थियों की प्रेरणा के लिये 21 अगस्त को आयोजित कार्यक्रम दीक्षारम्भ समारोह में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा कि अपनी क्षमताओं को पहचानें और हमेशा अपनी सीमित सोच को विस्तीर्ण करें। दायरे के भीतर रहने के बजाये दायरे से बाहर निकलें और देखें कि आपकी नई सोच आपके लिये संभावनाओं के नये द्वार खोल देती है। उन्होंने कहा कि यह विश्वविद्यालय विद्यार्थियों की क्षमताओं को उभारने के लिये पर्याप्त अवसर प्रदान करता है। आपको अपने भीतर के ज्ञान को उजागर करना होगा। उन्होंने जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय को अन्य सभी विश्वविद्यालयों से अलग बताते हुये कहा कि यहां नैतिक मूल्यों के संचालन के लिये अनुशास्ता का पद सर्वोपरि रखा गया है।

जीवन मूल्यों व चरित्र की शिक्षा देने वाला विश्वविद्यालय

दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने इस अवसर पर जैविभा विश्वविद्यालय की विशेषताओं को बताते हुये कहा कि आचार्य तुलसी ने इसकी स्थापना इस सोच के साथ की थी कि देश में तत्समय मौजूद 209 विश्वविद्यालयों की लीक से हट कर यह विश्वविद्यालय जीवन मूल्यों और चरित्र की शिक्षा देने वाला बने। उन्होंने बताया कि यहां के पाठ्यक्रमों में चरित्र निर्माण और जीवन मूल्यों की बातें समाहित हैं। प्राकृत व संस्कृत विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. दामोदर शास्त्री, अहिंसा व शांति विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. अनिल धर, अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. रेखा तिवाड़ी, शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन, योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के डा. प्रद्युम्न सिंह शेखावत, समाज कार्य विभाग की डा. पुष्पा मिश्रा आदि ने अपने-अपने विभागों के बारे में जानकारी दी। समारोह में मनीषा ने 'थानैं नैणां में बंद कर राखूंली...' गीत पर एकल नृत्य, वंदना एवं ग्रुप ने 'घूमर घूमै ली जी...'' पर समूह नृत्य और पूर्णिमा ने 'रंगीला सावण आयो रै' गीत पर नृत्य प्रस्तुत किये। प्रारम्भ में संयोजक डा. भाबाग्रही प्रधान ने कार्यक्रम की आवश्यकता और भूमिका का प्रस्तुतीकरण किया। हिमांशी व समूह ने स्वागत गान प्रस्तुत किया। अंत में डा. जुगल किशोर दाधीच ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

कार्यक्रम में सभी संकायों के सदस्य शिक्षक और विद्यार्थी उपस्थित थे।

फ्रेशर पार्टी का आयोजन

दीक्षारम्भ समारोह के द्वितीय दिवस समापन समारोह के अवसर पर आयोजित फ्रेशर पार्टी में मुख्य अतिथि कनक दूगड़ ने कहा कि छात्राओं में विभिन्न कलात्मक प्रतिभाओं को देखकर वे अभिभूत हैं। एक से बढ कर एक प्रदर्शन उनकी क्षमताओं का प्रतीक है। छात्राओं के अपनी-अपनी कला में निरन्तर पारंगत बनने में यह विश्वविद्यालय सहायक है। यहां संचालित विभिन्न गतिविधियां छात्राओं के सर्वांगीण विकास में योगदान करती हैं और उनके जीवन को उन्नत बनाने का काम करती हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने कहा कि यह कार्यक्रम जूनियर विद्यार्थियों को प्रोत्साहन देने एवं सीनियर को उनका सहयोगी बनाने में सहायक है। यह विश्वविद्यालय एक आध्यात्मिक संस्थान है, जहां की परम्परा अन्य समस्त विश्वविद्यालयों से अलग है। यहां संयम और समता की भावना का विकास किया जाता है। इस अवसर पर सीनियर व जूनियर छात्राओं ने विभिन्न आकर्षक प्रस्तुतियां दी, इनमें आरती तिवाड़ी, मेहराज, पूर्णिमा चौधरी, सोनिया, पुष्पा, प्रीति जांगिड़ आदि ने राजस्थानी व पंजाबी गीतों पर एकल नृत्य प्रस्तुत करके वाहवाही लूटी। अम्बिका एवं ग्रुप तथा निरन्जन एवं ग्रुप ने सामूहिक नृत्यों की प्रस्तुति देकर सबका मन मोहा। कार्यक्रम में पीपीटी के माध्यम से छात्राओं का आकर्षक फोटो परिचय प्रस्तुत किया गया। टेलेंट शो, प्रतियोगिताओं एवं अन्य प्रस्तुतियों ने सबको मोहित किया। कार्यक्रम के पश्चात सामाजिक समरसता भोजन का आयोजन भी किया गया। कार्यक्रम में लिपि दूगड़, डा. भाबाग्रही प्रधान, डा. आभासिंह, डा. सरोज राय, डा. मनीष भटनागर, बलवीर सिंह, डा. सोमवीर सांगवान, डा. गिरीराज भोजक, अजयपाल सिंह, डा. गिरधारी राम, डा. विष्णु कुमार आदि के अलावा छात्रायें उपस्थित रहीं।

सिंगल यूज प्लास्टिक काम में नहीं लेने का संकल्प दिलाया

'स्वच्छता ही सेवा' के तहत प्लास्टिक कचरा मुक्त भारत अभियान में कार्यक्रम आयोजित

'स्वच्छता ही सेवा' अभियान के तहत चलाई जा रही प्लास्टिक कचरा मुक्त भारत मुहिम के अन्तर्गम 18 सितम्बर को यहां जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) के शिक्षा विभाग एवं आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में कार्यक्रम आयोजित करके छात्राध्यापिकाओं एवं छात्राओं को जानकारी प्रदान की गई एवं सबको स्वच्छता की शपथ दिलवाई गई। कार्यक्रम समन्वयक डा. भाबाग्रही प्रधान ने इन कार्यक्रमों में बताया कि भारत सरकार के मानव संसाधन मंत्रालय के तत्त्वावधान में चलायी जा रही स्वच्छता ही सेवा योजना में सम्पूर्ण देश को प्लास्टिक व पॉलिथीन कचरे से मुक्त बनाने के लिये अभियान चलाया जा रहा है, जिसमें हम सबकी यह जिम्मेदारी है कि हम अपने स्तर पर भी अभियान में सहयोग प्रदान करें और जन जागृति में सहायक बनें। उन्होंने बताया कि प्रदूषण केवल हमारे देश की ही नहीं बल्कि वैश्विक समस्या है और इससे निपटने के प्रयासों में हमारा देश सबसे अग्रणी है। प्लास्टिक एवं पॉलिथीन हमारी जमीन की उर्वरक शक्ति को नष्ट करके उसे बंजर बनाती है और पेड़-पौधों, फसलों-बागवानी आदि पर संकट पैदा करते हैं, इसलिये स्वच्छता के साथ प्लास्टिक कचरा मुक्त बनाने से पर्यावरण का संरक्षण भी संभव हो पायेगा। हमें सिंगल यूज प्लास्टिक का बहिष्कार करना होगा। उन्होंने इस अवसर पर उपस्थित सभी छात्राओं एवं शिक्षकों को स्वच्छता की शपथ दिलवाई और प्लास्टिक का उपयोग नहीं करने का संकल्प ग्रहण करवाया।

गुरु पूर्णिमा पर्व मनाया

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय एवं शिक्षा विभाग में 16 जुलाई को गुरु पूर्णिमा पर्व के उपलक्ष में कार्यक्रम आयोजित किये गये।

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने संस्कृत साहित्य में वर्णित गुरु की महिमा के बारे में बताते हुये कहा कि प्राचीन आर्ष पद्धति में जो मान-सम्मान गुरु को दिया गया, वह आज पूरे विश्व के लिये अनुकरणीय है। उन्होंने बताया कि भारत में गुरु-शिष्य की एक सुदीर्घ परम्परा रही है, जिसमें गुरु निरपेक्ष भाव से शिष्य के जीवन को संवारने का उपक्रम करता है। कार्यक्रम में हिन्दी व्याख्याता अभिषेक चारण, छात्रा रूबिना बानो, खुशबू बानो एवं आरती सिंघानिया ने भी विचार प्रकट किए।

कार्यक्रम में डॉ. प्रगति भटनागर, कमल कुमार मोदी, सोमवीर सांगवान, डॉ. बलबीर सिंह, शेरसिंह राठौड़, अभिषेक शर्मा, श्वेता खटेड़, घासीलाल शर्मा आदि उपस्थित रहे।

ऑनलाईन पाठ्यक्रमों एवं स्वयं पोर्टल पर व्याख्यान आयोजित

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में 19 सितम्बर को ओनलाईन पाठ्यक्रमों एवं सम्बंधित पोर्टल के बारे में व्याख्यान का आयोजन किया गया। यहां कम्प्यूटर लैब में प्राचार्य प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यक्रम में आईटी व्याख्याता डॉ. प्रगति भटनागर द्वारा ''स्वयं के माध्यम से मूक्स'' विषय पर व्याख्यान दिया गया। व्याख्यान में उन्होंने बताया कि डिजीटल इंडिया अभियान के महत्वपूर्ण हिस्से के रूप में ''स्वयं पोर्टल'' एक महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम है, जिसमें मूक्स कोर्सेज के माध्यम से कोई व्यक्ति किसी भी समय और कहीं पर भी होते हुये सहजता से अपना अध्ययन कर सकता है। स्वयं प्लेटफॉर्म पर कक्षा नौ से स्नातकोत्तर तक के सभी प्रकार के कॉर्सेस उपलब्ध है एवं ये एम.एच.आर.डी. द्वारा मान्यता प्राप्त हैं। यह सभी कोर्स पोर्टल पर ऑनलाईन उपलब्ध हैं।

इस पोर्टल पर यूनिवर्सिटी संकाय सदस्यों के लिए अर्पित नाम से विभिन्न रिफ्रेसर कोर्सेस उपलब्ध हैं। इस पोर्टल पर उपलब्ध कोर्सेस से विश्वविद्यालय के छात्र भी लाभान्वित हो सकते हैं। पॉवर पॉइन्ट के प्रजेन्टेशन के माध्यम से उन्होंने दूरस्थ शिक्षा और नियमित शिक्षा दोनों में स्वयं एवं मूक्स की उपयोगिता को प्रभावी ढंग से बताया। व्याख्यान कार्यक्रम में प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने अंत में आभार ज्ञापित करते हुये बताया कि भारत सरकार द्वारा अधिकृत पाठ्यक्रम को ओनलाईन निःशुल्क प्राप्त करके अध्ययन करना हर विद्यार्थी के लिये लाभप्रद साबित हो रहे हैं। कार्यक्रम में अभिषेक चारण, डा. बलबीर सिंह चारण, श्वेता खटेड़, शेर सिंह राठौड़, अभिषेक शर्मा, मांगीलाल, घासीलाल शर्मा आदि उपस्थित रहे। व्याख्यान कार्यक्रम का संचालन व्याख्याता सोमवीर सांगवान ने किया।

राईटिंग स्किल पर व्याख्यान आयोजित

केन्द्रीय विश्वविद्यालय अजमेर के प्रो. संजय अरोड़ा ने यहां 30 सितम्बर को आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में विद्यार्थियों को सरल भाषा में अंग्रेजी में लिखने की कला समझाई तथा बताया कि उनके कॅरियर की दृष्टि से राईटिंग स्किल बहुत ही उपयोगी साबित होगी। वे यहां अंग्रेजी के राईटिंग स्किल विषय पर आयोजित अतिथि व्याख्यान में व्याख्यान दे रहे थे। कार्यक्रम में अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. रेखा तिवाड़ी ने प्रारम्भ में उनका परिचय प्रस्तुत किया तथा अंत में व्याख्याता सोमवीर सांगवान ने आभार ज्ञापित किया।

अहिंसा एवं शांति विभाग

एक दिवसीय अहिंसा प्रशिक्षण शिविर आयोजित

मस्तिष्क को दिये गये सकारात्मक सुझावों का होता है जीवन में प्रभाव

संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग की समणी सत्यप्रज्ञा ने यहां सेमिनार हॉल में 23 नवम्बर को आयोजित एक दिवसीय अहिंसा प्रशिक्षण शिविर में अहिंसा प्रशिक्षण की आवश्यकता और महत्व के बारे में बताया तथा कहा कि हमारे द्वारा दिये जाने वाले समस्त सकारात्मक सुझावों को मस्तिष्क अपने चेतन-अवचेतन में संग्रहित करता है और उनका प्रभाव हमारे जीवन में दृष्टिगोचर होता है। उन्होंने महाप्राण ध्वनि के महत्त्व और उसके मनुष्य पर होने वाले प्रभावों को भी अपने सम्बोधन में रेखांकित किया। अध्यक्षता करते हुये अहिंसा एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. अनिल धर ने कहा कि मानवाधिकारों की रक्षा केवल अहिंसा प्रशिक्षण द्वारा ही संभव हो सकती है। हमारी सांस्कृतिक परम्परा में अहिंसा के भाव रहे हैं। विभाग के स्नातकोत्तर विद्यार्थियों कल्पना, रेणु, पूजा आदि ने भी अहिंसा प्रशिक्षण की पद्धति और उससे होने वाले परिवर्तनों के बारे में बताया। मदर्स इंटरनेशनल सैकेंडरी स्कूल सुजानगढ़ के प्रधान गजेन्द्र सिंह व संजय जैन ने जैविभा विश्वविद्यालय को जैन आचार्यों के विचारों का मूर्त स्वरूप बताया तथा कहा कि आचार्य तुलसी, महाप्रज्ञ व महाश्रमण के विचार वर्तमान में प्रासंगिक हैं तथा उनका आचरण आवश्यक है। शिविर में संस्थान के योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के डा. प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने ध्यान एवं यौगिक क्रियाओं का अभ्यास करवाया और उनके लाभ बताये। शिविर में आरती वर्मा, अंजना पारीक, सीमा राजपुरोहित, संजय जैन, कमल किशोर, मोनिका भाटी, राखी प्रजापत, हरफूल, हीरालाल आदि के अलावा मदर्स इंटरेनशनल स्कूल सुजानगढ के 90 विद्यार्थियों ने भी भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन डा. समणी रोहिणीप्रज्ञा ने किया। अंत में डा. विकास शर्मा ने आभार ज्ञापित किया।

मानवाधिकार दिवस मनाया

संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग में 10 दिसम्बर को मानवाधिकार दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. अनिल धर ने मनुष्य के मानवाधिकारों के बारे में बताया और कहा कि ये अधिकार सार्वभौमिक होते हैं। डा. रविन्द्र सिंह राठौड़ ने मानवाधिकार के इतिहास पर विचार रखे। डा. बलवीर सिंह चारण ने भारतीय संविधान में मानवाधिकारों के वर्णन को उल्लेखित किया। डा. प्रद्युम्नसिंह शेखावत ने छोटे-छोटे अधिकारों की ओर ध्यान अवगत करवाया तथा इनके हनन से बचने की सलाह दी। इस अवसर पर संस्थान के शैक्षणिक सदस्य एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन डा. विकास शर्मा ने किया।

दो दिवसीय आमुखीकरण कार्यशाला

आधुनिक शिक्षा के साथ व्यक्तित्व विकास व कॅरियर निर्माण पर पूरा ध्यान

संस्थान के समाज कार्य विभाग के अन्तर्गत दो दिवसीय आमुखीकरण कार्यशाला का आयोजन 28 अगस्त को किया गया। कार्यशाला के मुख्य अतिथि दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी थे। कार्यक्रम में उन्होंने बताया कि आचार्य तुलसी, उनके शिष्य आचार्य महाप्रज्ञ व उनके शिष्य आचार्य महाश्रमण हमारे देश की गुरू-शिष्य परम्परा के श्रेष्ठ उदाहरण कहे जा सकते हैं। इन आचार्यों द्वारा संस्थापित और अनुशासित संस्थान के रूप में जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय है, जहां नैतिकता, जीवन मूल्यों और चरित्र निर्माण की शिक्षा दी जाती है। यहां आधुनिक शिक्षा के सभी विषयों के साथ विद्यार्थी के व्यक्तित्व विकास और उसके कॅरियर निर्माण पर भी पूरा ध्यान दिया जाता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये विभागाध्यक्ष डा. बिजेन्द्र प्रधान ने समाज कार्य विभाग के पाठ्यक्रमों, नियमों, गणवेश, अनुशासन, प्रार्थना व ध्यान में उपस्थिति, फील्ड वर्क आदि के बारे में विस्तार से बताया तथा जानकारी दी कि समाज कार्य विभाग के विद्यार्थी पढते-पढते ही अच्छी नौकरी ज्वॉइन कर लेते हैं। यहां प्लेसमेंट सेवा पर पूरा ध्यान दिया जाता है। अंत में डा. विकास शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया। डा. पुष्पा मिश्रा ने कार्यशाला के दो दिवसीय कार्यक्रमों की रूपरेखा प्रस्तुत की तथा कार्यक्रम का संचालन किया।

सामाजिक सुरक्षा व समाज कार्य पर व्याख्यान

संस्थान के समाज कार्य विभाग के तत्त्वावधान में 09 अक्टूबर को 'समाज कार्य व्यवसाय एवं सामाजिक सुरक्षा' पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। काशी विद्यापीठ वाराणसी के गांधी अध्ययन केन्द्र के निदेशक प्रो. रामप्रकाश द्विवेदी ने इस विषय पर विस्तृत जानकारी प्रदान करते हुये समाज कार्य, समाज कल्याण, सामाजिक सेवायें एवं सामाजिक सुरक्षा के आधारभूत अन्तर समझाया। उन्होंने कहा कि जिस छात्र ने नियमितता, संचार कौशल, व्यक्ति की पहचान जैसे गुणों को अपने भीतर विकसित कर लिया, उसकी सफलता निश्चित है। इस अवसर पर विद्यार्थियों ने अपनी जिज्ञासाओं को भी प्रस्तुत किया, जिन पर प्रो. द्विवेदी ने समाधान बताये। व्याख्यान का संचालन एवं आभर ज्ञापन विभागाध्यक्ष डा. बिजेन्द्र प्रधान ने किया। कार्यक्रम में डा. पुष्पा मिश्रा, डा. विकास शर्मा एवं अन्य संकाय सदस्य व विद्यार्थी उपस्थित रहे।

बाकलिया में किया विद्यार्थियों ने वृक्षारोपण

संस्थान के समाज कार्य विभाग के विद्यार्थियों ने निकटवर्ती ग्राम बाकलिया में 22 अगस्त को वृक्षारोपण कार्यक्रम में वहां के विद्यालयों के अध्यापकों, विद्यार्थियों एवं ग्रामवासियों के सहयोग से पौधे लगाये। समाज कार्य विभाग के विभागाध्यक्ष डा. बिजेन्द्र प्रधान के निर्देशानुसार आयोजित इस कार्यक्रम में बाकलिया के सरस्वती बाल विद्या मंदिर के गिरधारी राम, बाल विद्या मंदिर के आनन्द गोदारा व ओमप्रकाश के नेतृत्व में सभी शिक्षकों व विद्यार्थियों सहित 60 सहभागियों ने वृक्षारोपण किया। समाज कार्य विभाग की डा. पुष्पा मिश्रा व डा. विकास शर्मा की देखरेख में ललिता शर्मा, राधा शर्मा, आयुष जैन, अर्जुन, सुनिता, चित्रा निर्वाण आदि ने वन विभाग की दुजार नर्सरी से रूपसिंह के सहयोग से नीम, करंज, कनेर, अनार, मेहंदी आदि के पौधे प्राप्त करके लगाये।

शिक्षक दिवस : जीवन को बदल देते हैं गुरु

समाज कार्य विभाग में 05 सितम्बर को आयोजित शिक्षक दिवस कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये विभागाध्यक्ष डा. बिजेन्द्र प्रधान ने कहा कि जीवन में गुरू के तीन चरण होते हैं, जिनमें प्रथम माता-पिता, द्वितीय स्कूल शिक्षक और तृतीय आध्यात्मिक गुरु होते हैं। ये हमारा मार्गदर्शन करते हैं। डा. पुष्पा मिश्रा ने कहा कि गुरु जीवन को बदल देते हैं और व्यक्ति को महान् बनाते हैं। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अहिंसा एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. अनिल धर ने कहा कि जीवन के अंधकार को मिटाने का काम गुरु का होता है। कार्यक्रम में दीपक कुमार, प्रियासिंह, ममता, राधा, दीपक, ललिता, सुनीता, चित्र आदि ने भी गुरू-शिष्य के सम्बंधों पर अपने विचार व्यक्त किये। इस अवसर पर विद्यार्थियों ने शिक्षकों को उपहार प्रदान करके सम्मानित किया। कार्यक्रम का संचालन विद्यार्थियों द्वारा किया गया।

जोरावरपुरा में निकाली स्वच्छता जागरूकता रैली

संस्थान के समाज कार्य विभाग के तत्वावधान में 5 अक्टूबर को यहां जोरावरपुरा में स्वच्छता रैली निकाल कर लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा करने, साफ-सफाई के महत्व एवं एकल उपयोगी प्लास्टिक से मुक्ति का संदेश दिया। विभागाध्यक्ष डा. बिजेन्द्र प्रधान के निर्देशन में कनक श्याम विद्यालय के विद्यार्थियों ने इस स्वच्छता रैली में हिस्सा लिया। इस रैली में बालकों ने कचरे के समुचित निस्तारण, प्लास्टिक से होने वाली हानियों, सरकार द्वारा चलाये जा रहे स्वच्छता अभियान एवं सिंगल यूज प्लास्टिक से मुक्ति, अपने घर-मौहल्ले को स्वच्छ रखने आदि से सम्बंधित संदेश लिखी तख्तियों एवं नारों से लोगों को जागृत किया। रैली में समाज कार्य विभाग के विद्यार्थी चित्र दीपक, ललिता, सुनीता, राधा, आयुष, अर्जुन आदि ने अपना सहयोग प्रदान किया।

दुजार ग्राम विद्यालय में दी एड्स व एचआईवी से बचाव की जानकारी, रेड रिबन लगाये

संस्थान के समाज कार्य विभाग के विद्यार्थियों ने 29 नवम्बर को ग्राम दुजार के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में एक कार्यक्रम का आयोजन करके एचआईवी एवं एड्स के कारणों और उनसे बचाव के उपाय बताये। छात्र-छात्राओं ने विद्यालय के स्टाफ और विद्यार्थियों को रेड-रिबन लगाकर एड्स के प्रति जागृत किया। विभागाध्यक्ष डा. बिजेन्द्र प्रधान, डा. पुष्पा मिश्रा व डा. विकास शर्मा के निर्देशानुसार विश्व एड्स दिवस से पूर्व आयोजित इस कार्यक्रम की अध्यक्षता शिक्षक मदनलाल ने की। उन्होंने कहा कि पूरे विश्व में फैल रहे इस रोग का अभी तक बचाव ही उपाय है, इसलिये रोकथाम की तरफ ध्यान देना आवश्यक है। मुख्य अतिथि पवन ने कहा कि सतत जागरूकता और बचाव रखने वाले सदा सुरक्षित रहते हैं। आयुष जैन, ललिता, नवीन, प्रिया और दीपिका ने भी एचआईवी व एड्स के बारे में जानकारी देते हुये इसके लिये बरती जाने वाली सावधानियों के बारे में बताया।

बाकलिया ग्राम में विश्व वृद्ध दिवस मनाया

बुजुर्गों का सम्मान व सेवा की परम्परा फिर से कायम होनी जरूरी

निकटवर्तीग्राम बाकलिया में विश्व वृद्ध दिवस के अवसर पर 1 अक्टूबर को संस्थान के समाज कार्य विभाग के तत्त्वावधान में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम विभागाध्यक्ष डा. बिजेन्द्र प्रधान की अध्यक्षता में और सरपंच छोगाराम ठोलिया के मुख्य आतिथ्य में आयोजित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि ठोलिया ने कहा कि वृद्धजनों की सुध लेना अपने आप में बहुत बड़ी व सच्ची समाजसेवा है। वृद्धों के सम्मान की हमारे देश की परम्परा को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है। अध्यक्षता कर रहे डा. प्रधान ने विश्व वृद्ध दिवस के इतिहास व उद्देश्यों के बारे में जानकारी दी तथा सरकार और स्वयंसेवी संगठनों द्वारा चलाई जा रही वृद्धजन कल्याण से जुड़ी विभिन्न योजनाओं के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि परिवार में वृद्ध व्यक्ति के होने से बेटे-बहू और उनके बच्चों की देखभाल व सुरक्षा सुनिश्चित रहती है।

वृद्धों के लिये अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन

कार्यक्रम में वरिष्ठ नागरिक भंवरदास ने वृद्धों की समाज में स्थिति का आकलन प्रस्तुत किया और एक कहानी के माध्यम से सबको वृद्धों से परिवार को होने वाले लाभ बताये। उन्होंने बाकलिया गांव को प्लास्टिक मुक्त बनाने के लिये जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय के छात्रों का सहयोग अपेक्षित बताया। ग्रामवासी रामनिवास ने बुजुर्गों से अच्छे संस्कार व प्रेरणा लेने की आवश्यकता बताई। उन्होंने समाज कार्य विभाग के विद्यार्थियों की प्रेरणा से पिछले 7 सालों से गुटखा खाने का नशा छोड़ देने की जानकारी भी दी। प्रारम्भ में विभाग के सहायक आचार्य डा. विकास शर्मा ने भी वृद्धजनों की सेवा के लिये प्रेरित करते हुये स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के दौरान वृद्धजनों के लिये केला खाने की प्रतियोगिता और पोस्टर बनाने की प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया। प्रतियोगिता में प्रथम व द्वितीय स्थानों पर रहे व्यक्तियों को पुरस्कार प्रदान किया गया। कार्यक्रम में उपसरपंच, ग्रामसेवक, अटल सेवा केन्द्र के कर्मचारी एवं ग्रामीण महिला-पुरूष मौजूद रहे। कार्यक्रम का संचालन ललिता शर्मा व आयुष जैन ने किया।

अब नियमित शिक्षा के समान ही होगी दूरस्थ शिक्षा

सभी नियम, पाठ्यक्रम, प्रश्नपत्र, परीक्षा समय एक समान होंगे

संस्थान के दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा है कि वे दिन अब बीत गये जब दूरस्थ शिक्षा और नियमित शिक्षा में अन्तर हुआ करते थे। पहले दूरस्थ शिक्षा के विद्यार्थियों को केवल पाठ्यसामग्री भेज कर अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ ली जाती थी, प्रश्नपत्र और परीक्षा के लिये पूरी स्वतंत्रता रहती थी, लेकिन अब ऐसा नहीं रहा है। दूरस्थ शिक्षा ब्यूरो नई दिल्ली के नये रेगुलेशन के अनुसार जहां पर दोनों माध्यमों से अध्ययन करवाया जाता है, वहां प्रवेश से लेकर परीक्षा तक एक ही नियम लागू होंगे।

पाठ्यक्रम, प्रश्नपत्र, परीक्षा-समय आदि सब एक समान रहेंगे। दूरस्थ शिक्षा के सभी अध्ययन केन्द्रों पर विद्यार्थी सहायता केन्द्र होंगे, जो नियमित रूप से विद्यार्थियों की सहायता करेंगे। उन्होंने 20 नवम्बर को यहां दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के सदस्यों की एक बैठक में कहा कि जैन विश्वभारती संस्थान ने अपने विद्यार्थियों की अध्ययन सुविधा के लिये इन व्यवस्थाओं के साथ वेबसाईट पर वीडियो लेक्चर भी अपलोड कर रखे हैं, जिससे बड़ी संख्या में विद्यार्थी लाभान्वित हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि सभी को अब इन नये नियमों को ध्यान में रखते हुये दूरस्थ शिक्षा के विद्यार्थियों के हित में काम करना है। विद्यार्थियों को दी जाने वाली सेवा को उत्तम बनाये रखना सभी का कर्त्तव्य है। बैठक में पंकज भटनागर, डा. जेपी सिंह, आयुषी शर्मा, प्रगति जैन, मयंक जैन, ओमप्रकाश, करण गुर्जर आदि उपस्थित थे।

विश्व की सबसे प्राचीन एवं श्रेष्ठ है संस्कृत

संस्कृत दिवस

संस्थान के प्राकृत व संस्कृत विभाग के तत्त्वावधान में यहां सेमिनार हॉल में संस्कृत दिवस 19 अगस्त को समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में मुख्य वक्ता प्रो. दामोदर शास्त्री ने कहा कि हमारा देश हमारी संस्कृत भाषा व संस्कृति पर टिका हुआ है और पूरे विश्व को यह प्रकाश दे रही हैं। हमारी समस्त प्राचीन निधि संस्कृत साहित्य में ही है। ज्ञान व आचार की ऊर्जा संस्कृत के ग्रंथों से ही आती है। समारोह के मुख्य अतिथि दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने संस्कृत को विश्व की सबसे प्राचीन भाषा बताया तथा कहा कि संयुक्त राष्ट्र संघ ने माना है कि दुनिया की 97 प्रतिशत भाषायें संस्कृत से ही निकली है। संस्कृत स्पष्ट भाषा है और अपरिवर्तनीय भाषा है, इसी कारण अंतरिक्ष के लिये यह सबसे उपयुक्त भाषा साबित हुई है। उन्होंने बताया कि नासा में आने वाले वैज्ञानिकों को पहले दो सालों तक संस्कृत का अध्ययन कराया जाता है। संस्कृत का शब्दकोश विश्व का सबसे समृद्ध है। इंग्लेंड, आयरलेंड आदि में भी बच्चों को संस्कृत सिखाई जाती है, इससे उनका मानसिक व बौद्धिक स्तर तीक्ष्ण रहता है। अहिंसा एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. अनिल धर ने कहा कि संस्कृत सबसे समृद्ध भाषा है, जिस पर हमें गर्व होना चाहिये। यह सबसे पुरानी और पूर्ण भाषा है। कार्यक्रम के प्रारम्भ में मुमुक्षु बहिनों ने संस्कृत में मंगलाचरण किया एवं गीतिका प्रस्तुत की।

कार्यक्रम के अंत में सत्यनारायण भारद्वाज ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम में डा. योगेश जैन, डा. जुगलकिशोर दाधीच, डॉ. सुनीता इंदौरिया, मीनाक्षी मारू अदि उपस्थित थे।

अन्तर्राष्ट्रीय विज्ञान सम्मेलन

संस्थान के 4 विद्वानों का सम्मान

आचार्यश्री 108 शांतिसागर छाणी समाधि हीरक महोत्सव समिति, ज्ञानसागर साइंस फाउण्डेशन, 1008 चन्द्रप्रभु दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, देहरा-तिजारा एवं जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं इन चारों संस्थानों के सहयोग से 3-4 नवम्बर को देहरा-तिजारा (अलवर) राजस्थान में International Conference Jainism : Scientific Foundations विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें देश विदेश के अनेक विद्वानों ने भाग लिया और जैन विद्या के वैज्ञानिक पक्षों को रेखांकित किया।

इस संगोष्ठी में जैन विश्वभारती संस्थान के प्रतिनिधि के रूप में डॉ. समणी प्रतिभाप्रज्ञा, डॉ. समणी विपुलप्रज्ञा, प्रो. दामोदर शास्त्री (प्राकृत - संस्कृत विभागाध्यक्ष) एवं डॉ. सुनीता इन्दोरिया (सहायक आचार्य जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन विभाग) ने भाग लिया तथा अपने शोधपत्रों का वाचन किया।

प्रो. दामोदर शास्त्री ने 'जैन आगमों व पुराणों में वैज्ञानिक कौशल के दर्शन', डॉ. समणी प्रतिभाप्रज्ञा ने 'Why Preksha Meditation Scienticized डॉ. समणी विपुलप्रज्ञा ने 'Balancing Science and Spirituality : Emotional Healing through Preksha Meditation एवं डॉ सुनीता इन्दोरिया ने 'जैन परम्परा में अनशन तप और उसके वैज्ञानिक लाभ' विषय पर पत्र वाचन किया। डॉ. समणी प्रतिभाप्रज्ञा ने इस संगोष्ठी में एक सत्र की अध्यक्षता भी की। संगोष्ठी में उत्कृष्ट शोधपत्र आदि के आधार पर आयोजकों ने इन चारों विद्वानों का विशेष सम्मान भी किया।

जैनविद्या में शोध के लिये डा. समणी संगीत प्रज्ञा को वैदुष्योत्तमा उपाधि

सागवाड़ा में दिया गया आचार्य विमलसागर शोधानुसंधान पुरस्कार

संस्थान के प्राकृत व संस्कृत विभाग की डा. समणी संगीत प्रज्ञा को 28 नवम्बर को सागवाड़ा (डूंगरपुर) में चतुर्थ पट्टाधीश आचार्य सुनीलसागर महाराज के सान्निध्य में आयोजित समारोह में वात्सल्यरत्नाकर आचार्य विमलसागर शोधानुसंधान पुरस्कार से नवाजा जाकर उन्हें ''वैदुष्योत्तमा'' की उपाधि से अलंकृत किया गया।

उन्हें यह सम्मान आचार्य आदिसागर अंकलीकर अन्तर्राष्ट्रीय जागृति मंच मुम्बई की ओर से सागवाड़ा महिला जैन समाज की अध्यक्ष समाजसेवी प्रेरणा शाह एवं प्राच्य जैन संस्कृति एवं शोध संस्थान की अध्यक्ष डा. मनीषा जैन द्वारा प्रदान किया गया। उन्हें जैनागमों पर शोध पर अनुसंधान करने व करवाने में अनवरत संलग्न रहते हुये जैन विद्या के उन्नयन में विशेष योगदान करने के लिये यह पुरस्कार प्रदान किया गया है, जिसमें डा. मनीषा जैन लिखित शोधग्रंथ '' आचार्य कुंदकुंद कृत दसभक्ति का विश्लेषणात्मक अध्ययन'' में शोध-मार्गदर्शन का विशेष श्रेय रहा है।

12 दिवसीय जैन स्कॉलर कार्यशाला में प्राकृत व संस्कृत विभाग की आचार्यों द्वारा अध्यापन

तेरापंथ जैन स्कॉलर कार्यशाला के तृतीय बैच के द्वितीय सेमेस्टर की 12 दिवसीय कार्यशाला का समापन 11 नवम्बर को किया गया। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के तत्त्वावधान में प्राकृत भाषा के पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से संचालित की जा रही इस कार्यशाला में देश भर से जूनियर स्कॉलर्स व सीनियर स्कॉलर्स ने भाग लिया। इस जैन स्कॉलर परियोजना में प्राकृत, संस्कृत, कर्मग्रंथ और ज्ञान मीमांसा विषयों का अध्यापन करवाया जाता है। जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय के प्राकृत व संस्कृत विभाग की पूर्व विभागाध्यक्ष डा. समणी संगीतप्रज्ञा ने इस कार्यशाला के सम्भागियों को प्राकृत एवं संस्कृत विषयों का अध्यापन करवाया। वे पिछले 6 वर्षों से जैन स्कॉलर्स को पढा रहे हैं। उनके अलावा डा. मंजू नाहटा ने ज्ञान मीमांसा, सुषमा आंचलिया ने संस्कृत, विकास गर्ग ने कर्म मीमांसा और राजू दूगड़ ने प्राकृत व संस्कृत विषयों का अध्यापन कार्य करवाया।

परियोजना की सहनिर्देशिका कनक बरमेचा ने बताया कि जूनियर स्कॉलर में 26 बहिनों एवं 5 भाईयों ने भाग लेकर अपने अध्ययन में वृद्धि की।

एंटी रैगिंग सेल व एंटी रैगिंग स्क्वाड की बैठक में रैगिंग रोकने पर चर्चा

संस्थान में भयहीन वातावरण व नव विद्यार्थियों के स्वागत की परम्परा

कुलसचिव प्रो. रमेश कुमार मेहता ने विश्वविद्यालय की एंटी रैगिंग सेल एवं एंटी रैगिंग स्क्वाड की बैठक में 9 सितम्बर को कहा कि हमें नव प्रवेशित विद्यार्थियों के लिये हर समय सजग और सावधान रहना होगा, ताकि कहीं भी कोई घटना नहीं घट सके। उन्होंने कहा कि जैन विश्वभारती संस्थान में गत सत्र में रैगिंग जैसा कोई मामला सामने नहीं आया। यहां अध्ययनरत विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ-साथ आचरण सुधार के लिये जो चरित्र, मानवीय मूल्यों और नैतिकता का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है, उनके कारण यहां प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों का पुराने विद्यार्थी स्नेह भाव से स्वागत करते हैं और रैगिंग जैसी कोई घटना कभी नहीं होती। एंटी रैगिंग सेल के संयोजक प्रो. बीएल जैन ने बताया कि एंटी रैगिंग के लिये विद्यार्थियों को मानसिक रूप से मजबूत बनाने, उनमें भयहीनता और सहज व्यवहार पैदा करने के लिये विविध प्रयास किये जायेंगे। पूरे विश्वविद्यालय परिसर में एंटी रैगिंग के पोस्टर लगाये गये हैं, जिनमें सेल के नम्बर हैं, उन पर विद्यार्थी बेझिझक शिकायत कर सकता है और अपनी बात बता सकता है।

स्क्वाड करेगी समय-समय पर निरीक्षण

बैठक में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) द्वारा दिये गये दिशानिर्देशों पर चर्चा की गई तथा बताया गया कि विश्वविद्यालय के सम्पूर्ण परिसर में होस्टल, कॉलज, लाईब्रेरी, कैंटीन, प्रयोगशालाओं आदि में एंटी रैगिंग सम्बंधी पोस्टर्स लगाये रहे हैं तथा उन पर एंटी रैगिंग सेल के सदस्यों के नम्बर लगाये गये हैं। परिसर में सभी स्थानों पर सीसी टीवी कैमरे लगे हुये हैं तथा अन्य सिक्योरिटी भी उपलब्ध है, जिससे ऐसी कोई घटना पर सक्षम नियंत्रण कायम रह पाता है। एंटी रैगिंग स्क्वाड द्वारा सभी विभागों और अन्य स्थानों पर समय-समय पर निरीक्षण किया जायेगा। बैठक में तय किया गया कि समय-समय पर विश्वविद्यालय में रैगिंग के सम्बंध में कार्यशालायें, सेमिनार आदि आयोजित किये जाकर विद्यार्थियों को जागृत किया जायेगा तथा उन्हें इस सम्बंध में नियमों व दंड व्यवस्था आदि की जानकारी दी जायेगी। उनसे निरन्तर सम्पर्क किया जाकर सुझाव, शिकायतें आदि प्राप्त की जायेगी। बैठक में डा. बिजेन्द्र प्रधान, डा. आभासिंह, डा. प्रगति भटनागर, विजय कुमार शर्मा, गीता पूनिया, विद्यार्थियों में से एकता जोशी, रेणू गुर्जर व दक्षता कोठारी एवं अभिभावक राजेश नाहटा भी उपस्थित रहे।

छात्राओं को बताये एंटी रैगिंग के कायदे व गतिविधियां

आचार्य कालू कालू कन्या महाविद्यालय में 18 सितम्बर को छात्राओं की एक बैठक एंटी रैगिंग सेल के संयोजक प्रो. बीएल जैन ने बताया कि विश्वविद्यालय में गठित एंटी रैगिंग सेल के सदस्य पूरे वर्ष भर अपनी गतिविधियों का संचालन करते हैं तथा छात्राओं में जागरूकता पैदा करने, उनसे ऑनलाईन फार्म भरवाने, उन्हें एंटी रैगिंग फिल्मों का प्रदर्शन करके दिखाने, पोस्टर लगाकर कर जागरूकता व सूचनायें देने, समय-समय पर निरीक्षण करने आदि का कार्य करते हैं। इस सेल में कुलपति, संकाय सदस्य, अभिभावक एवं छात्रायें भी शामिल हैं। बैठक में एंटी रैगिंग स्क्वाड के संयोजक रमेश कुमार मेहता ने बताया कि यह स्क्वाड विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय के विविध स्थानों पर जाकर अचानक निरीक्षण करती है। इस बात का पूरा ध्यान रखा जाता है कि छात्राओं में किसी भी तरह के भेदभाव की भावना नहीं पनपने पाये। उन्होंने बताया कि यहां सभी विद्यार्थियों में परस्पर प्रेम, सौहार्द्र, मिलनसारिता, सामंजस्य के भाव रहते हैं। आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की एंटी रैगिंग सेल की सदस्य डा. प्रगति भटनागर ने अंत में आभार ज्ञापित किया। बैठक में एंटी रैगिंग सेल एवं स्क्वाड के कुलसचिव रमेश कुमार मेहता, प्रो. बीएल जैन, डा. बिजेन्द्र प्रधान, डा. विजय कुमार शर्मा आदि के अलावा महाविद्यालय के सभी शिक्षक एवं महाविद्यालय में अध्ययनरत बीए, बीकॉम, बीएससी की छात्रायें उपस्थित रही। एंटी रैगिंग सेल एवं स्क्वाड के संयोजक एवं सदस्यों ने इसके अलावा विश्वविद्यालय के अहिंसा एवं शांति विभाग, योग एवं प्रेक्षाध्यान, संस्कृत व प्राकृत विभाग, जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म व दर्शन विभाग, अंग्रेजी विभाग, समाज कार्य विभाग की बैठक लेकर विद्यार्थियों को एंटी रेंगिंग सेल व स्क्वाड की गतिविधियों और तत्सम्बंधी नियमों आदि की जानकारी दी।

छात्राध्यापिकाओं को दी एंटी रैगिंग सेल की जानकारी

संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) के शिक्षा विभाग में एंटी रैगिंग सेल एवं एंटी रैगिंग स्क्वाड की ओर से समस्त छात्राध्यापिकाओं को एक बैठक रखी जाकर उन्हें एंटी रैगिंग से जुड़े विश्वविद्यालय के सदस्यों के मोबाईल नम्बर एवं नियमों से अवगत करवाया गया। 16 सितम्बर को हुई बैठक में समस्त बी.एड., एम.एड., बी.ए.-बी.एड., बी.एससी.-बी.एड. की छात्राओं ने भाग लिया। बैठक में बताया गया कि इस सम्बंध में गठित एंटी रैगिंग सेल की कमेटी के अध्यक्ष कुलपति प्रो. बी.आर दूगड़, संयोजक प्रो. बीएल जैन व एंटी रैगिंग स्क्वाड के संयोजक कुलसचिव रमेश कुमार मेहता है। बैठक में एंटी रैगिंग के सम्बंध में की जाने वाली गतिविधियों, कार्य और प्रारूप के बारे में बताया गया। संयोजक प्रो. जैन ने बैठक में बताया कि विद्यार्थियों को परस्पर सहयोग, समन्वय, सौहार्द, प्रेम पूर्ण व्यवहार, शालीनता और विनम्रता से रहना चाहिये। कुलसचिव मेहता ने कहा कि समता, अनुशासन व मूल्यों को ध्यान में रखते हुये ही सबके साथ व्यवहार करना चाहिये। उन्होंने विद्यार्थियों की इस बात के लिये सराहना की, कि यहां पर जो माहौल है वह मूल्यपरक और अनुशासित है, सबके लिये गर्व की बात है। उन्होंने सभी विद्यार्थियों से ऑनलाईन एंटी रैगिंग फार्म भरने और उनका प्रिंट आउट एंटी रैगिंग सेल की सदस्या डा. आभासिंह के पास जमा करवाने के लिये कहा तथा बताया कि सेल में जो छात्रा प्रतिनिधि है, उसका सहयोग भी छात्रायें ले सकती हैं।

शिक्षक दिवस

विद्यार्थी को नये जीवन के लिये तैयार करते हैं अध्यापक- मेहता

संस्थान के महाप्रज्ञ महाश्रमण ऑडिटोरियम में शिक्षा विभाग द्वारा 6 सितम्बर को आयोजित शिक्षक दिवस समारोह में कुलसचिव रमेश कुमार मेहता ने कहा है कि अध्यापक का दायित्व माता-पिता से कहीं अधिक होता है। वे बालक को उनके भावी जीवन के लिये निखारते हैं, जैसे एक स्वर्णकार सोने को नई रंगत व नया स्वरूप देता है, वैसे ही अध्यापक अपने विद्यार्थी को नये जीवन के लिये तैयार करता है। उन्होंने इस अवसर पर राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्द द्वारा प्रेषित संदेश का वाचन भी किया। कार्यक्रम में दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने भारतीय परम्परा में गुरू-शिष्य की श्रेष्ठ परम्परा के बारे में बताते हुये कहा कि आचार्य तुलसी व आचार्य महाप्रज्ञ इस परम्परा के आधुनिक उदाहरण कहे जा सकते हैं। विताधिकारी आरके जैन ने अध्यापक को विद्यार्थी के लिये आइडियल बताते हुये कहा कि अध्यापक को उसी के अनुरूप आदर्श व्यवहार करना और आदर्श बनना चाहिये। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा प्राप्त संदेश का वाचन कर सुनाया। हॉस्टल वार्डन गीता पूनिया व विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने भी विचार व्यक्त किये।

सांस्कृतिक प्रस्तुतियां

कार्यक्रम में छात्राध्यापिकाओं ने अपने शिक्षकों के लिये म्यूजिकल चेयर और एकाभिनय प्रतियोगितायें आयोजित की। म्युजिकल चेयर में डा. आभा सिंह विजेता रही और एकाभिनय में डा. गिरीराज भोजक विजेता रहे। दोनों विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किये गये। पूनम एवं समूह ने कार्यक्रम में सभी अध्यापकों की छवि की पीपीटी बनाकर उन पर फिट होने वालों गीतों के साथ नृत्य प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में ममता, सरिता चौधरी, सरिता शर्मा, आशा, कोमल शर्मा, मोना, सुनिता चौधरी, मेहराज व ललिता ने एकल नृत्य प्रस्तुत किये। गुनगुन एवं समूह, मानसी एवं समूह तथा ममता व नेहा ने सामुहिक नृत्य पेश किये। कार्यक्रम का संचालन सुमन सोमरवाल व मोनिका ने किया।

हिन्दी दिवस

हिन्दी दिवस के अवसर पर निबंध व पोस्टर प्रतियोगितायें आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग के अन्तर्गत 14 सितम्बर को हिन्दी दिवस के अवसर पर पोस्टर प्रतियोगिता एवं निबंध लेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इस अवसर पर एक समारोह का आयोजन भी किया गया, जिसमें विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने कहा कि शिक्षक ही भाषा को बचाने का काम करते हैं। वे भाषा के संरक्षण, संवर्द्धन व हस्तांतरण में महत्वपूर्ण भमिका निभाते हैं। हिन्दी भाषा के शब्दकोश को बढावा देने, भाषा के शुद्धीकरण पर ध्यान देने, अभिव्यक्ति के कौशल को बढावा देने और पाठ्यपुस्तकों में आये कठिन शब्दों के अर्थ को सरल व स्पष्ट बनाने पर प्रत्येक शिक्षक को ध्यान देना चाहिये।

कार्यक्रम प्रभारी डा. सरोज राय ने हिन्दी को अपने रोजमर्रा के कामकाज की भाषा बनाने और व्यवहार की भाषा के रूप में अपनाने पर बल दिया। कार्यक्रम में डा. मनीष भटनागर, डा. भाबाग्रही प्रधान, डा. विष्णु कुमार, डा. अमिता जैन, डा. गिरधारी लाल शर्मा, डा. आभासिंह, डा. गिरीराज भोजक आदि एवं छात्राध्यापिकायें उपस्थित रही।

राष्ट्रीय एकता दिवस पर 'रन फॉर यूनिटी' का आयोजन

लौह-पुरूष सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती के अवसर पर 30 अक्टूबर को संस्थान के शिक्षा विभाग के तत्वावधान में "राष्ट्रीय एकता दिवस" मनाया गया तथा इस अवसर पर "रन फॉर यूनिटी" का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में डा. मनीष भटनागर ने अखंड भारत के निर्माण में सरदार पटेल के योगदान का विवरण प्रस्तुत किया। डा. भाबाग्रही प्रधान ने कार्यक्रम में सरदार पटेल के जीवन व कर्तृत्व पर प्रकाश डाला। डा. गिरीराज भोजक ने सरदार पटेल के विचारों और

सिद्धांतों को अपनाने पर बल दिया। कार्यक्रम में सभी विद्यार्थियों को राष्ट्रीय एकता की शपथ ग्रहण करवाई गई। अंत में डा. गिरधारी लाल शर्मा ने आभार ज्ञापित किया। इसके पश्चात डा. आभासिह के नेतृत्व में समस्त संकाय सदस्यों एवं छात्राध्यापिकाओं ने राष्ट्रीय एकता दौड़ (रन फॉर यूनिटी) का आयोजन किया। इस रन फॉर यूनिटी को डा. मनीष भटनागर ने हरी झंडी दिखा कर रवाना किया। इसमें जसोदा प्रजापति प्रथम, जसोदा सिंह द्वितीय एवं जेता देवी तृतीय स्थान पर रही।

जन्माष्टमी पर कार्यक्रम आयोजित

कृष्ण का जीवन सबके लिये प्रेरणाप्रद- प्रो. जैन

संस्थान के शिक्षा विभाग एवं समाज कार्य विभाग के तत्त्वावधान में 24 अगस्त को अलग-अलग कार्यक्रम आयोजित किये तथा जन्माष्टमी का पर्व मनाया गया। शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये कृष्ण जन्माष्टमी को आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, नैतिक व चारित्रिक शिक्षा देने वाला पर्व बताते हुये कहा कि कृष्ण के जीवन से बहुत सारी प्रेरणायें प्राप्त की जा सकती हैं। डा. गिरीराज भोजक, कार्यक्रम प्रभारी डा. सरोज राय, तथा दुर्गा, नीरज रैवाड़, सुरक्षा जैन, निरमा विश्नोई आदि ने भजन व विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम में डा. मनीष भटनागर, डा. भाबाग्रही प्रधान, डा. विष्णु कुमार, डा. अमिता जैन, डा. गिरधारीलाल शर्मा, रवि कुमार, राजश्री शर्मा आदि उपस्थित थे।

समाज कार्य विभाग के विद्यार्थियों व शोधार्थियों ने इस अवसर पर भजनों की प्रस्तुति दी और कृष्ण के जीवन की विविध घटनाओं-लीलाओं के बारे में बताया। विभागाध्यक्ष बिजेन्द्र प्रधान ने कृष्ण को आधुनिक भारत के लिये भी अनुकरणीय बताया। डा. पुष्पा मिश्रा ने समाज कार्य सम्बंधी मूल्यों के लिये भी कृष्ण के जीवन को आदर्श बताया और उनसे प्रेरणा लेने की आवश्यकता बताई।

गांधी जयंती मनाई

संस्थान के शिक्षा विभाग में गांधी जयंती के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने देश के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, आर्थिक, शैक्षिक आदि क्षेत्रों में महात्मा गांधी द्वारा दिये गये योगदान के बारे में बताया तथा उनके द्वारा बुनियादी शिक्षा, नई शिक्षा के नामों से प्रस्तुत किये गये राष्ट्रीय शिक्षा कार्यक्रम में व्यक्ति के मस्तिष्क, शरीर और आत्मा तीनों के समन्वित विकास की राह दिखाई। शिक्षा में स्वरोजगार के लिये दस्तकारी के कार्यों का समावेश किया गया। हस्तशिल्प में प्रत्येक विद्यार्थी के लिये लकड़ी का काम, मिट्टी का काम, कागज की वस्तुयें बनाने, घरेलु सामग्री का निर्माण, बागवानी कार्य करना, योगा व व्यायाम सम्बंधी कार्य, संगीत की शिक्षा आदि के लिये प्रेरित किया गया। इस अवसर पर छात्राओं को हस्तशिल्प निर्माण कला सिखाई गई और उनसे अनेक तरह के हस्तशिल्प बनवाये गये।

कार्यक्रम में डा. मनीषा जैन व डा. गिरीराज भोजक के नेतृत्व में प्रश्नोत्तरी कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें मनीषा, माधुरी पारीक, हिमांशी, चन्द्रकांता, प्रियंका, भव्या, आमना, शकीला, दुर्गा आदि ने भाग लिया। कार्यक्रम का संचालन निधि शर्मा ने किया।

दीपोत्सव कार्यक्रम आयोजित

दीपावली पर्व वैज्ञानिक महत्त्व रखता है- डा. राय

संस्थान के शिक्षा विभाग में दीपावली अवकाश से पूर्व दीपोत्सव कार्यक्रम का आयोजन 22 अक्टूबर को किया गया। कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने कहा कि दीपावली का पर्व आत्मा के घोर अंधकार को मिटाने का पर्व, सामाजिक उत्सव, हर्षोल्लास व उमंग का पर्व है। डा. सरोज राय ने दीपावली मनाने के वैज्ञानिक महत्व को समझाया और इस त्यौहार के विज्ञान पर आधारित बिन्दुओं का खुलासा करते हुये मिट्टी के दीये जलाने की सीख दी। कार्यक्रम में माधुरी पारीक, रेखा कंवर, पिंकी राठौड़, शकीला आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम के प्रारम्भ में लक्ष्मी व गणेश की आरती की गई। संचालन डा. अमिता जैन ने किया।

गुरू पूर्णिमा पर्व मनाया

गुरू पूर्णिमा पर्व पर भारतीय संस्कृति में गुरू के सम्मान को किया याद

शिक्षा विभाग के आयोजित कार्यक्रम में डा. गिरीराज भोजक ने गुरु पूर्णिमा मनाये जाने के कारणों पर प्रकाश डाला तथा कहा कि अगर गुरु का सम्मान कम होता है तो यह पूरे समाज के लिये अवमूल्यनकारी होता है। इस अवसर पर छात्राध्यापिकाओं ने अपने गुरुजनों का तिलकार्चन करके सम्मान किया। छात्राओं ने भी गुरु पूर्णिमा और गुरु पद की महता पर विचार भी व्यक्त किये। कार्यक्रम की अध्यक्षता डा. मनीष भटनागर ने की। कार्यक्रम का शुभारम्भ मां सरस्वती की पूजा के साथ किया गया और अंत में डा. आभा सिंह ने आभार ज्ञापित किया।

प्रसार भाषण व्याख्यान

संस्थान के शिक्षा विभाग में 10 जुलाई को प्रसार भाषणमाला के अन्तर्गत दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने जीवन व्यवहार की साधना और सफलता के सूत्रों पर विस्तार से प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि जीवन में उन्नति के लिये संस्कारों की अहम भूमिका होती है। अच्छे संस्कारों से ही जीवन को सफल एवं सुचारू रूप से चलाया जा सकता है। संस्कार-विहीन शिक्षा निरर्थक होती है। उन्होंने प्रत्येक कार्य को सोच-समझ कर करने तथा सदैव खुश रहने के सूत्र भी बताये तथा कहा कि हमेशा हंसते हुये रहना चाहिये। हंसने का गुण जीवन के लिये रामबाण होता है। भाषणमाला के प्रारम्भ में विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। अंत में डा. अमिता जैन ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में डा. मनीष भटनागर, राजश्री, डा. गिरीराज भोजक, डा. सरोज राय, डा. भाबाग्रही प्रधान आदि संकाय सदस्य एवं छात्राध्यापिकायें उपस्थित थीं।

आचार्य महाप्रज्ञ जन्मशताब्दी समारोह पर प्रबुद्ध नागरिक सम्मेलन आयोजित

विश्वविद्यालय नॉलेज सिटी के रूप में नहीं विजडम सिटी के रूप में विकसित हो

संस्थान में आचार्य महाप्रज्ञ जन्मशताब्दी समारोह के अन्तर्गत आयोजित प्रबुद्ध नागरिक सम्मेलन दिनांक 03 जुलाई को आयोजित किया गया, जिसमें अध्यक्षता करते हुये कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने बताया कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ इस विश्वविद्यालय के द्वितीय अनुशास्ता थे और उनका कहना था कि यह विश्वविद्यालय नॉलेज सिटी के रूप में नहीं बल्कि इसे विजडम सिटी के रूप में विकसित किया जाना है। वे विश्वविद्यालय में ज्ञान के बजाय विवेक के विकास पर अधिक जोर देते थे। उन्होंने कहा कि इस जन्मशताब्दी वर्ष में इस विश्वविद्यालय में आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल कॉलेज आफ नेचुरोपैथी एंड योग का शुभारम्भ किया जायेगा तथा अगले सत्र से उसमें पाठ्यक्रम प्रारम्भ कर दिये जायेंगे। उन्होंने कहा, नेचुरोपैथी के साथ पंचकर्म आयुर्वेद भी शुरू करेंगे। मेडिकल कॉलेज में औषधालय बनेगा, रिसोर्ट बनेगा, जिसमें आम नागरिक भी सुविधाओं का लाभ उठा सकेंगे।

सीए एवं सीएस की तैयारी के लिये कोचिंग शुरू होगी

प्रो. दूगड़ ने जन्मशताब्दी वर्ष के प्रस्तावित कार्यक्रमों की विस्तार से जानकारी दी। कुलपति ने बताया कि विश्वविद्यालय में इसी साल स्किल बेस्ड कोर्स शुरू किये जायेंगे। यहां सीए और सीएस की तैयारी के लिये कोचिंग शुरू की जायेगी। उन्होंने विश्वविद्यालय को 12-बी की सुविधा मिलने, यूजीसी से प्रशंसा मिलने, नेक टीम के मूल्यांकन में बेहतरीन व्यवस्थायें पाये जाने पर बी-प्लस प्रदान किये जाने, विविध क्लबों का गठन करके उन्हें आर्थिक सहयोग दिये जाने, वाई-फाई, कम्प्यूटर, इंफ्रास्ट्रक्चर आदि के बारे में जानकारी देते हुये कहा कि भले ही यह एक छोटा विश्वविद्यालय हो, लेकिन सुविधाओं की दृष्टि से यह अव्वल है। उन्होंने महिलाओं के स्वरोजगार के लिये चलाये जा रहे एटीडीसी के सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र के बारे में जानकारी भी दी।

नागरिकों ने प्रस्तुत किये विभिन्न सुझाव

प्रबुद्ध नागरिक सम्मेलन में आये नागरिकों ने जन्मशताब्दी वर्ष व विश्वविद्यालय के विकास के सम्बंध में अनेक सुझाव दिये। वरिष्ठ साहित्यकार रामकुमार तिवाड़ी ने विश्वविद्यालय का एक केन्द्र शहर के अन्दर स्थापित किये जाने की आवश्यकता बताई। भारत विकास परिषद के अध्यक्ष पुरूषोत्तम सोनी ने एम.कॉम इंग्लिश मीडियम में शुरू करने का सुझाव दिया। प्रसिद्ध लेखक पं. परमानन्द शर्मा ने आ.म. शताब्दी वर्ष के दौरान आयुर्वेद के पंचकर्म के लिये महाविद्यालय खोलने का सुझाव दिया। विप्र फाउंडेशन के तहसील अध्यक्ष जगदीश प्रसाद पारीक ने महिला स्वयंसेवी सहायता समूहों की महिलाओं का सम्मेलन रखकर उन्हें यहां चल रहे सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र के बारे में जानकारी दी जाकर प्रेरित करने की सलाह दी। राजेश विद्रोही ने दार्शनिकों की कार्यशाला एवं लेखक सम्मेलन के आयोजन का सुझाव दिया। नीतेश माथुर, ललित वर्मा, सुमित्रा आर्य, विजयकुमार भोजक, शांतिलाल बैद, नारायण लाल शर्मा आदि ने भी अपनी बात रखी।

प्राकृत व जैन विद्या विषयों में निःशुल्क शिक्षा-सुविधायें

विश्वविद्यालय के दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के निदेशक डा. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने प्रारम्भ में विश्वविद्यालय का परिचय प्रस्तुत करते हुये कहा कि प्राकृत व संस्कृत तथा जैनोलोजी विभागों में विद्यार्थियों के लिये समस्त सुविधायें निःशुल्क उपलब्ध हैं। कार्यक्रम के प्रारम्भ में अहिंसा एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष डा. जुगल किशोर दाधीच ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। अंत में कुलसचिव रमेश कुमार मेहता ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

सम्मेलन में जैन विश्व भारती के पूर्व न्यासी भागचंद बरड़िया, शहर काजी सैयद मो. अयूब अशरफी, पूर्व प्रधान जगन्नाथ बुरड़क, रमेश सिंह राठौड़, गिरधर चौहान, नरेन्द्र भोजक, मोहनसिंह जोधा, विकास जैन, गौपुत्र सेना के अध्यक्ष रामेश्वर जाट, मोईनुद्दीन पडिहार, पार्षद मोहनसिंह चौहान, रेणु कोचर, अंजना शर्मा, टोडरमल प्रजापत, सुमित्रा आर्य, रघुवीर सिंह राठौड़, राधेश्याम शर्मा, सुशील पीपलवा, माली समाज के अध्यक्ष मुरली मनोहर सैनी, नजीर खां मोयल, अभय नारायण शर्मा, रमेश चौधरी, किरण बरमेचा, राजदेवी सिंघी, सुनीता बैद, राजश्री भूतोडिया, मीनू बोथरा, शर्मिला, राजेन्द्र माथुर, शांतिलाल फुलवारिया, आलोक कोठारी, सुभाष शर्मा, सलीमखां मोयल, कैलाश घोड़ेला, देवाराम पटेल आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन डा. वीरेन्द्र भाटी मंगल ने किया।

आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी वर्ष के अन्तर्गत आंतरिक व्याख्यानमाला आयोजित

साधना और आचार से बनते हैं शब्द शक्तिशाली- कुलपति प्रो. अग्निहोत्री

केन्द्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश के कुलपति प्रो. केसी अग्निहोत्री ने कहा है कि किसी की कही हुई बात का किसी पर कितना असर होता है, यह उसकी शब्दों की साधना पर निर्भर करता है। एक ही बात अनेक लोगों द्वारा कहे जाने पर भी प्रत्येक का अलग-अलग असर इसी कारण होता है। कही गई बात का प्रभाव शब्द की साधना करने से ही संभव होता है। साधना से हर अक्षर मंत्र बन सकता है। जो भी कहा जावे, उसे पहले आचार में लाने की आश्यकता है, तभी वह बात असर पैदा करती है। आचार्य महाप्रज्ञ का ओज उनकी साधना के कारण था। महापुरूष साधना करके अपनी वाणी में शक्ति का संचार कर देते हैं। अपनी वाणी के अनुकूल अपना जीवन बनाना पड़ता है, तभी महापुरुषों के शब्द शक्तिशाली बन पाते हैं। यह बात उन्होंने यहां आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी समारोह के अन्तर्गत 30 सितम्बर को आयोजित आन्तरिक व्याख्यानमाला में मुख्य वक्ता के रूप में सम्बोधित करते हुये कही। अग्निहोत्री ने महाप्रज्ञ की पदयात्राओं, वंचितों के प्रति चिंतन, उन्हें आजीविका का प्रशिक्षण दिये जाने, आमजनता से उनका जुड़ाव और दर्शन की गुत्थियों के बजाये सरल भाषा के प्रयोग आदि के बारे में बताते हुये कहा कि महाप्रज्ञ की सोच आम आदमी से जुड़ी हुई थी और वे लोगों के भीतर छिपी हुई ताकत का उन्नयन करना चाहते थे।

अनुभूत वाणी करती है दिल पर असर

आंतरिक व्याख्यानमाला कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये जैविभा विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा कि केवल अनुभूत वाणी ही दिल पर असर करती है। महाप्रज्ञ ने वंचितों को अहिंसा प्रशिक्षण ही नहीं बल्कि आजीविका प्रशिक्षण की व्यवस्था शुरू की थी। प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, अहिंसा समवाय आदि के द्वारा उन्होंने आम जनता को जोड़ने का प्रयास किया और शब्द की साधना के कारण उन्होंने जो भी कहा, वह घटित हो जाता था। उन्होंने शब्दों की क्लिष्टता को छोड़कर अपने जीवन के उत्तरार्द्ध में शब्दों की सरलता को अपनाया था। उनके द्वारा प्रतिपादित सापेक्ष अर्थशास्त्र का काम अभी अधूरा है, जिसे पूरा किया जाना आवश्यक है। उन्होंने बताया कि महाप्रज्ञ का उद्देश्य सबको ज्ञानी बनाना था, लोगों को बुद्धिमत्ता देना था, केवल आजीविका प्रशिक्षण देना ही नहीं।

संस्कृति व मूल्यों के लिये काम कर रहे विश्वविद्यालयों को विशेष श्रेणी मिले

प्रो. दूगड़ ने बताया कि देश भर में जो विश्वविद्यालय लोगों को ज्ञानी बनाने के लिये कार्य कर रहे हैं और बिना लाभ के भारतीय संस्कृति और मूल्यों के लिये काम कर रहे हैं, उन्हें सरकार को विशेष श्रेणी में रखना चाहिये। प्रो. समणी ऋजुप्रज्ञा ने अपने स्वागत वक्तव्य में महाप्रज्ञ को अन्तर्प्रज्ञा जागृत व्यक्ति बताते हुये उनके द्वारा रचित साहित्य की विविधता को बताते हुये कहा कि उन्होंने समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, विज्ञान, अध्यात्म आदि समस्त विषयों पर नई बातें बताई और नई जानकारियां दी।

आचार्य महाप्रज्ञ जन्मशताब्दी समारोह समिति के अध्यक्ष प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने जन्मशताब्दी वर्ष के अन्तर्गत जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय द्वारा आयोज्य कार्यक्रमों की जानकारी प्रस्तुत करते हुये महाप्रज्ञ के ग्रंथ सम्बोधि पर 50 विश्वविद्यालयों में व्याख्यानों का आयोजन, राष्ट्रीय संगोष्ठियों का आयोजन, अन्तर्राष्ट्रीय कांफ्रेंस का आयोजन तथा वर्ष भर आयोजित किये जाने वाली भाषण, निबंध, चित्रकला आदि प्रतियोगिताओं के बारे में बताया। कार्यक्रम का शुभारम्भ मुमुक्षु बहिनों के मंगलगान के साथ किया गया और अंत में प्रो. बीएल जैन ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डा. योगेश जैन ने किया।

आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी वर्ष महोत्सव <<<

शब्दों के सही उपयोग से क्रांति और गलत उपयोग से भ्रांति पैदा होती है– प्रो. चंदन चौबे

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित

आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी वर्ष महोत्सव के अन्तर्गत जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग एवं आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में ''आचार्य महाप्रज्ञ का हिन्दी साहित्य को अवदान'' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारम्भ 13 नवम्बर को यहां महाप्रज्ञ-महाश्रमण ऑडिटोरियम में किया गया। राष्ट्रीय संगोष्ठी के शुभारम्भ सत्र को सम्बोधित करते हुये मुख्य अतिथि दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर चंदन चौबे ने कहा कि शब्दों का सही उपयोग क्रांति को जन्म दे सकता है और शब्दों के गलत उपयोग से भ्रांति पैदा होती है। साहित्य के मूल में अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में भाषा ही होती है और भाषा में शब्द और उनका व्यवस्थित रूप होता है। उन्होंने बताया कि आचार्य महाप्रज्ञ के साहित्य में आधुनिकता और परम्परा दोनों को महत्त्व दिया गया है। अर्थशास्त्र की दृष्टि से आचार्य महाप्रज्ञ के साहित्य की साम्यता चाणक्य और महावीर प्रसाद द्विवेदी के साथ की जा सकती है।

महाप्रज्ञ की रचनाओं के केन्द्र में मनुष्य रहा

संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुये कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा कि आदिकाल में रचनायें संवेदनशीलता से निःसृत होती थीं, लेकिन आज के बहुत सारे कवि मात्र कल्पना के सहारे काव्य पाठ करते हैं, उनमें संवेदना नहीं होती। आचार्य महाप्रज्ञ ने समस्याओं को केन्द्र बनाने के बजाय व्यक्ति को केन्द्रित रख कर अपनी रचनाओं का सृजन किया। ऋषभायण आदि अनेक साहित्य रचनाओं में उन्होंने मनुष्य को ही केन्द्रित बनाकर साहित्य सृजन किसा है। देश के मूर्धन्य साहित्यकारों ने महाप्रज्ञ को पढा और उनकी प्रशंसा भी की है। अखिल भारतीय साहित्य परिषद के संगठन मंत्री विपिन चन्द्र नई दिल्ली ने विशिष्ट अतिथि के रूप में अपने सम्बोधन में कहा कि आधुनिक साहित्यकार समाज के सामने विमर्श और संघर्ष खड़ा करते हैं और समाज को भ्रमित करते हैं। पद, प्रतिष्ठा, पुरस्कार व पैसे के लिये साहित्यकारों की दिशा भटक रही है। ऐसे में महाप्रज्ञ द्वारा स्थापित साहित्यिक संयम से मार्गदर्शन लेने की आवश्यकता है। उन्होंने महाप्रज्ञ की कृति ऋषभायण का उल्लेख करते हुये कहा कि इसमें उन्होंने वसुधैव कुटुम्बकम् का भाव व्यक्ति में भरने का काम किया है। यह कालजयी ग्रंथ है और दिग्भ्रमित व मोह रूपी समाज को दिग्दर्शन देने का महत्त्वपूर्ण कार्य करता है।

पुस्तकों का विमोचन

इस अवसर पर दो पुस्तकों का विमोचन भी किया गया। विश्वविद्यालय के समाज कार्य विभाग के विभागाध्यक्ष डा. बिजेन्द्र प्रधान द्वारा लिखित पुस्तक ''भारत वर्ष में सामाजिक विधान'' एवं आचार्य धर्मकीर्ति द्वारा रचित एवं डा. योगेश जैन की अनुवादित-सम्पादित पुस्तक

''सम्बंध परीक्षा'' का विमोचन अतिथियों ने कार्यक्रम के दौरान किया। प्रारम्भ में मथुरा के गीतकार-साहित्यकार प्रो. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम' ने विषय प्रवर्तन करते हुये कहा कि महाप्रज्ञ का साहित्य विशाल एवं वैविध्यपूर्ण है। उन्होंने कहा कि संवेदना की कोख से साहित्य का जन्म होता है। विज्ञान के कारण आज मनुष्य से संवेदना छिन गई है। आदमी और आदमी के बीच बढ रहे फासले को केवल साहित्य से ही पाटा जा सकता है। विज्ञान तो हमें पड़ौसीपन तक नहीं लौटा सकता है। संवेदना ही मानव का पर्याय है। इससे पूर्व संगोष्ठी के निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने संगोष्ठी के उद्देश्य पर प्रकाश डाला और आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी वर्ष के अवसर पर किये जाने वाले विभिन्न आयोजनों के बारे में बताया। सरस्वती की प्रतिमा को माल्यार्पण व छात्राओं द्वारा मंगलाचरण के साथ कार्यक्रम का प्रारम्भ किया गया। अतिथियों का स्वागत प्रो. एपी त्रिपाठी, डा. भाबाग्रही प्रधान, डा. मनीष भटनागर, कमल कुमार मोदी आदि ने किया। संगोष्ठी का संचालन डा. गिरीराज भोजक ने किया।

महाप्रज्ञ के शब्दों का सौंदर्यबोध अद्वितीय, वे नई ऊर्जा का संचार करते हैं

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन सत्र में 14 नवम्बर को मुख्य अतिथि के रूप में सम्बोधित करते हुये जयपुर दूरदर्शन केन्द्र के पूर्व निदेशक डा. केके रत्तू ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ के शब्दों में जो सौंदर्यबोध है, वह अद्वितीय है। हिन्दी शब्दों का प्रयोग, उनमें फ्लेवर देने और जिज्ञासाओं की शांति के साथ नई ऊर्जा का संचार करने की कला महाप्रज्ञ में थी। महाप्रज्ञ के अक्षरों में जीवन का दर्शन बहता था। उन्होंने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ की बातें इस प्रांगण से बाहर भी होनी चाहिये और उन्हें विश्व भर में फैलाने की आवश्यकता है। अगर हम विश्व-साहित्य के परिदृश्य में मूल्यांकन करें तो संत-काव्य में पहली पंक्ति में महाप्रज्ञ होंगे।

अज्ञान को तिरोहित करती है गुरुता

अलीगढ विश्वविद्यालय के प्रो. शम्भुनाथ तिवाड़ी ने विशिष्ट अतिथि के रूप में कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ का विशाल कृतित्व है और उनके कृतित्व में जितनी भी खोज की जायेगी, उतनी ही नई चीजें निकल कर सामने आयेगी। उन्होंने कहा कि आज विश्वविद्यालयों में तीन चीजों का होना आवश्यक है- एटीट्यूट, बिहेवियर एवं कैरेक्टर। विशिष्ट अतिथि भंवर सिंह सामौर चूरू ने कहा कि प्रत्येक रचनाकार का संत या भक्त होना आवश्यक है। भक्ति के माध्यम से व्यक्ति की कमियां दूर होती हैं और दुष्प्रवृतियां छूट जाती हैं। इसी प्रकार जिसने सत्य से साक्षात्कार किया वही संत होता है। महाप्रज्ञ एक संत थे, उनका पूरा लेखन सत्य पर आधारित है। उन्होंने बताया कि उनकी रचनाओं में प्रेक्षाध्यान का अवदान तो शिक्षा के पाठ्यक्रम में शामिल होना आवश्यक है और जीवन विज्ञान से उन्होंने पाठ्यक्रम को नया रूप दिया था। अंत में कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने आभार ज्ञापित करते हुये आचार्य महाप्रज्ञ के महाकाव्य ऋषभायण पर विभिन्न विश्वविद्यालयों में शोध किये जाने की आवश्यकता बताई। कार्यक्रम के प्रारम्भ में डा. गिरीराज भोजक ने दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का प्रगति विवरण प्रस्तुत किया। सम्भागी विजयकुमार आर्य व रामसिंह रैगर ने अपने अनुभव साझा किये। संचालन अभिषेक चारण ने किया।

काव्य गोष्ठी का आयोजन

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में कुल 7 सत्रों का आयोजन किया गया, जिनमें प्रो. गोपीनाथ शर्मा, प्रो. नरेन्द्र शर्मा कुसुम, प्रो. अनिल धर, प्रो. सुरेन्द्र सोनी, डा. मनीष भटनागर, डा. बिजेन्द्र प्रधान, प्रो. भंवरदान सामौर, डा. गजादान चारण, डा. अजय कुमार दिल्ली, डा. जगदीश कड़वासरा सीकर, डा. प्रेरणा गौड़ जोधपुर, प्रो. नन्दिता बीकानेर, मणि कुमार दिल्ली, चारू चौहान, डा. चारूलता वर्मा श्रीगंगानगर, डा. जितेन्द्र सिंह जयपुर,अरविन्द विक्रम सिंह, डा. के के तिवाड़ी, श्रवण पंडित, डा. प्रेम बाफना, डा. शक्तिदान चारण, मनीषा भोजक, डा. समणी संगीत प्रज्ञा आदि ने शब्द सिद्धि व काव्य साधना, ऋषभायण की मूल संवेदना, अध्यात्म तत्त्व, चरित्र विकास, कर्मवाद का मर्म आदि विषयों पर पत्र-वाचन किया। रात्रि को संगोष्ठी के अन्तर्गत काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया। काव्य गोष्ठी की अध्यक्षता प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने की। मुख्य अतिथि प्रो. चन्दन चौबे थे एवं विशिष्ट अतिथि प्रो. शम्भुनाथ तिवाड़ी थे। काव्य गोष्ठी में निरमा विश्नोई, पूनम चारण, प्रतिष्ठा कोठारी, गीता पूनिया, दक्षता कोठारी, दीपक सोलंकी, गजराज कंवर, हेमेन्द्र पालड़िया व सुमन चौधरी ने अपनी कवितायें प्रस्तुत कीं। राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजन एवं व्यवस्थाओं में डा. प्रगति भटनागर, कमल कुमार मोदी, डा. बलबीर चारण, सोमवीर सांगवान, अभिषेक शर्मा, डा. भाबाग्रही प्रधान, डा. सरोज राय, डा. आभासिंह, विष्णु कुमार, डा. गिरधारीलाल, राजश्री शर्मा, श्वेता खटेड़, स्वाति शर्मा, दीपक माथुर, घासीलाल शर्मा, जगदीश यायावर आदि का सहयोग रहा।

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

दार्शनिक, योगी और प्राच्य विद्याओं को उत्कर्ष पर पहुंचाने वाले थे आचार्य महाप्रज्ञ- प्रो. दूगड़

आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी वर्ष के अवसर पर संस्थान के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग के तत्त्वावधान में ''आचार्य महाप्रज्ञ का प्राच्य-विद्याओं को अवदान'' विषय पर 09-10 अगस्त को आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुये कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा—आचार्य महाप्रज्ञ एक दार्शनिक, योगी व प्राच्य विद्याओं को उत्कर्ष पर पहुंचाने वाले व्यक्ति के रूप में हिन्दुस्तान और हिन्दुस्तान से बाहर भी जाने जाते हैं। उनकी राजस्थान विश्वविद्यालय में किये गये व्याख्यानों पर आधारित पुस्तक ''जैन न्याय का विकास'' से प्रमाण मीमांसा ग्रंथ और जैन न्याय की तरफ सबका ध्यान गया था। उन्होंने आचारांग के आधार पर अहिंसा व शांति के क्षेत्र में नये पद्चिह्न प्रतिष्ठापित किये। प्राचीन विद्याओं को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में रखना उनकी विशेषता थी।

प्राच्य विद्याओं को नया आयाम दिया महाप्रज्ञ ने

समारोह के मुख्य अतिथि प्रो. धर्मचंद जैन ने कहा है कि आचार्य महाप्रज्ञ ने आगमों का भाष्य किया। उनके आचारांग के भाष्य में जो सूक्ष्म दृष्टि से विवेचना की गई है, वह उनका वैशिष्ट्य था। प्राच्य विद्या में प्राचीन समय में 62 विद्याओं और 84 विद्याओं का क्षेत्र रहा था। उन्होंने प्राच्य विद्याओं को नवीन आयाम दिया। विशिष्ट अतिथि प्रो. हरिशंकर पांडेय ने आचार्य महाप्रज्ञ को सामान्य मनुष्य के बजाय साबर तंत्र के आधार पर अदेही गुरू के रूप में अधिक बलवान और समर्थ साबित किया। संगोष्ठी की निदेशिका समणी संगीत प्रज्ञा ने प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुये बताया कि संगोष्ठी में विभिन्न प्रांतों के विद्वानों ने हिस्सा लिया, जिनमें 17 तो देश के प्रख्यात विद्वान थे और सभी ने अपने शोध-आलेख प्रस्तुत किये। प्रारम्भ में संस्थान के प्राकृत व संस्कृत विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. दामोदर शास्त्री ने अपने स्वागत वक्तव्य में बताया कि महाप्रज्ञ ने आयुर्वेद, अध्यात्म, वेद, विज्ञान आदि सभी पर लिखा है। इस अवसर पर सभी सम्भागियों को प्रमाण पत्रों का वितरण किया गया। अंत में डा. योगेश कुमार जैन ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम में प्रो. प्रद्युम्न शाह, प्रो. प्रेमसुमन जैन, प्रो. कल्पना जैन, डा. सहदेव शास्त्री, ज्योति बाबू, सुमत जैन, प्रो. अशोक कुमार जैन, डा. मनीषा जैन, डा. आनन्द जैन, डा. मंजुल प्रज्ञा, डा. समणी अमल प्रज्ञा, डा. पुष्पा मिश्रा, मीनाक्षी मारू, समणी ऋजुप्रज्ञा, प्रो. अनिल धर, प्रो. बीएल जैन, डा. जसबीर सिंह आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन समणी सम्यक्त्वप्रज्ञा ने किया।

चलते फिरते विश्वविद्यालय थे महाप्रज्ञ

इस दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के शुभारम्भ सत्र के मुख्य अतिथि प्रो. दयानन्द भार्गव जयपुर थे। उन्होंने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ भूत, भविष्य और वर्तमान की मानवता के संदेश वाहक थे। अपनी 125 पुस्तकों से उन्होंने कुल 982 उद्धरण दिये, लेकिन इन सबमें से एक भी उद्धरण ऐसा नहीं है, जो केवल जैन मत का समर्थक और वेदांत के खिलाफ हो।

विशिष्ट अतिथि प्रो. प्रेमसुमन जैन ने आचार्य महाप्रज्ञ को चलते-फिरते विश्वविद्यालय की संज्ञा दी और कहा कि उनमें पूरे विश्व का ज्ञान-विज्ञान समाहित था। विशिष्ट अतिथि और इस राष्ट्रीय सेमिनार के प्रायोजक जैन महासंघ के महामंत्री सूरजमल धोका, समणी नियोजिका मल्लीप्रज्ञा, विभागाध्यक्ष प्रो. दामोदर शास्त्री ने भी विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम के प्रारम्भ में संगोष्ठी निदेशिका समणी संगीत प्रज्ञा ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया और अंत में समणी भास्कर प्रज्ञा ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डा. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया।

महाप्रज्ञ जन्मशताब्दी वर्ष में पुस्तक समीक्षा कार्यक्रम का आयोजन

''ऋषभायण''

आचार्य महाप्रज्ञ जन्मशताब्दी वर्ष के उपलक्ष में 7 सितम्बर को आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में चलाये जा रहे पुस्तक समीक्षा कार्यक्रम में प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में हिन्दी व्याख्याता अभिषेक चारण ने महाप्रज्ञ कृत हिन्दी महाकाव्य ''ऋषभायण'' पर समीक्षा प्रस्तुत की। उन्होंने बताया सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर मानव के विकास की गाथा को इस महाकाव्य में समाहित किया गया है। यह जैनधर्म के आदि तीर्थंकर ऋषभदेव के जीवन-चरित्र पर आधारित काव्य है। इसमें विभिन्न 18 सर्गों में पुस्तक का विभाजन किया गया है, जिनमें यौगलिक युग, ऋषभावतार, राज व्यवस्था, समाज रचना, भरत राज्याभिषेक, ऋषभ दीक्षा, अक्षय तृतीया, केवल ज्ञानोपलब्धि, आत्म सिद्धांत प्रतिपादन, भरत का अयोध्या आगमन, अठानवे पुत्रों को सम्बोधन, सुन्दरी दीक्षा ग्रहण, युद्ध भूमि में समागम, भरत बाहुबलि का युद्ध एवं ऋषभ निर्वाण शामिल हैं। इसमें आदिम युग और समाज व्यवस्था कायम होने की विभिन्न कथाओं को प्रस्तुत किया गया है। चारण ने बताया कि इस महाकाव्य में ऋषभ को मानवीय सभ्यता का आदि पुरुष बताया गया है और सभ्यता के सृजन को आकर्षक ढंग से वर्णित किया गया है। इसमें दो युगों और हर युग के छह-छह आरा का वर्णन किया गया है। इसमें प्रारम्भिक जीवन को वनवासियों का और शांत जीवन दर्शाया गया है। इसमें तत्कालीन दंड व्यवस्था, नियमादि और शासन व्यवस्था की शुरूआत को भी दर्शाया गया है।

इस कार्यक्रम में कमल कुमार मोदी, डा. प्रगति भटनागर, सोमवीर सांगवान, बलवीर सिंह चारण, अभिषेक शर्मा, मांगीलाल, शेर सिंह, स्वाति शर्मा, श्वेता खटेड़, सुनीता इन्दौरिया आदि उपस्थित थे।

'कैसी हो इक्कीसवीं शताब्दी'

आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी वर्ष समारोह के अन्तर्गत संचालित कार्यक्रमों के तहत संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में पुस्तक समीक्षा कार्यक्रम में श्वेता खटेड़ ने आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा रचित पुस्तक ''कैसी हो इक्कीसवीं शताब्दी'' की समीक्षा प्रस्तुत करते हुये बताया कि आचार्य महाप्रज्ञ ने अहिंसा के अर्थ में स्वस्थ मानव के निर्माण तथा स्वस्थ समाज के निर्माण की कल्पना की, जो आचार्य महाप्रज्ञ की मौलिक सोच की उन्नायक है। इसमें वर्तमान शिक्षा प्रणाली में कुछ महत्त्वपूर्ण परिवर्तनों की अपेक्षा की बात भी कही गयी है। महाप्रज्ञ ने इस पुस्तक में लिखा है कि बौद्धिक शिक्षा के साथ-साथ विद्यार्थियों को मूल्यपरक शिक्षा, जीवन विज्ञान प्रशिक्षण तथा अहिंसा का प्रशिक्षण अनिवार्य रूप से दिया जाना चाहिए। इस पुस्तक को कुल आठ अध्यायों में विभक्त किया गया है। पुस्तक में वर्णित प्रत्येक अध्याय को विस्तार से बताते हुए खटेड़ ने 20वीं शताब्दी के इष्ट-अनिष्ट परिणामों का उल्लेख किया एवं इस पुस्तक में आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा इक्कीसवीं शताब्दी में अनिष्ट परिणामों के समाधान हेतु सुझाव दृष्टिगत किये। आत्मतुला के सिद्धान्त, अहिंसा के संस्कार, संयमित जीवनशैली पर भी प्रकाश डाला तथा वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पुस्तक की सार्थकता को सिद्ध करते हुए पुस्तक की महत्ता पर प्रकाश डाला।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने पुस्तक एवं श्वेता खटेड़ द्वारा की गई पुस्तक समीक्षा की तारीफ करते हुए कहा कि ऐसी पुस्तकों का सतत अध्ययन समाज को विसंगतियों से बचाता है एवं स्वच्छ मानसिकता के विकास में सहायक है। उन्होंने सभी व्याख्याताओं को ऐसी पुस्तकों का समय-समय पर अध्ययन करने हेतु प्रोत्साहित किया।

कार्यक्रम में डॉ. प्रगति भटनागर, अभिषेक शर्मा, घासीलाल शर्मा आदि उपस्थित रहे। अंत में अभिषेक चारण ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संयोजन सोमवीर सांगवान ने किया।

सुखी समृद्ध परिवार

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के कॉन्फ्रेंस हॉल में 25 नवम्बर को आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी वर्ष समारोह के अन्तर्गत आयोजित पुस्तक समीक्षा कार्यक्रम में महाप्रज्ञ की पुस्तक ''दी हैपी एंड हार्मोनियस फैमिली'' पर व्याख्याता सोमवीर सांगवान ने पुस्तक समीक्षा प्रस्तुत की। उन्होंने बताया कि महाप्रज्ञ रचित हिन्दी पुस्तक ''सुखी-समृद्ध परिवार'' से अनूदित है। यह अनुवाद साध्वी विश्रुतविभा द्वारा किया गया। इस पुस्तक में बताया गया है कि सकारात्मक सोच, उत्तम आचरण, नैतिक मूल्य, सामाजिक सद्भाव, दया एवं क्षमा का भाव, धैर्य एवं सहानुभूति आदि तत्त्वों के द्वारा पारिवारिक परिवेश में सहजता से सन्तुलन स्थापित किया जा सकता है। सांगवान ने वर्तमान परिप्रेक्ष्य में पुस्तक की सार्थकता को सिद्ध करते हुए पुस्तक की महत्ता पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये प्राचार्य प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने पुस्तक एवं सांगवान द्वारा की गई समीक्षा की सराहना करते हुए कहा कि ऐसी पुस्तकों का सतत अध्ययन समाज की वास्तविक दशा व दिशा को निर्धारित कर सकता है।

अंत में श्वेता खटेड़ ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में सहायक आचार्य डॉ. प्रगति भटनागर, डॉ. बलबीर सिंह चारण, अभिषेक चारण, शेरसिंह राठौड़, अभिषेक शर्मा, अजयपाल सिंह भाटी आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन मांगीलाल सुथार ने किया।

''सम्बोधि''

आचार्य महाप्रज्ञ जन्मशताब्दी वर्ष के अवसर पर 25 सितम्बर को आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में महाप्रज्ञ रचित ग्रंथ ''सम्बोधि'' पर समीक्षा प्रस्तुत की गई। प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने इसके बारे में बताया कि 'सम्बोधि' एक महत्त्वपूर्ण एवं कालजयी रचना है, जिसका सृजन आचार्य महाप्रज्ञ ने सन् 1953 में शुरू किया और 1960 में इसे पूर्ण किया था। सम्बोधि को जैन गीता के रूप में स्थान प्राप्त है। जिस प्रकार महाभारत में कुरुक्षेत्र के समरांगण में अपने परिजनों को देखकर अर्जुन ने कर्मक्षेत्र से हटते हुये गांडीव को जमीन पर धर दिया था, तब कृष्ण ने गीता का उपदेश अर्जुन को प्रदान किया था। उसी प्रकार सम्बोधि में युद्ध के स्थान पर साधना का मैदान है और अर्जुन व कृष्ण के स्थान पर मेघमुनि और महावीर हैं। इसमें राजा श्रेणिक के पुत्र मेघ कुमार के विरक्त भाव आने और मुनि रूप में नवदीक्षित होने के बाद पीड़ाओं से गुजर कर अपने कर्तव्यपथ से हटने की कामना की, तो महावीर ने जातिस्मृति द्वारा उन्हें पूर्वजन्म की स्मृति करवाई और कर्मों की सहनशीलता के बारे में बताया। सम्बोधि में महावीर के समक्ष मेघमुनि अनेक जिज्ञासाओं की प्रस्तुति करके उनकी शांति और समाधान भगवान महावीर से प्राप्त करता है। प्रो. त्रिपाठी ने बताया कि नचिकेता का वर्णन हमें कठोपनिषद, गीता और सम्बोधि तीनों में मिलता है, जिनमें शरीर की नश्वरता, आत्मा की अमरता और आत्मा का बोध बताया गया है।

16 अध्यायों में 703 श्लोकों में है वर्णित

प्रो. त्रिपाठी ने बताया कि यह ग्रंथ 16 अध्यायों में वर्णित है और विविध कथाओं का उल्लेख करके आत्मा और आत्मज्ञान का महत्त्व प्रतिपादित किया गया है। दिशाबोध देने वाले इस ग्रंथ में कुल 703 संस्कृत श्लोक हैं। मुनि दुलहराज एवं मुनि शुभकरण ने इनका अनुवाद किया है। इस ग्रंथ के आधार पर शोध की जाकर समणी स्थितप्रज्ञा ने पीएचडी भी की है। उन्होंने बताया कि सम्बोधि ग्रंथ में चित्त की अस्थिरता को दूर करने, सुखबोध की समझ, पुरूषार्थ का बोध, सहज आनन्द की प्राप्ति का बोध, निर्वाण के साधन, आत्मा व अनात्मा का उद्बोधन, वीतरागता, बंध और मोक्षवाद, सम्यक् ज्ञान वाद, सम्यक् धर्म, सम्यक् चर्या, आत्मदृष्टि, हेय व उपादेय, साधन-साध्यवाद सम्बंध, कर्मबोध, आत्मबोध, परमात्म प्राप्ति से सहजानन्द प्राप्ति करना आदि को समझाया गया है।

कार्यक्रम में उपस्थित आचार्यों ने सम्बोधि के सम्बंध में विभिन्न सवाल भी पूछे, जिनका जवाब समाधान के रूप में प्रो. त्रिपाठी ने प्रस्तुत किये। कार्यक्रम का संचालन सोमवीर सांगवान ने किया।

''परिवार के साथ कैसे रहें''

संस्थान के शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन का कहना है कि आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा लिखित पुस्तक ''परिवार के साथ कैसे रहें'' में परिवार की समस्त प्रकार की समस्याओं का समाधान निहित है। वे यहां 12 अगस्त को बीएड, एमएड, बीएससी-बीएड व बीए-बीएड की छात्राध्यापिकाओं के समक्ष आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी वर्ष के अवसर पर उनकी इस कृति की समीक्षा प्रस्तुत कर रहे थे। उन्होंने कहा कि परिवार एक छोटी इकाई है, उसमें ढेर सारी समस्यायें पैदा हो गई हैं, जिसके कारण समाज व राष्ट्र भी समस्याओं से ग्रसित है। भौतिक सम्पन्नता के बावजूद आज कहीं सुख-शांति नहीं है। हमारा व्यवहार, हमारी वाणी, हमारे विचार परिवार को सुखी, आनन्दित और प्रसन्नतामय बना सकते हैं।

आज परिवार में धैर्य, क्रोध, अहंकार व लोभ बढते जा रहे हैं, जिसके कारण अशांति, कलह, झगड़े व संघर्ष वृद्धिंगत हो रहे हैं। सभी समस्याओं का समाधान आचार्यश्री महाप्रज्ञ की इस पुस्तक में विवेचित है।

''मैं कुछ होना चाहता हूँ''

आचार्य महाप्रज्ञ जन्मशताब्दी वर्ष के अवसर पर संस्थान के शिक्षा विभाग के तत्वावधान में 19 अगस्त को पुस्तक समीक्षा कार्यक्रम में आचार्य महाप्रज्ञ की पुस्तक ''मैं कुछ होना चाहता हूं'' पर डा. मनीष भटनागर ने समीक्षा प्रस्तुत की। विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन की अध्यक्षता में हुये इस कार्यक्रम में डा. भटनागर ने बताया कि महाप्रज्ञ इसमें चेतना की शुद्धि की बात करते हैं और कहते हैं कि जब दृष्टिकोण बदल जाता है, तो व्यक्ति साधना की ओर बढ़ता है और यही कायासिद्धि का उपाय व प्रयोजन है। महाप्रज्ञ कहते हैं कि कायाशुद्धि के साथ मनशुद्धि भी आवश्यक है। इनके लिये सबसे जरूरी है वाणी की शुद्धि। वाणी शुद्धि का उपाय सत्यनिष्ठा है। कायाशुद्धि के पांच उपाय बताये गये हैं, जिनमें कायोत्सर्ग, आसन, बंध, व्यायाम और प्राणायाम शामिल हैं। इनके अलावा मनुष्य की दुर्बलताओं में क्रूरता, विषमता और स्वभाव की जटिलता है। इनके परिष्कार के सूत्रों में करूणा का विकास, समता का विकास और कषाय-नियमन का विकास है। डा. भटनागर ने कहा कि महाप्रज्ञ ने अपनी पुस्तक में बताया है कि वर्तमान युग का सबसे अधिक लुभावना एवं आकर्षक शब्द है- मन का अनुशासन। आज मन की समस्यायें जितनी जटिल हैं, उतनी संभवतः पहले कभी नहीं रही। इसके लिये इच्छाओं के परिष्कार की आवश्यकता है।

संयम और अनुशासन से ही इच्छाओं का परिष्कार संभव है। उन्होंने अनुशासन को सात चरणों में क्रमबद्ध किया है। इच्छा का अनुशासन, श्वास पर अनुशासन, आहार पर अनुशासन, भाषा पर अनुशासन, शरीर पर अनुशासन, मन पर अनुशासन और इंद्रियों पर अनुशासन। मनुष्य को विशिष्ट बनाने के लिये प्राणशक्ति के साथ चेतनाशक्ति को विकसित करने का सामर्थ्य, चेतना के नये-नये आयामों को उद्घाटित करने का सामर्थ्य, चेतना के विकास का बोध और चेतना बोध की क्रियान्विति को हेतु बताया गया है।

'कैसे सोचें'

आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी वर्ष के अन्तर्गत 30 सितम्बर को संस्थान के शिक्षा विभाग में चलाये जा रहे पुस्तक समीक्षा कार्यक्रम में डा. अमिता जैन ने महाप्रज्ञ की पुस्तक ''कैसे सोचें'' पर बोलते हुये कहा कि मनुष्य में बीमारियां होने के पीछे केवल कीटाणु आदि कारण ही नहीं होते बल्कि मानसिक हिंसा, निषेधात्मक चिंतन और प्रतिक्रियायें हो सकती हैं। आचार्य महाप्रज्ञ ने अहिंसा के सिद्धांत को केवल धर्म का सिद्धांत नहीं मान कर उसे अच्छा जीवन जीने का सिद्धांत माना था और बीमारियां बढने का कारण मानसिक हिंसा को भी बताया। महाप्रज्ञ ने विधेयात्मक चिंतन और निषेधात्मक चिंतन के बारे में बताते हुये कहा कि प्रतिक्रिया से हिंसा, तनाव, असंतुलन और रक्त संचार में अवरोध पैदा होता है। यह रक्त संचार का अवरोध कई बार उस बिन्दु तक पहुंच जाता है, जहां ब्रेन हेमरेज की स्थिति आ जाती है। तनाव के पीछे हिंसा होती है, प्रतिक्रिया का भाव होता है, प्रतिशोध की आग होती है। डा. जैन ने बताया कि कैसे सोचें पुस्तक में वर्णित सूत्रों में अहिंसा, अनुशासन, समन्वय, सहिष्णुता, परस्परावलम्बन महत्त्वपूर्ण हैं। अहिंसा से मनोबल प्राप्त होता है। अनुशासन जीवन में स्रोत बनकर बहना चाहिये। समन्वय से तनाव दूर हो जाता है, सहिष्णुता हमें मजबूत बनाती है और परस्परावलम्बन से जीवन यात्रा चलती है।

''पहला सुख निरोगी काया''

आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी वर्ष समारोह के अन्तर्गत संस्थान के शिक्षा विभाग में आचार्य महाप्रज्ञ लिखित पुस्तक '' पहला सुख निरोगी काया'' की समीक्षा प्रस्तुत की गई। समीक्षा प्रस्तुत करते हुये डा. गिरधारी लाल शर्मा ने बताया कि आचार्य महाप्रज्ञ ने पहला सुख निरोगी काया को महत्वपूर्ण व गहरे सूत्र के रूप में लिया है और अपने शरीर के स्नायुओं, शरीर के अवयवों हाथ, पैर, वाणी आदि इंद्रियों को गलत आदतों से बचाने व सही आदतें ग्रहण करवाने की आवश्यकता बताई है। उन्होंने बताया कि पुस्तक में शारीरिक बीमारियों के पनपने के कारणों पर ध्यान दिया गया है तथा उन्हें मन की गहराई में उतर कर हल करने के उपाय खोजे गये हैं। क्रोध, अहंकार, आसक्ति, भय, असहिष्णुता, अनिद्रा, बढती हुई कामवासना, मानसिक दुर्बलता आदि के उपचार व्यक्त किये हैं। आहार विवेक, एकाग्रता का अभ्यास, संयम, श्वास प्रेक्षा, प्रेक्षा ध्यान, जालंधर बंध, अनुप्रेक्षा, कायोत्सर्ग, प्राणायाम, आसन आदि के रूप में शारीरिक व मानसिक रूप से पूर्ण स्वास्थ्य लाभ प्राप्ति के उपाय भी बताये हैं। डा. शर्मा ने बताया कि महाप्रज्ञ की इस पुस्तक में कुल 24 अध्याय हैं, जिनमें सर्वांगीण व सम्पूर्ण स्वास्थ्य से जुड़े लगभग प्रत्येक विषय को उठाते हुये उसके उपायों का विवरण प्रस्तुत किया गया है। रूग्णता के कारणों, प्रभावों और उनके निवारण के उपायों को उन्होंने सहज भाषा में सरल प्रयोगों के साथ तथा सूक्ष्म चिंतन के माध्यम से व्यक्त किया है। अंत में विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने पुस्तक को आम आदमी के लिये पढने योग्य एवं उपयोगी बताते हुये उसमें दिये गये सूत्रों को जीवन में उतारने की आवश्यकता बताई।

'जीवन विज्ञान : शिक्षा का नया आयाम'

आचार्य महाप्रज्ञ जन्मशताब्दी वर्ष के अन्तर्गत संस्थान के शिक्षा विभाग में चल रहे बुक रिव्यू कार्यक्रम के तहत 16 सितम्बर को असिस्टेंट प्रोफेसर डा. विष्णु कुमार ने आचार्य महाप्रज्ञ रचित पुस्तक ''जीवन विज्ञानः शिक्षा का नया आयाम'' की समीक्षा प्रस्तुत की। डा. विष्णु कुमार ने कहा कि वर्तमान शिक्षा पद्धति अच्छे नागरिकों का निर्माण करने में विफल रही है। सभी शिक्षा-शास्त्री और अभिभावकगण चाहते हैं कि बच्चे सुसंस्कारित हों और श्रेष्ठ नागरिक बनें, नवीन पीढी की ओर सभी आशा भरी निगाहें रखते हैं, लेकिन शिक्षा प्रणाली उसमें सफल नहीं हो पा रही है। आचार्य महाप्रज्ञ ने शिक्षा पद्धति की इस कमजोरी को देखा और जीवन विज्ञान के रूप में एक नवीन प्रयोग उद्घाटित किया। शिक्षा के माध्यम से केवल मानसिक व बौद्धिक विकास होता है, लेकिन अनुशासन का विकास नहीं होता।

महाप्रज्ञ ने जीवन विज्ञान में माना है कि शांतिपूर्ण और सुखी

जीवन की प्रक्रिया तभी पूरी होती है, जब आत्मानुशासन का पाठ पढ लिया जावे। हमने अब तक जो विद्यायें विद्यापीठों में पाई हैं, वे सारी वस्तु-जगत की विद्यायें हैं, जो अधूरी होती हैं। उनमें पूर्णता तभी आ सकती है, जब आदमी चेतन जगत की विद्या भी सीखेगा।

'कर्मवाद'

आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी वर्ष के अन्तर्गत 10 अक्टूबर को संस्थान के शिक्षा विभाग के सहायक आचार्य डा. गिरीराज भोजक ने आचार्यश्री महाप्रज्ञ की पुस्तक ''कर्मवाद'' की समीक्षा प्रस्तुत करते हुये कहा कि 27 अध्यायों में विभाजित इस पुस्तक की विषय-वस्तु में मनुष्य के अतीत का लेखा-जोखा कर्म में निहित बताया है और कर्मवाद को महान् सिद्धांत कहा गया है। इसमें महाप्रज्ञ ने बताया है कि अध्यात्म को सटीक रूप में समझने के लिये कर्मशास्त्र, योगशास्त्र एवं वर्तमान मानस शास्त्र मनोविज्ञान का समन्वित अध्ययन आवश्यक है। उन्होंने बताया है कि कर्म का सम्बंध स्थूल शरीर से नहीं होकर सूक्ष्म शरीर से है। कर्म की वास्तविकता को समझने के लिये आस्रव, संवर, बंध एवं निर्जरा तत्वों का ज्ञान आवश्यक है। इस पुस्तक में कर्म की रासायनिक प्रक्रिया, कर्म का बंध, मोहकर्म, आवेग एवं उनकी चिकित्सा आदि के साथ अतीत, वर्तमान व भविष्य की परस्परता, प्रतिक्रमण, परिवर्तन का सूत्र, भाव का जादू, अकर्म एवं पलायन, कर्मवाद आदि विषयों को लेकर सम्पूर्ण कर्मसिद्धांत की व्याख्या की गई है। महाप्रज्ञ ने इसमें कर्म की रासायनिक प्रक्रिया को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है।

'कैसी हो इक्कीसवीं शताब्दी ?'

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जन्मशताब्दी वर्ष के अवसर पर पुस्तक समीक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत शिक्षा विभाग में विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन की अध्यक्षता में सहायक आचार्य डा. सरोज राय ने आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा लिखित पुस्तक ''कैसी हो इक्कीसवीं शताब्दी?'' की समीक्षा प्रस्तुत की। डा. राय ने बताया कि आचार्य महाप्रज्ञ की दृष्टि में इक्कीसवीं शताब्दी समन्वय की सदी होगी, जिसमें धन और सत्ता का स्वतंत्र मूल्य नहीं होगा। आर्थिक आधार पर सारी विकास सम्पदा, वैज्ञानिक प्रगति, लोकतंत्रीय समाजवादी दृष्टिकोण और सुविधावादी दृष्टिकोण होंगे। महाप्रज्ञ ने आर्थिक विकास को षडक्षरी वशीकरण मंत्र बताते हुये कहा कि इसकी आराधना में आज सबसे ज्यादा शक्ति लगाई जा रही है। चेतना के दो आयामों- ज्ञान और संवेदन में संवेदन को समाज व्यवस्था का आधारभूत सूत्र बनाना होगा। व्यक्ति स्वयं तो सुख का अभिलाषी है, मगर वह दूसरे की कठिनाइयों को नहीं समझता। इसी से समस्यायें उत्पन्न होती हैं। व्यक्ति में अनुभव का जागरण होने पर ही समाज में व्याप्त इस प्रकार की वैयक्तिक व सामाजिक समस्याओं का निस्तारण संभव है। इक्कीसवीं शताब्दी में पदार्थ के मूल्य के सामने मानव मूल्य का अवमूल्यन कर दिया गया है। इसके लिये पदार्थ का विरोध करने के बजाये चेतना का विकास करने की आवश्यकता है। इस बारे में व्यक्तित्व विकास, चरित्र विकास, मस्तिष्क कोषों को सक्रिय करने सम्बंधी चिंतन जीवन विज्ञान की परिकल्पना में किया गया है।

डा. राय ने बताया कि आचार्य महाप्रज्ञ ने अपनी पुस्तक में इक्कीसवी सदी की समस्याओं के हल के बारे में बताया है कि विद्यार्थियों-युवाओं में मस्तिष्कीय अनुशासनहीनता को दूर करने, नैतिक शिक्षा का प्रशिक्षण दिये जाने, धर्म और अध्यात्म को वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किये जाने के लिये उन्हें समन्वयता, मानवता, सहिष्णुता, अनुशासन और कर्तव्यनिष्ठा का प्रशिक्षण दिया जाना आवश्यक है। अंत में प्रो. बीएल जैन ने आभार जताया तथा कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ ने विश्व के समक्ष एक नई सोच प्रस्तुत करते हुये भविष्य की समस्याओं को देखा तथा उनके निराकरण का मार्ग तलाश कर उसे बताया है।

अवचेतन मन से संपर्क पुस्तक

आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शाताब्दी वर्ष के अन्तर्गत जैन विश्वभारती संस्थान के योग व जीवन विज्ञान विभाग में पुस्तक समीक्षा कार्यक्रम में आचार्य महाप्रज्ञ कृत पुस्तक 'अवचेतन मन से सम्पर्क' की समीक्षा डा. हेमलता जोशी द्वारा प्रस्तुत की गई। डा. जोशी ने बताया कि चेतना एक ऐसा तत्त्व है जो प्राणी को उसके अस्तित्व और उसके पर्यावरण का ज्ञान कराती है। चेतना के तीन स्तर माने गए हैं- चेतन, अवचेतन और अचेतन। चेतन का संबंध प्रत्यक्ष ज्ञान से है जिसमें हमारी इंद्रियां प्रत्यक्ष जुड़ी रहती हैं तो अवचेतन का संबंध अप्रत्यक्ष ज्ञान से है। अचेतन का संबंध इन दोनों से परे है जहां का हमें कोई ज्ञान नहीं है। अचेतन हमारे व्यवहार का मूल है। हमारे भीतर जो संस्कार, जो इच्छाएं, विश्वास जमा हैं, चाहे वे सकारात्मक हों या नकारात्मक, वही व्यवहार रूप में व्यक्त होते हैं।

अतः नकारात्मकता को दूर करने हेतु अचेतन का परिष्कार और सकारात्मकता को बढ़ाने हेतु अचेतन को प्रशिक्षित करना आवश्यक माना गया है। आचार्य महाप्रज्ञ ने इस पुस्तक को तीन भागों में बांटा है- ज्ञात-अज्ञात, मन की सीमा और चेतना के आयाम। इनमें वर्तमान की तीन ज्वलंत समस्याओं को समाहित करने का प्रयास किया है। वे समस्याएं है- मानसिक अशांति, हिंसा की उग्रता और नैतिक चेतना का अभाव। इनके समाधान के लिए बौद्धिक और भावात्मक विकास का संतुलन, विधायक दृष्टिकोण और संबंधों के नये क्षितिज को महत्त्व दिया है, जिसके लिए अवचेतन और अचेतन मन से संपर्क स्थापित करने की बात कही है।

आचार्य महाप्रज्ञ ने अखंड व्यक्तित्व की परिकल्पना की है जिसमें ज्ञात-अज्ञात अर्थात् बाह्य और आंतरिक पक्ष के संतुलन की बात कही है। जिसके लिये विधायक दृष्टिकोण, यथार्थ चिंतन और अनुशासन आदि के साथ इनके मूल भाव को परिष्कृत करने पर सर्वाधिक बल दिया है। पुस्तक में वैज्ञानिक तथा दार्शनिक दोनों पक्षों को महत्त्व दिया है। चित्त को चंचल करने वाले हैं-नाड़ी संस्थान, आनुवांशिकता, कर्म, कर्म शरीर, कर्म शरीर के प्रभाव और उनसे उत्पन्न होने वाली प्रतिक्रियाएं- संज्ञा, संस्कार, वृत्ति आदि। समाधान है चित्त का निरोध। विज्ञान के अनुसार हमारा मस्तिष्क विद्युत प्रवाहों और रसायनों से प्रभावित होता है। रसायनों, विद्युत तरंगों का भावों से गहरा संबंध है। ध्यान के प्रयोगों में प्रेक्षाध्यान के विभिन्न प्रयोग कायोत्सर्ग, श्वासप्रेक्षा, चैतन्यकेन्द्र प्रेक्षा, लेश्याध्यान, अनुप्रेक्षाओं को विशेष महत्त्व दिया है, जिनका संबंध भाव परिष्कार से है।

आचार्य महाप्रज्ञ की 'अवचेतन मन से संपर्क' नामक पुस्तक अखंड व्यक्तित्व के निर्माण में अपनी महती भूमिका अदा करती है। इसमें एक ओर अनेक मूल्यों को व्यवहारगत करने की बात है तो दूसरी ओर भाव परिष्कार को सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण माना है। मूल्यों को व्यवहारगत करने से भाव शुद्ध होते हैं और भाव शुद्धि से मूल्यों का विकास होता है। जीवन में सुख शांति और आनंद की चाह रखने वालों के लिए यह पुस्तक अनेकांतिक दृष्टि से अपना विशेष स्थान रखती है।

''जो सहता है, वही रहता है''

आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी समारोह के उपलक्ष पर संस्थान के समाज कार्य विभाग के अन्तर्गत 23 अक्टूबर को एक कार्यक्रम में आचार्य महाप्रज्ञ की पुस्तक ''जो सहता है, वही रहता है'' की समीक्षा विभागाध्यक्ष डा. बिजेन्द्र प्रधान द्वारा प्रस्तुत की गई। डा. प्रधान ने अपनी समीक्षा में बताया कि इस पुस्तक में मनुष्य की सहनशक्ति की विशेषता तथा उससे होने वाले लाभ के बारे में चर्चा की गई है। इसमें युवा पीढी को नई दिशा देने वाले सूत्रों के बारे में विशेष बल दिया गया है, जो युवाओं के जीवन-निर्माण में चमत्कारिक ढंग से दिशा बदलने का कार्य करेंगे।

इस पुस्तक में सहनशीलता, शरीर, वाणी और मन पर व्यक्ति का नियंत्रण पर चर्चा की गई है तथा बताया गया है कि शरीर, मन, वाणी पर नियंत्रण से व्यक्ति में सहिष्णुता का गुण स्वतः विकसित हो जाता है। इसके साथ ही परिवर्तन शाश्वत नियम है तथा द्रव्य और पर्याय जीवन का आधार है। समता के महत्त्व को बताते हुये तीसरी आंख की व्याख्या अनेकांत के माध्यम से की गई। इसमें बताया गया है कि शोषण मुक्त समाज निर्माण के लिये लक्ष्य और योजना बड़ी होनी चाहिये, इससे उत्साह जागृत होता है।

पुस्तक में प्रकृति और विकृति तथा संतुलन और असंतुलन का वर्णन भी किया गया है। दिशा परिवर्तन से छाया, काया, माया परिवर्तित हो जाती है। उन्होंने बताया कि इस पुस्तक में कुल 7 अध्याय हैं, जिनमें से प्रथम अध्याय में जो सहता है, वही रहता है, इससे संबंधित परिचयात्मक विचार प्रस्तुत किये गये हैं।

द्वितीय अध्याय में जीवन में परिवर्तन के महत्व का वर्णन किया गया है। तृतीय अध्याय में समता की दृष्टि व समभाव में रहना आदि पर विशेष बल दिया गया है। चतुर्थ अध्याय में व्यक्तित्व के विविध रूपों का वर्णन, पंचम अध्याय में अपना आलम्बन स्वयं बनने एवं स्वयं को पहचानने की बात, षष्ट अध्याय में प्रकृति और विकृति के अन्तर को बतलाया गया है और सप्तम अध्याय में व्यक्ति की दिशा और दशा बदलने और सकारात्मक दृष्टि से आगे बढने की बात कही गई है।

कार्यक्रम में डा. पुष्पा मिश्रा, डा. विकास शर्मा, चित्रा, सुनीता, अर्जुन, अंजलि आदि उपस्थित थे।

''अहिंसा एवं शांति''

आचार्य महाप्रज्ञ जन्म शताब्दी वर्ष समारोह के अन्तर्गत समाज कार्य विभाग में 23 नवम्बर को पुस्तक समीक्षा कार्यक्रम में डा. पुष्पा मिश्रा ने आचार्य महाप्रज्ञ की पुस्तक ''अहिंसा एवं शांति'' की समीक्षा प्रस्तुत करते हुये बताया कि पुस्तक को पढने से व्यक्ति यह समझ सकता है कि मनुष्य मात्र के लिये केवल अहिंसा का मार्ग ही उचित होता है। मनुष्य की भौतिक और बौद्धिक क्षमताओं का विकास भी अहिंसा से ही संभव है। उन्होंने बताया कि इस पुस्तक में तीन अध्यायों एवं अन्य उपविषयों में अहिंसा एवं शांति की विस्तृत व्याख्या की गई है।

पुस्तक के प्रथम अध्याय में महावीर का अहिंसा दर्शन, महावीर की अहिंसा और निःशस्त्रीकरण, शांतिपूर्ण सहअस्तित्व, मानव जीवन का मूल्य, अहिंसाः सामाजिक जीवन का आधार, मानव जाति की भौतिक और बौद्धिक क्षमता का उपयोग आदि विषयों को विस्तार से बताया गया है। दूसरे अध्याय में अहिंसा एवं शांति में संयुक्त राष्ट्र मंच की महता, राष्ट्रीय एकता, मस्तिष्क नियंत्रण, स्वाध्याय पर धर्म का प्रभाव तथा तृतीय अध्याय में व्यक्ति दर्शन, जैन धर्म की वैज्ञानिकता, वर्तमान समस्या के संदर्भ में भगवान महावीर के विचार आदि पर रोशनी डाली गई है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये विभागाध्यक्ष डा. बिजेन्द्र प्रधान ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ ने अपनी अहिंसा यात्रा के दौरान देश भर में लोगों से सम्पर्क करके उनकी भावनाओं, समस्याओं और कार्यों को देखा तथा उनका अहिंसा स्थापना की दृष्टि से आकलन करके समाधानों की खोज की। उनके द्वारा प्रतिपादित अहिंसा प्रशिक्षण कार्यक्रम बहुत ही उपयोगी सिद्ध हो रहा है। उनकी पुस्तकों में विचारों को पढने पर व्यक्ति में परिवर्तन संभव हो जाता है। कार्यक्रम का संचालन डा. विकास शर्मा ने किया।

इटली के मेकियाबेली लिखित पुस्तक 'दी प्रिंस' की समीक्षा

लक्ष्यपूर्ति के लिये सरकारें निर्मम व क्रूर बनने से नहीं हिचकिचाती

आचार्य महाप्रज्ञ जन्मशताब्दी वर्ष के अवसर पर संस्थान में विश्व के उत्कृष्ट स्तर के साहित्य की समीक्षा के कार्यक्रम के तहत अहिंसा एवं शांति विभाग के तत्त्वावधान में 1 अक्टूबर को पुस्तक समीक्षा कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. अनिल धर ने इटली के लेखक मैकियावली द्वारा लिखित पुस्तक ''दी प्रिंस'' (शासक) की समीक्षा प्रस्तुत करते हुये बताया कि राजनीति शास्त्र में मील का पत्थर साबित हो चुकी इस पुस्तक के लेखक का दावा रहा कि उनका लेखन शासकों की आचार संहिता और उसके विश्लेषण का निष्कर्ष बनेगा।

दी प्रिंस पुस्तक में समसामयिक संदर्भ पत्रकारिता के स्तर से अलग, केवल लिखित दस्तावेज की जगह प्रशासनिक कला की निबंध रचना सिद्ध हुई है और उसे क्लासिक का दर्जा मिल पाया है।

यह रचना शासन पद्धति और राजनीति के लिये विकास-पथ बन गई है। इस पुस्तक में शासक द्वारा पूंजीभूत तमाम रोमांच और वितृष्णा इस स्पष्ट स्वीकृति के साथ उद्भूत है कि व्यवहारिक तौर पर राज-सत्तायें व सरकारें अपने घोषित-अघोषित लक्ष्यों की पूर्ति के लिये समस्त प्रकार की निर्ममतायें और क्रूरता पूर्ण व्यवहार को प्रस्तुत कर ही देते हैं। इस पुस्तक में लेखक मेकियावेली ने अपने काल के शासकों के दैनन्दिन व्यवहार के बारे में केवल टिप्पणी ही नहीं की है, बल्कि इस पुस्तक को प्रशासन सम्बंधी मंत्रणा और मार्गदर्शक के रूप में भी उपयोगी बना दी है।

इस अवसर पर समस्त संकाय सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन रविन्द्र सिंह राठौड़ ने किया।

प्लेटो की पुस्तक 'संवाद' की समीक्षा

संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग में 9 दिसम्बर को प्लेटो की पुस्तक ''संवाद'' की पुस्तक-समीक्षा प्रस्तुत की गई। समीक्षा प्रस्तुत करते हुये सहायक आचार्य डा. रविन्द्र सिंह राठौड़ ने बताया कि सुकरात के विचारों का प्लेटो पर गहरा प्रभाव था। प्लेटो ने आत्मा की अमरता और विचारों के सिद्धान्त की महत्त्वपूर्ण स्थापना की थी। इस पुस्तक में प्लेटो के तीन प्रसिद्ध संवाद दिए गये हैं। प्लेटो के इन संवादों का महत्त्व साहित्यिक भी है और दार्शनिक भी है। प्लेटो का चिंतन उसके सांसारिक अनुभवों का निचोड़ है। उसमें व्यावहारिकता है और यथार्थ का साक्षात्कार भी। इसमें कोरे सिद्धान्त-निरूपण अथवा स्वप्नदर्शी आशावाद से हटकर बड़ी गहराई के साथ जीवन के विविध पहलुओं का विश्लेषण किया गया है।

आधुनिक राजनीतिक सिद्धान्त की समीक्षा

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में 19 अगस्त को पुस्तक समीक्षा के द्वितीय सप्ताह में महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में राजनीति विज्ञान के व्याख्याता डॉ. बलबीर सिंह चारण द्वारा डॉ. एस.पी. वर्मा की पुस्तक -आधुनिक राजनीति सिद्धान्त की समीक्षा की गई। हाल ही में चर्चित यह पुस्तक विकास पब्लिशिंग हाऊस प्रा. लि., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित हुई है, जिसको कुल नौ अध्यायों में वर्गीकृत किया गया है। पुस्तक की समीक्षा करते हुए डॉ. चारण ने बताया कि यह पुस्तक आधुनिक राजनीतिक उपागमों एवं अध्ययन पद्धतियों को समझने में सहायक है।

समीक्षा में यह बताने का प्रयास किया गया कि वर्तमान राजनीतिक व्यववहारवादी दर्शन में अभिजन सिद्धान्त, व्यवस्था सिद्धान्त, राजनीतिक विकास की अवधारणा एवं लेनिनवादी व गांधीवादी दृष्टिकोण की प्रासांगिकता किस प्रकार आज की राजनीति को समझने में सार्थक है। पुस्तक की समीक्षा के पश्चात् व्याख्यानमाला की इस शृंखला में महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी द्वारा प्रश्न पूछा गया कि इस पुस्तक में व्यवहारवाद व यथार्थवाद में किस प्रकार तुलना की जा सकती है, जिस पर डॉ. चारण द्वारा सन्तोषप्रद उत्तर दिया गया। कार्यक्रम का संयोजन साप्ताहिक पुस्तक समीक्षा कार्यक्रम के प्रभारी सोमवीर सांगवान द्वारा किया गया।

इस दौरान महाविद्यालय के व्याख्याता डॉ. प्रगति भटनागर, कमल कुमार मोदी, अभिषेक चारण, शेरसिंह, मांगीलाल, अभिषेक शर्मा, श्वेता खटेड़ एवं घासीलाल शर्मा उपस्थित रहे।

'मार्केटिंग मैनेजमेंट' पुस्तक की समीक्षा

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में बुक रिव्यू (पुस्तक समीक्षा) कार्यक्रम दिनांक 13 अगस्त को सहायक आचार्य कमल कुमार मोदी ने फिलिप कोटलर, केविन लेन केलर, अब्राहम कोशी एवं मिथलेश्वर झा लिखित पुस्तक ''मार्केटिंग मैनेजमेंट'' पर अपनी समीक्षा प्रस्तुत की। मोदी ने बताया कि विपणन प्रबंधन पर लिखित इस पुस्तक में किसी भी उत्पादक द्वारा अपने सामान को बाजार में खपाने और उपभोक्ताओं में लोकप्रिय बनाने के विपणन प्रबंध के लिये 22 अध्यायों में इस विधा के प्रत्येक बिन्दु को वृहद् तरीके से विवेचित किया गया है। यह पुस्तक बाजार अन्वेषण और विपणन अनुसंधान प्रक्रिया के महत्व को भी वर्तमान परिदृश्य में वर्णित करती है। 21वीं सदी की विपणन रणनीति के विभिन्न पहलुओं को बताते हुये यह पुस्तक योजना निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उन्होंने बताया कि उपभोक्ता मूल्य संतृप्ता एवं उपभोक्ता क्रय क्षमता को प्रभावित करने वाले तत्त्वों का इसमें पूर्ण उल्लेख किया गया है। बाजार में अपनी रणनीतियों एवं संदेशों को सम्प्रेषित करने की कला का उल्लेख प्रभावी ढंग से किया गया है। इसमें वर्तमान स्थिति में कार्पोरेट की सामाजिक जिम्मेदारी के महत्त्व को बताया गया है। समीक्षा वक्तव्य के बाद पुस्तक पर चर्चा आयोजित की गई, जिसमें डा. प्रगति भटनागर, अभिषेक चारण, बलवीर सिंह, अभिषेक शर्मा, शेरसिंह राठौड़, मांगीलाल आदि ने भाग लिया। अंत में प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संयोजन सोमवीर सांगवान ने किया।

अहिंसा, सत्य आधारित व शोषणमुक्त समाज के लिये हो हमारा अर्थशास्त्र

आचार्य महाप्रज्ञ जन्मशताब्दी वर्ष के अन्तर्गत जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) के समाज कार्य विभाग में 18 सितम्बर को आयोजित कार्यक्रम में सहायक आचार्य डा. विकास शर्मा ने बताया कि अर्थशास्त्र का उद्देश्य इच्छाविहीनता, न्यासधारिता, स्वदेशी, सर्वोदय को अपनाते हुये मानव जीवन के स्तर को उंचा उठाना तथा उसका विकास करना होता है। वे पुस्तक समीक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत रश्मि शर्मा रचित पुस्तक ''गांधीयन इकोनोमिक्स एंड ह्यूमन एप्रोच'' की समीक्षा प्रस्तुत कर रहे थे। उन्होंने बताया कि इस पुस्तक के आठ अध्यायों में आधुनिक अर्थशास्त्र, अर्थशास्त्र के बारे में गांधीवादी विचार और उनकी तुलना तथा अहिंसक, सत्य आधारित और शोषणमुक्त समाज का विवरण प्रस्तुत किया गया है।

पुस्तक में आधुनिक अर्थशास्त्र में अधिक पूंजीनिवेश, अधिक उत्पादन और अधिक आय को मुख्य लक्ष्य रखा गया है, जबकि गांधी के आर्थिक विचारों में भारतीय संस्कृति के मूल्यों की रक्षा करते हुये मानव जीवन को उंचा उठाने पर बल दिया गया है। लेखिका ने पुस्तक में बताया है कि गांधी के मुताबिक ग्रामीण अर्थव्यवस्था के महत्व को समझने की जरूरत है और ग्रामीण लोगों के आर्थिक स्तर को उच्च बनाने पर बल दिया जाना आवश्यक बताया गया है।

खेल सप्ताह के तहत प्रतियोगिताओं का आयोजन

लम्बी कूद में दिव्या व कृष्ण, बैडमिंटन में सुमन रहे प्रथम

संस्थान में 16 अक्टूबर तक आयोजित खेल सप्ताह के अन्तर्गत विभिन्न खेल स्पर्धाओं में विद्यार्थियों ने उत्साह के साथ भाग लिया। खेल प्रशिक्षक अजयपाल सिंह भाटी ने बताया कि लम्बी कूद में छात्रा वर्ग में प्रथम स्थान पर दिव्या पारीक रही। ऊंची कूद में छात्रा वर्ग में प्रथम स्थान पर दिव्या पारीक रही। लम्बी कूद छात्र वर्ग में कृष्ण जांगिड़ प्रथम, ऊंची कूद छात्र वर्ग में सौरभ सोनी प्रथम रहे। बैडमिंटन प्रतियोगिता छात्रा वर्ग में सुमन सोमरवाल प्रथम तथा बैडमिंटन छात्र वर्ग में प्रथम स्थान पर कमल किशोर रहे। कबड्डी प्रतियोगिता में छात्र वर्ग में विजेता टीम के खिलाड़ियों में कप्तान इन्द्राराम व खिलाड़ियों में कमल किशोर, अर्जुन सैन, गजराज चारण, पुखराज, दीपक कुमार, कृष्ण कुमार, दीपक जांगिड़ व केशर सिंह रहे।

बैडमिंटन प्रतियोगिता छात्रा वर्ग में प्रथम स्थान निरंजन कंवर व प्रेमलता ने प्राप्त किया। खो-खो प्रतियोगिता में कुल 8 टीमों ने भाग लिया, जिनमें संस्थान के जीवन विज्ञान विभाग की टीम तीसरे स्थान पर रही। छात्राओं की कबड्डी प्रतियोगिता में ज्योति पूनिया की टीम विजयी रही। खो-खो प्रतियोगिता में निशा की टीम विजेता रही।

बैडमिंटन में प्रगति व दौड़ में स्वाति रही प्रथम

विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के बीच हुई विभिन्न प्रतियोगिताओं के बाद विश्वविद्यालय के कार्मिकों के बीच मैच आयोजित किये गए, जिनमें वॉलीबोल, टेबल टेनिस, 100 मीटर दौड़ व बैडमिंटन प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। खेल प्रशिक्षक अजयपाल सिंह भाटी ने बताया कि संस्थान की महिला कार्मिकों के बीच हुये 100 मीटर दौड़ मुकाबले में प्रथम स्थान पर स्वाति शर्मा रही। महिला बैडमिंटन प्रतियोगिता में प्रथम प्रगति जैन रही। महिला टेबल टेनिस प्रतियोगिता में प्रगति जैन प्रथम रही।

पुरूषों की प्रतियोगिताओं में वॉलीबोल मैच में अमीलाल चाहर की टीम प्रथम रही। पुरूष टेबल टेनिस में अभिषेक शर्मा प्रथम रहे। 100 मीटर दौड़ में प्रथम स्थान पर शिव परिहार रहे। बैडमिंटन में तिल कुमार प्रथम रहे।

तीन दिवसीय खेलकूद प्रतियोगिता

बैडमिंटन प्रतियोगिता में दिव्यता व दक्षता रही प्रथम

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में तीन दिवसीय खेलकूद प्रतियोगिता में प्राचार्य आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने 07 सितम्बर को बैडमिंटन प्रतियोगिता का शुभारम्भ किया। महाविद्यालय की कला, वाणिज्य एवं विज्ञान संकाय की कुल 57 छात्राओं ने बैडमिंटन प्रतियोगिता में भाग लिया। खेल प्रभारी अजयपाल सिंह ने बताया कि बैडमिंटन की डबल प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर विज्ञान संकाय की दिव्यता कोठारी व दक्षता कोठारी रही। कला संकाय में प्रथम कविता रही। वाणिज्य संकाय में प्रथम ईशा रही। विज्ञान संकाय में प्रथम स्थान पर विद्या चौधरी रही।

नागौर जिले की चिंताजनक भूगर्भ जल की स्थिति का मुकाबला वर्षाजल के संचय से संभव– मीणा

जल शक्ति अभियान का जिला स्तरीय शुभारम्भ समारोह आयोजित

उपखंड प्रशासन एवं जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) की राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) इकाई के संयुक्त तत्त्वावधान में 8 अगस्त को यहां आचार्य महाप्रज्ञ-महाश्रमण ऑडिटोरियम में भारत सरकार के जल शक्ति अभियान के शुभारम्भ का जिला स्तरीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भारत सरकार के मानव संसाधन मंत्रालय के उप शासन सचिव महेश कुमार मीणा ने बताया कि भारत सरकार के जल शक्ति मंत्रालय के अधीन संचालित किये जाने वाले इस जल शक्ति अभियान का शुभारम्भ पूरे राजस्थान के 29 जिलों में एक साथ किया जा रहा है। कार्यक्रम के अध्यक्ष दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि पानी भूगर्भ में निरन्तर नीचे चला जा रहा है, इसके लिये भूगर्भ में जल-पुनर्भरण के लिये सबको प्रयास करना होगा। भारत सरकार ने भविष्य के जल-संकट की आहट को पहचाना है और जल शक्ति मंत्रालय का स्वतंत्र गठन किया और इसे अभियान का रूप दिया है।

अगले साल तक 21 शहरों में जल संकट

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि उपखंड अधिकारी मुकेश चौधरी ने बताया कि देश के 256 जिलों में एक साथ जल शक्ति अभियान का शुभारम्भ भारत सरकार द्वारा किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में आम आदमी की भागीदारी आवश्यक है। उन्होंने जल शक्ति अभियान के 5 बिन्दुओं का उल्लेख किया तथा बताया कि वर्षा-जल के संचय, पेयजल की सफाई, परम्परागत जलस्रोतों का संरक्षण, पानी को रिसाईकिल करके दुबारा उपयोग के योग्य बनाने और गहन वृक्षारोपण, गहन वनीकरण के लिये सबके सहयोग की आवश्यकता है। उन्होंने बताया कि बरसात के जल का मात्र 8 प्रतिशत ही उपयोग में आ पाता है, वर्षाजल का सही तरीके से संरक्षण करके सालभर उसका उपयोग करने की कोशिश सभी मिलकर इस उपयोग को 15 प्रतिशत तक बढा सकते हैं और भारत सरकार का यही लक्ष्य है। उन्होंने बताया कि सन 2020 तक 21 बड़े शहरों में पानी का स्तर नीचे चला जायेगा और जल संकट का सामना करना पड़ेगा। देश में 16 करोड़ लोगों को साफ पानी नहीं मिल रहा है और 26 करोड़ लोगों को पानी के लिये दूरियां तय करनी पड़ रही हैं। वृक्ष लगाने, वर्षाजल संग्रहित करने एवं पानी के कम से कम इस्तेमाल और दुरुपयोग को रोकने की सोच से पानी बचाया जा सकता है।

परम्परागत जलस्रोतों का संरक्षण आवश्यक

जल शक्ति अभियान के नोडल अधिकारी एवं पंचायत समिति के विकास अधिकारी हरफूल सिंह चौधरी ने तालाबों, एनिकट आदि परम्परागत जलस्रोतों को बचाने और उनके संरक्षण के लिये सबको प्रेरित किया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में कुलसचिव रमेश कुमार मेहता ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत करते हुये इस बात पर हर्ष जताया कि भारत सरकार ने इस अभियान के लिये नागौर जिले में लाडनूं को चुना और लाडनूं में जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय का चयन किया गया। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में भूजल विभाग के अधिशाषी अभियंता प्रवीण, नरेगा के सहायक अभियंता दिनेश कुमार मंचस्थ थे। कार्यक्रम के अंत में शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम में विभिन्न राजकीय अधिकारी, विश्वविद्यालय के अधिकारी एवं विद्यार्थी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन शोध निदेशक डा. जुगलकिशोर दाधीच ने किया।

वृक्षारोपण किया व रैली निकाली

जल शक्ति अभियान के शुभारम्भ समारोह के पश्चात जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय परिसर में केन्द्रीय मानव संसाधन मंत्रालय के उप शासन सचिव महेश कुमार मीणा, उपखंड अधिकारी मुकेश चौधरी, विकास अधिकारी हरफूल सिंह चौधरी, कुलसचिव रमेश कुमार मेहता, दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, भूजल विभाग के अधिशाषी अभियंता प्रवीण, नरेगा के सहायक अभियंता दिनेश कुमार, प्रो. बीएल जैन आदि ने मिलकर वृक्षारोपण किया। वृक्षारोपण के पश्चात एनसीसी एवं अन्य छात्राओं की रैली निकाली गई। रैली को उप शासन सचिव महेश कुमार मीणा, उपखंड अधिकारी मुकेश चौधरी, विकास अधिकारी हरफूल सिंह चौधरी, कुलसचिव रमेश कुमार मेहता आदि ने हरी झंडी दिखा कर रवाना किया।

रैली शहर के विभिन्न प्रमुख मार्गों से होते हुये निकली तथा हाथों में नारे लिखी तख्तियां और जल संरक्षण सम्बंधी नारे लगाते हुये आम जनता को पानी बचाने व पेड़ लगाने का संदेश दिया।

स्वच्छ भारत समर इंटर्नशिप के तहत जल संरक्षण जागरूकता अभियान

संस्थान की राष्ट्रीय सेवा योजना (एन.एस.एस.) की दोनों ईकाइयों के तहत स्वयंसेवी छात्राओं द्वारा 27 जुलाई को 'स्वच्छ भारत समर इंटर्नशिप' के तहत वृक्षारोपण एवं जल संरक्षण जागरूकता अभियान चलाया गया। अभियान के तहत आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने छात्राओं को विश्वविद्यालय परिसर में स्थित जल उपकरणों का अवलोकन करवाया तथा मौके पर प्रेक्टिकल रूप से जल संरक्षण के तरीकों से अवगत करवाया। उन्होंने इस अवसर पर जीवन में जल की महती उपयोगिता बताते हुए कहा कि जल जीवन का पर्याय होता है। जल के बिना जीवन संभव नहीं है। उन्होंने जल के समुचित संरक्षण के लिये आवश्यक दिशा-निर्देश देकर जल बचाने व सुरक्षित रखने की आवश्यकता बताई। इस अभियान के तहत बाद में एनएसएस प्रभारी डॉ. प्रगति भटनागर द्वारा एन.एस.एस. स्वयंसेविकाओं को वर्षा कराने में वृक्षों की महत्ता बताई तथा पर्यावरण संरक्षण आदि के लिये तथा वृक्षों की अन्य उपयोगिताओं के बारे में बताया। इस अवसर पर स्वयंसेवी छात्राओं ने परिसर में वृक्षारोपण का कार्य किया। कार्यक्रम में छात्राओं के अलावा महाविद्यालय के सभी व्याख्याता भी मौजूद रहे।

जल शक्ति अभियान के दूसरे चरण में अभिप्रेरणा कार्यक्रम का आयोजन

भारत सरकार द्वारा जल संरक्षण हेतु संचालित ''जल शक्ति अभियान'' के दूसरे चरण की क्रियान्वयन के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्राप्त निर्देशानुसार संस्थान की राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों ईकाइयों के संयुक्त तत्त्वावधान में 21 सितम्बर को जल-संरक्षण सम्बंधी अभिप्रेरणा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने बताया कि भारतीय संस्कृति में जल को जीवन का प्रधान तत्त्व माना गया है और यही विज्ञान भी सिद्ध कर रहा है। जल के बिना जीवन संभव नहीं है। उन्होंने जल की महत्ता को सर्वोपरि बताते हुये रोजमर्रा के जीवन में जल के अपव्यय को रोकने के लिये छात्राओं को प्रेरित किया।

प्रो. त्रिपाठी ने बताया कि भारत सरकार जल संरक्षण और जल स्रोतों के संरक्षण के सम्बंध में पूरी तरह से सजग है और इसके लिये जल शक्ति मंत्रालय की अलग स्थापना की है। पानी बचाने के लिये सरकार देश भर में जनता को जागरूक करने के लिये प्रयासरत है और कोशिश है कि सन् 2022 तक देश के हर घर को स्वच्छ पानी उपलब्ध हो। कार्यक्रम की प्रस्तावना एनएसएस की प्रथम इकाई कार्यक्रम अधिकारी डॉ. प्रगति भटनागर ने प्रस्तुत की और अन्त में द्वितीय इकाई के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. बलबीर सिंह ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

कार्यक्रम में सहायक आचार्य अभिषेक चारण, सोमवीर सांगवान, बलवीर सिंह चारण, श्वेता खटेड़, शेर सिंह राठौड़, अभिषेक शर्मा, मांगीलाल आदि उपस्थित रहे।

एनएसएस दिवस कार्यक्रम में गायन प्रतियोगिता में सोनम रही प्रथम

संस्थान की राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों ईकाईयों के संयुक्त तत्त्वावधान में 25 सितम्बर को मनाये गये एनएसएस दिवस दो चरणों में मनाया गया। प्रथम चरण में आयोजित एनएसएस स्थापना दिवस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने युवाओं में व्यक्तित्व व आंतरिक योग्यता के विकास के साथ-साथ निःस्वार्थ रूप से समाज सेवा की भावना रखने के लिये प्रेरित करते हुये कहा कि सेवा भावना से व्यक्तित्व में स्वतः निखार आता है। कार्यक्रम में दिव्यता कोठारी ने एनएसएस का परिचय एवं उद्देश्य बताये तथा गत 7 दिवसीय एनएसएस कैंप की गतिविधियों की जानकारी प्रस्तुत की। सोनम, प्रतिष्ठा कोठारी, मोनिका आदि एनएसएस स्वयंसेविकाओं ने एनएसएस दिवस पर अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम की शुरूआत रचना व कुसुम द्वारा एनएसएस गीत से की गई। एनएसएस प्रथम इकाई की कार्यक्रम अधिकारी डॉ. प्रगति भटनागर ने स्वागत वक्तव्य दिया एवं कार्यक्रम की रूपरेखा समझाई। कार्यक्रम के प्रथम चरण के अंत में द्वितीय इकाई के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. बलबीर सिंह चारण ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम के द्वितीय चरण में गायन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें छात्राओं ने काफी बढ़-चढ़ कर भाग लिया। एकल गायन प्रतियोगिता में सोनम कंवर ने प्रथम, कुसुम सेन ने द्वितीय एवं स्नेहा पारीक ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम का संचालन दक्षता कोठारी ने किया।

भारतीय संस्कारों में घृणा-द्वेष के लिये कोई जगह नहीं- प्रो. त्रिपाठी

राष्ट्रीय साम्प्रदायिक सद्भाव सप्ताह का आयोजन

केन्द्र सरकार के गृह मंत्रालय के अधीन स्वायत-निकाय 'राष्ट्रीय साम्प्रदायिक सद्भाव प्रतिष्ठान' के निर्देशानुसार संस्थान में राष्ट्रीय साम्प्रदायिक सद्भाव अभियान सप्ताह का आरम्भ एन.एस.एस. की प्रथम व द्वितीय इकाई के संयुक्त तत्वावधान में 19 नवम्बर को किया गया। कार्यक्रम के शुभारम्भ समारोह की अध्यक्षता करते हुए प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि- इंसान-इंसान के बीच किसी प्रकार का कोई भेद नहीं होना चाहिए। भारतीय संस्कारों में तो घृणा, द्वेष एवं नफरत के लिए कोई जगह ही नहीं है। सभी भारतवासी एक हैं और यह भावना हमारे विद्यार्थियों द्वारा इस सप्ताह में अधिक से अधिक फैलाई जाये। कार्यक्रम के शुरूआत में इकाई प्रथम प्रभारी डॉ. प्रगति भटनागर बताया राष्ट्रीय साम्प्रदायिक सद्भाव सप्ताह के तहत सांस्कृतिक, निबन्ध लेखन एवं पोस्टर प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाने एवं एन.एस.एस. स्वयंसेवक एवं स्वयंसेविकाओं द्वारा क्षेत्र के सभी नागरिकों के बीच पहुंच कर धार्मिक सद्भाव की भावना को बढ़ावा दिया जाने और एक ऐसे राष्ट्र की कल्पना को साकार रूप देने का प्रयास किया जायेगा, जिसमें समानता का भाव हो, घृणा एवं द्वेष के लिए कोई जगह नहीं हो एवं राष्ट्र भावना को सर्वोपरि रखने हेतु संदेश दिया जायेगा। कार्यक्रम के अन्त में ईकाई द्वितीय प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह ने आभार ज्ञापित किया। इस दौरान सहायक आचार्य कमल कुमार मोदी, अभिषेक चारण, सोमवीर सांगवान, श्वेता खटेड़, शेर सिंह राठौड़, मांगीलाल सुथार, घासीलाल शर्मा आदि उपस्थित रहे।

छात्राओं ने व्यक्त किये विचार

राष्ट्रीय साम्प्रदायिक सद्भाव अभियान सप्ताह के चौथे दिन को आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कौमी एकता पर आधारित इस कार्यक्रम में एन.एस.एस. की स्वयंसेविकाओं रूबिना बानो, लिछमा डारा, पूजा प्रजापत एवं नफीसा बानो ने साम्प्रदायिक सदभावना पर विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम के दौरान अध्यक्ष प्रो. त्रिपाठी ने 'मजहब नहीं सीखाता आपस में बैर रखना' पंक्तियों के माध्यम से बताया कि गीता, कुरान, बाईबिल एवं गुरूग्रन्थ साहिब जैसे पवित्र ग्रन्थों में सामाजिक सौहार्द्र की अनूठी मिसालें देखने को मिलती है। विविधता में एकता के लिए विख्यात हमारे देश के ये पवित्र धार्मिक ग्रंथ हर व्यक्ति को मानवता की ओर अग्रसर करते हैं, जिसके आग्रह की गूंज आज समूचे विश्व में सुनाई दे रही है। छात्रा रूबिना बानो ने सामाजिक सौहार्द पर कविता पढ़ी, लिछमा डारा ने वर्तमान विश्व में सौहार्द भावना की महती आवश्यकता पर प्रकाश डाला, पूजा प्रजापत द्वारा मुक्तकों के माध्यम से सामाजिक सौहार्द की भावना का समर्थन किया। छात्रा नफीसा बानो ने अपने विचारों में कहा, कौम को कबीलों में मत बांटिये, ये सफर चंद मीलों में मत बांटिये। इक नदी की तरह है हमारा वतन, इसको तालों- झीलों में मत बांटिये।

कार्यक्रम का संयोजन एन.एस.एस. इकाई प्रथम की प्रभारी डॉ. प्रगति भटनागर ने किया। इकाई द्वितीय प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह ने अंत में आभार ज्ञापित किया।

फिट इंडिया रन में दौड़ी एनएसएस छात्रायें

संस्थान में संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाईयों के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 3 अक्टूबर को फिट इंडिया रन का आयोजन किया गया। भारत सरकार के युवा एवं खेल मंत्रालय के निर्देशानुसार महात्मा गांधी की 150वीं जन्मशताब्दी के अवसर पर इसका आयोजन विश्वविद्यालय परिसर में किया गया। एनएसएस की स्वयंसेविकाओं ने इस फिट इंडिया दौड़ में हिस्सा लिया। इस दौड़ को आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने हरी झंडी दिखा कर रवाना किया। इस अवसर पर एनएसएस की दोनों इकाईयों के प्रभारी डा. प्रगति भटनागर व डा. बलवीर सिंह चारण उपस्थित थे।

परस्पर सम्प्रदायों का सम्मान करें

राष्ट्रीय साम्प्रदायिक सद्भाव सप्ताह का समापन 25 नवम्बर को आयोजित किया गया। समारोह की अध्यक्षता करते हुये योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डा. प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने कहा कि साम्प्रदायिक सद्भाव राष्ट्र-विकास की कुंजी होती है। देश में धार्मिक, जातीय, प्रांतीय एकता होनी आवश्यक है। एक संगठित देश ही विश्व में सम्मान का पात्र बनता है। हमें एक दूसरे के धर्मों का सम्मान करना चाहिये। उन्होंने एन.एस.एस. को देश में शांति और सौहार्द कायम करने में सबसे अधिक भूमिका निभाने वाला संगठन बताया तथा सप्ताह भर किये गये कार्यों की प्रशंसा की। इस अवसर पर सप्ताह के दौरान आयोजित की गई पोस्टर प्रतियोगिता और निबंध प्रतियोगिता के परिणामों की भी घोषणा की गई। इनमें पोस्टर प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर निर्मला चौहान रही। द्वितीय स्थान पर मुस्कान बल्खी व कल्पिता सोलंकी रही और तृतीय स्थान पर शिवानी आचार्य रही। निबंध प्रतियोगिता में करिश्मा बानो प्रथम, खुशबू बानो द्वितीय और तरन्नुम बानो व महिमा प्रजापत तृतीय स्थान पर रही। अंत में एन.एस.एस. प्रभारी डा. बलबीर सिंह चारण ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन प्रथम इकाई प्रभारी डा. प्रगति भटनागर ने किया।

एनएसएस छात्राओं ने निकाली स्वच्छता रैली, दिया पॉलिथीन मुक्ति का संदेश

संस्थान में राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) के तत्त्वावधान में आयोजित एक दिवसीय शिविर में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150वीं जयंती के अवसर पर भारत सरकार द्वारा देश को पॉलिथीन मुक्त करने के अभियान के तहत 1 अक्टूबर को छात्राओं ने रैली निकाल कर शहर के विभिन्न क्षेत्रों में स्वच्छता का संदेश दिया तथा सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग बंद करने के लिये लोगों को जागरूक किया। रैली को यहां विश्वविद्यालय परिसर से कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने हरी झंडी दिखा कर रवाना किया। एनएसएस प्रभारी डा. प्रगति भटनागर व डा. बलवीर सिंह चारण ने रैली का नेतृत्व किया। रैली शहर के विभिन्न प्रमुख मार्गों से निकाली गई। रैली के पश्चात यहां इस एक दिवसीय शिविर में कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने दैनिक जीवन में उपयोग किये जाने वाले पॉलिथीन उत्पादों से होने वाली हानियों के बारे में जानकारी दी तथा पॉलिथीन से होने वाले पर्यावरण के खतरों से आगाह किया तथा सिंगल यूज प्लास्टिक से छुटकारे के अभियान की जानकारी देते हुये छात्राओं से उसमें पूर्ण सहयोग प्रदान करने व अपने परिवार, मौहल्ले में भी लोगों को प्रेरित करने का आह्वान किया। प्रारम्भ में एनएसएस प्रभारी डा. प्रगति भटनागर ने शिविर की रूपरेखा प्रस्तुत की और महात्मा गांधी के 150वें जन्मशताब्दी वर्ष के बारे में बताया। कार्यक्रम में आईशा सिंह, पूजा प्रजापत, करिश्मा खान, स्नेहा पारीक आदि ने भी अपने विचार एवं कवितायें प्रस्तुत की। पूछे गये सवालों के सही जवाब देने वाली छात्राओं को पुरस्कृत भी किया गया। अंत में डा. बलवीर सिंह चारण ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन दक्षता कोठारी ने किया।

बालिका दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में 11 अक्टूबर को बालिका दिवस कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये प्राचार्य प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने बताया कि बालिकाएं भारतीय संस्कृति एवं सामाजिक संस्कारों की अभिवृद्धि में महत्त्वपूर्ण योगदान देती हैं। जहां एक ओर पी.वी. सिन्धु, सायना नेहवाल एवं एम.सी. मेरीकोम सरीखी बालिकाओं ने खेल के क्षेत्र में अपना और देश का नाम रोशन किया, वहीं दूसरी ओर देश की प्रथम रक्षामंत्री एवं प्रथम वित्तमंत्री का सौभाग्य भी क्रमशः सुषमा स्वराज व निर्मला सीतारमण जैसी भारतीय बेटियों को मिला। भारत की बेटियां कल्पना चावला व सुनिता विलियम्स अन्तरिक्ष फतेह भी करती है, वहीं गीतों के माध्यम से भारतीय संस्कृति को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए लता मंगेशकर एवं सीमा मिश्रा जैसा योगदान भी देती हैं। कार्यक्रम में अभिषेक चारण, डॉ. बलबीर सिंह एवं छात्राओं निष्ठा मोदी, महिमा प्रजापत, कल्पना सोनी, पूजा चौधरी, आरती सिंघारिया, पूजा प्रजापत एवं सुरभि नाहटा ने भी बालिका दिवस पर अपने विचार प्रकट किये।

जोधपुर का एनसीसी शिविर : नृत्य व अनुशासन में दिखाई श्रेष्ठता

मनीषा बुगालिया व मोनिका ने स्वर्ण पदक जीते

संस्थान में संचालित नेशनल केडेट्स कोर की (एन. सी.सी.) 23 केडेट्स (छात्राओं) ने एनसीसी प्रभारी आयुषी शर्मा के नेतृत्व में एनसीसी के 3 राज गर्ल्स बटालियन के जोधपुर में मौलाना आजाद विश्वविद्यालय में दिनांक 30 सितम्बर को आयोजित शिविर में भाग लिया, इनमें से सीएटीसी शिविर में 22 छात्राओं ने एवं आरडीसी शिविर में एक छात्रा अनुराधा ने भाग लिया। शिविर में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में से यहां की केडेट्स ने भाग लेकर विभिन्न स्वर्ण पदक प्राप्त किये। इनमें से नृत्य प्रतियोगिता में मनीषा बुगालिया ने प्रथम स्थान प्राप्त करने के साथ ही गोल्ड मैडल हासिल किया। अनुशासन में जैविभा विश्वविद्यालय की ही मोनिका ने गोल्ड मैडल प्राप्त किया। इन दोनों गोल्ड मेडल प्राप्त करने वाली छात्राओं के विश्वविद्यालय पहुंचने पर यहां एक कार्यक्रम आयोजित किया जाकर उन्हें मैडल पहनाकर एवं प्रमाण पत्र प्रदान करके सम्मानित किया गया एवं अन्य शिविर में भाग लेने वाली छात्राओं को भी प्रमाण पत्र प्रदान किय गये। कार्यक्रम में एनसीसी प्रभारी आयुषी शर्मा ने एनसीसी के उद्देश्य एवं महत्त्व के बारे में बताया और शिविर के अनुभव साझा किये। कार्यक्रम की अध्यक्षता खेल प्रभारी एवं मुख्य एनसीसी प्रभारी अजयपाल सिंह भाटी ने की तथा मुख्य अतिथि आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी थे और विशिष्ट अतिथि डा. प्रगति भटनागर थी। इस अवसर पर मनीषा, दिव्या, गीता, लक्ष्मी, मोनिका, प्रियंका, शिवानी, वर्षा, निर्मला, पूजा, भारती, कृष्णा, सुमित्रा, मुकनी, ज्योति, मोनालिका, पुष्पा, आरमी, कौशल्या, अनुराधा आदि उपस्थित थी।

कर्तव्यनिष्ठा के भाव जीवन को नई दिशा देने में सक्षम- मेहता

एनसीसी दिवस पर परेड, सलामी, प्रमाण पत्र वितरण के साथ समारोह

संस्थान में समस्त एनसीसी कैडेट्स ने समारोह पूर्वक एनसीसी दिवस नवम्बर में मनाया। इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये कुलसचिव रमेश कुमार मेहता ने ध्वजारोहण किया। सभी कैडेट्स ने मार्चपास्ट किया तथा सलामी दी। इस अवसर पर एनसीसी गीत का संगान किया गया।

कुलसचिव मेहता ने कार्यक्रम में कहा कि एकता व अनुशासन एनसीसी केडेट के लिये प्राथमिक आवश्यकता होती है। एनसीसी में भाग लेने से छात्रा-जीवन से ही राष्ट्र के प्रति समर्पण व बलिदान की भावना प्रफुल्लित होती है। कर्तव्यनिष्ठा के भाव व्यक्ति के लिये जीवन भर उपयोगी होते हैं तथा वे जीवन को नई दिशा प्रदान करने में सक्षम होते हैं। उन्होंने छात्रों को एकता और अनुशासन बनाए रखने एवं विश्वविद्यालय के सभी कार्यक्रम में सहभागी बनने का आह्वान भी किया। उन्होंने बताया कि यह विश्वविद्यालय अपने सभी विद्यार्थियों को अनुशासन, नैतिक व मानवीय मूल्यों की रक्षा, देश के प्रति समर्पण भावना एवं सद्संस्कारों के निर्माण आदि के लिये विशेष ध्यान देता है। इस अवसर पर एनसीसी प्रभारी एएनओ आयुषी शर्मा ने नेशनल केडेट्स कोर के बारे में विस्तार से बताया।

वितरित किये प्रमाण पत्र

कार्यक्रम में एनसीसी की छात्राओं ने स्वच्छ भारत के पोस्टरों का प्रदर्शन किया। इसके अलावा सीएसीटी शिविर में भाग लेने व श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली एनसीसी केडेट्स को प्रमाण पत्रों का वितरण भी विश्वविद्यालय के कुलसचिव रमेश कुमार मेहता द्वारा किया गया। आरटीडीसी शिविर का प्रमाण पत्र अनुराधा को प्रदान किया गया।

इन शिविरों में अनुशासन एवं नृत्य प्रतियोगिताओं में गोल्ड मैडल हासिल करने वाली छात्राओं मोनिका व मनीषा बुगालिया को रजिस्ट्रार ने स्वर्ण पदक पहनाये। इस अवसर पर राजू हीरावत, दीपक शर्मा, बलवन्त सैन, महेन्द्र सिंह, छात्रायें आकांक्षा, अनुराधा, मोनालिका, आरती, निरमा, मनीषा, गीता, अमृता, सुमित्रा, वर्षा, पूजा, भावना, अनिता, मंजू, ललिता, कविता आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन एनसीसी के मुख्य प्रभारी एवं खेल कोच अजयपालसिंह ने किया।

शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य के साथ कार्य प्रबंधन को सुगठित करती है स्वच्छता

स्वच्छता पखवाड़ा में विविध कार्यक्रमों से जगाई स्वच्छता की अलख

संस्थान में थ्री राज गर्ल्स बटालियन नेशनल केडेट्स कोर ने एनसीसी ग्रुप मुख्यालय के निर्देशानुसार एक पखवाड़े का स्वच्छता कार्यक्रम मनाया। स्वच्छता पखवाड़े का शुभारम्भ आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में किया गया। उन्होंने इस अवसर पर कहा कि हमें स्वच्छता को पूरा महत्त्व देना चाहिये। स्वच्छता से शारीरिक स्वास्थ्य के साथ मानसिक स्वस्थता आती है। कार्यक्रम संयोजक एनसीसी की एएनओ आयुषी शर्मा ने स्वच्छता के बारे में भारत सरकार के विविध कार्यक्रमों और एनसीसी केडेट्स द्वारा उसमें किये जा सकने वाले सहयोग के बारे में बताया। कार्यक्रम में मांगीलाल सुथार, अभिषेक शर्मा, हीरालाल देवासी, आरती सिंघानिया, शिवानी, मुकनी, मनीषा, मोनालिका, संतु गोदारा, अनुराधा, दुर्गा कुमारी, निरमा प्रजापत, ललिता शर्मा, सोनिका, मोनिका, मनीषा गोदारा, ललिता आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन मुख्य एनसीसी प्रभारी अजयपाल सिंह ने किया।

भाषण प्रतियोगिता में आरती प्रथम रही

स्वच्छता पखवाड़ा के तीसरे दिन एनसीसी केडेट्स के बीच भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के

प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में आयोजित इस भाषण प्रतियोगिता का विषय ''अपने शहर को मैं कैसे स्वच्छ बना सकती हूं'' पर एनसीसी की छात्राओं ने अपने विचार प्रस्तुत किये। भाषण प्रतियोगिता में कुल 10 केडेट्स ने हिस्सा लिया, जिनमें प्रथम स्थान पर आरती सिंघारिया रही। द्वितीय स्थान सरिता चौधरी ने प्राप्त किया और तृतीय स्थान पर मनीषा रही। अध्यक्षता करते हुये प्रो. त्रिपाठी ने कहा कि स्वच्छता जहां व्यक्तिगत विषय है, वहीं यह सार्वजनिक स्वच्छता के लिये भी ध्यान देने योग्य है। प्रतियोगिता की सम्भागी केडेट्स ने भी शहर की सफाई के सम्बंध में आम नागरिक की भूमिका और अपने घर व गली-मौहल्ले की स्वच्छता के प्रति नागरिक जागरूकता को आवश्यक बताया तथा अनेक सुझाव भी प्रस्तुत किये।

एनसीसी की छात्राओं ने की रेलवे स्टेशन की सफाई

स्वच्छता पखवाड़ा के तहत एनसीसी केडेट्स छात्राओं ने लाडनूं के रेलवे स्टेशन के दोनों प्लेटफार्मों की सफाई की। स्टेशन अधीक्षक बनवारी

लाल शर्मा की अनुमति से इन छात्राओं ने मुख्य एनसीसी प्रभारी एवं खेल कोच अजयपाल सिंह, डा. प्रगति भटनागर, एनसीसी की एएनओ आयुषी शर्मा व मानसिंह राठौड़ के निर्देशन में स्वच्छता अभियान चलाया। इस अवसर पर खेल प्रभारी अजयपाल सिंह भाटी ने कहा कि एनसीसी की छात्रायें पूरे समाज के समक्ष स्वच्छता का उदाहरण प्रस्तुत करके एक प्रेरक संदेश प्रसारित कर रही हैं। अंत में एनसीसी प्रभारी आयुषी शर्मा ने आभार ज्ञापित किया।

हस्त-प्रक्षालन कार्यक्रम का आयोजन

स्वच्छता पखवाड़ा के तहत यहां एनसीसी छात्राओं ने हाथ धुलाई दिवस मनाया और इस अवसर पर सबके हाथों को स्वच्छ करवाने के साथ ही उसके महत्व पर प्रकाश डाला। शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने इस अवसर पर कहा कि अधिकांश संक्रामक रोग हाथों के कारण होते हैं। दिनभर हम कितनी ही वस्तुओं को हाथों से छूते हैं। उनमें अनेक संक्रमित हो सकती है और गंदी हो सकती है; उन्हें छूने से कीटाणु हमारे हाथों पर लग जाते

हैं। ऐसे कीटाणु हमें दिखाई नहीं देते, लेकिन हम जब भी कुछ खाते हैं या परस्पर स्पर्श करते हैं तो उन कीटाणुओं का हमारे शरीर में और एक-दूसरे में संक्रमण हो जाता है। डा. प्रगति भटनागर व डा. जसबीर सिंह ने स्वच्छता को स्वास्थ्य के लिये जरूरी बताया। खेल प्रशिक्षक एवं मुख्य एनसीसी प्रभारी अजयपाल सिंह भाटी ने बताया कि स्वच्छता की शुरूआत हाथों की सफाई से होती है। अगर हाथ साफ नहीं होते हैं तो वे कीटाणुओं, रोगाणुओं के प्रसारण का कारण बनते हैं और हम स्वयं भी अनजाने में ही बीमार हो जाते हैं। एनसीसी प्रभारी आयुषी शर्मा ने इस अवसर पर व्यवस्था करके सभी एनसीसी केडेट छात्राओं एवं स्टाफ के हाथों को धुलवाया। कार्यक्रम में प्रो. बीएल जैन, डा. अमिता जैन, डा. मनीष भटनागर, डा. प्रगति भटनागर, डा. गिरीराज भोजक, कमल कुमार मोदी, डा. बलबीर सिंह चारण, अजयपाल सिंह भाटी, अभिषेक चारण, अभिषेक शर्मा, डा. विष्णु कुमार, आयुषी शर्मा, हीरालाल, किशन कुमार, एवं एनसीसी केडेट्स आदि उपस्थित रहे।

पाबोलाव सरोवर परिसर की सफाई

स्वच्छता पखवाड़ा में केडेट्स छात्राओं ने यहां पाबोलाव तालाब परिसर की सफाई की। तालाब के आस-पास पड़े कचरे को हटाने, तालाब में पानी की आवक वाले स्थान की सफाई एवं वहां लगे पेड़-पौधों के इर्द-गिर्द

और उन पर लगे पक्षियों के चुग्गे के स्टेंड आदि की सफाई की। इस अवसर पर मुख्य प्रभारी व खेल प्रशिक्षक अजयपाल सिहं भाटी, प्रभारी आयुषी शर्मा, मानसिंह राठौड़ व आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की सहायक आचार्य डा. प्रगति भटनागर एवं एनसीसी की छात्राओं निरमा, पूजा, आकांक्षा, अनुराधा, सोनिका, मोनिका, अनुराधा, मनीषा, सन्तु गोदारा ललिता शर्मा, दुर्गा, मुकनी, सरिता, प्रमलता, वर्षा, प्रियंका, दिव्या, अतिश्री, अमृता, भावना आदि उपस्थित रही।

रैली निकाल कर दिया ओडीएफ का संदेश

एनसीसी कैडेट्स ने ''खुले में शौच से मुक्ति'' के लिये एक रैली निकाली। आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने इस रैली को हरी झंडी दिखा कर रवाना किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि पूरे देश में एक आंदोलन का रूप ले रहा ओडीएफ अब गांव-गांव में मूर्त रूप लेने लगा है। उन्होंने एनसीसी द्वारा किये जा रहे प्रयासों की सराहना की। मुख्य एनसीसी प्रभारी अजयपाल सिंह भाटी ने खुले में शौच

से होने वाली बीमारियों व अन्य नुकसानों के बारे में बताया। इस अवसर पर डा. बलबीर सिंह चारण, शेरसिंह राठौड़, अभिषेक शर्मा आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किये। प्रारम्भ में एनसीसी प्रभारी आयुषी शर्मा ने स्वच्छता पखवाड़े और ओडीएफ के बारे में जानकारी प्रस्तुत की।

सेमिनार का आयोजन कर दिया स्वच्छता का संदेश

स्वच्छता पखवाड़ा में केडेट्स छात्राओं ने स्थानीय राजकीय भूतोड़िया बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय में एक सेमिनार का आयोजन किया। सेमिनार को सम्बोधित करते हुये मुख्य एनसीसी प्रभारी व खेल प्रशिक्षक अजयपाल सिंह भाटी ने स्वच्छता के महत्व को समझाते हुये बताया कि प्रत्येक नागरिक की यह जिम्मेदारी है कि वे अपने व्यक्तिगत स्वास्थ्य व सामाजिक स्वास्थ्य को ध्यान में रखकर सफाई की तरफ ध्यान दें, क्योंकि स्वच्छता के अभाव में ही विभिन्न घातक बीमारियों का जन्म होता है और उनका प्रसार होता है। उन्होंने एनसीसी की छात्राओं द्वारा लगातार किये जा रहे स्वच्छता कार्यक्रमों के बारे में जानकारी भी दी। एएनओ आयुषी शर्मा ने भी स्वच्छता के महत्त्व पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में ललिता शर्मा, निरमा, मोनिका, सोनिका, आरती, कविता, सुमित्रा, शिवानी आदि ने भी स्वच्छता पर अपने विचार व्यक्त किये। सेमिनार में कक्षा 1 से 8 तक की छात्राओं ने भाग लिया। इस अवसर पर व्याख्याता कृष्णलाल मीणा, सरोज वर्मा, मंजू चौपड़ा, रुक्मिणी रांकावत, निर्मला सिंधी, प्रेमलता शर्मा, रश्मि ओझा, नवीनलता आदि उपस्थित रहे।

कैडेट्स ने की विभिन्न स्थानों पर सफाई

एनसीसी की कैडेट्स ने जैन नसियाँ में मंदिर परिसर की सफाई करने के अलावा वहां से गुजर रहे रास्ते जैन विश्व भारती मार्ग को भी साफ किया। खेल प्रभारी अजयपाल सिंह एवं एनसीसी प्रभारी आयुषी शर्मा के नेतृत्व में छात्राओं ने स्वयं झाड़ू, फावड़ा आदि लेकर सफाई करने के साथ ही आस-पास की बस्तियों में लोगों को स्वच्छता का महत्त्व समझाया और अपने घर, गली व मौहल्ले की सदैव सफाई रखने के लिये प्रेरित किया।

स्वच्छता पखवाड़ा के समापन पर समारोह आयोजित

स्वच्छता पखवाड़े के समापन समारोह में अध्यक्षता करते हुये आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि सभी एनसीसी केडेट्स ने इन 15 दिनों में स्वच्छता की दिशा में सराहनीय कार्य किया है और इसका संदेश शहर के नागरिकों में भी पहुंचा है। इस तरह के कार्यक्रमों से एक भावना विकसित होती है और इसके हर गांव-शहर में फैलने से देश को एक नई दिशा और नया स्वरूप मिलता है। उन्होंने पखवाड़े के कार्यों को निरन्तर जारी रखने की आवश्यकता बताई। प्रारम्भ में एएनओ आयुषी शर्मा ने कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की तथा जो कार्य छात्राओं द्वारा इस पखवाड़े में किये गये, उनकी जानकारी दी। कार्यक्रम का आरम्भ एनसीसी गान से किया गया और उसके बाद एनसीसी परेड का आयोजन किया गया। अंत में स्पोर्ट्स कोच अजयपाल सिंह भाटी ने आभार ज्ञापित किया। इस अवसर पर एनसीसी कैडेट्स अनुराधा, दुर्गा, गीता, सन्तु,

मनीषा, ललिता शर्मा, आरती सिधारिया, शिवानी, मनीषा शर्मा, कविता, ललिता, वर्षा, दिव्या, कौशल्या, मनीषा बुगालिया, निरमा, सोनिका, मोनिका आदि उपस्थित थे।

कारगिल विजय दिवस पर शहीदों को श्रद्धांजलि

संस्थान के एन.सी.सी. कैडेट्स एवं आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की छात्राओं द्वारा 26 जुलाई को कारगिल विजय दिवस मनाया गया। कार्यक्रम की शुरूआत एन.सी.सी. गीत द्वारा हुई। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए महाविद्यालय प्राचार्य प्रो. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने वीर शहीदों को याद करते हुए उनके शौर्य और जज्बे को सलाम किया तथा कहा कि इंसान का सबसे बड़ा मजहब राष्ट्र होता है, अतः जब भी राष्ट्र के अस्तित्व एवं स्वाभिमान की बात आये तो सभी धर्म एवं मजहबों से ऊपर उठकर राष्ट्रीय विकास में योगदान देना चाहिए।

छात्रा पवन कंवर ने देशभक्ति गीत की एकल प्रस्तुति दी। एन.सी.सी. कैडेट्स दुर्गा एवं समूह द्वारा पुलवामा घटना पर गीत की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम की अगली कड़ी में एन.सी.सी. कैडेट्स द्वारा संस्थान परिसर में वृक्षारोपण किया गया। अन्त में सभी कैडेट्स द्वारा अमर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर महाविद्यालय के सहायक आचार्य डॉ. प्रगति भटनागर, कमल कुमार मोदी, अभिषेक चारण, सोमवीर सांगवान, शेर सिंह राठौड़, अभिषेक शर्मा एवं मांगी लाल उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. बलबीर सिंह चारण ने किया।